सपनों की बारात

।कहानी संग्रह।

लेखक

नन्दलाल भारती

सर्वाधिकार–लेखकाधीन

इण्टरनेट संस्करण प्रकाशन वर्ष –2009

तकनीकी सहयोग

आजाद कुमार भारती

चित्रकार

शशि भारती

प्रकाशक

मनोरमा साहित्य सेवा

आजाद दीप,15–एम–वीणा नगर

इंदौर ।म.प्र.।452010

दूरभाष–0731–4057553 चलितवार्ता–9753081066

1– सपना

बलवीर काका खुद तो अल्पशिक्षित थे पर पढाई के महत्व को अधिक और बहुत बारीकी से समझते और दूसरों को भी समझाते थे । बलवीर बेटा रोहन को पढाने लिखाने में तनिक भी कसर नही छोड़े ।वे खुद तकलीफ उठा लेते पर बेटे की तकलीफों उनके कान को स्पर्श तक नही कर पाती थी । खुद तकलीफ के बोझ दबे रहने के बाद भी बलवीर दुख की परछाईं बेटे तक नही पहंचने देते थे। बलवीर खुद

फटे पुराने कपड़े पहनते पर रोहन के लिये नये कपड़ों की कमी नही पड़ने देते । हर त्यौहार पर कपड़े लाते और जन्म दिन के लिये तो पूरा दूल्हे जैसे कपड़े जूते मोजे तक खुद खरीद कर लाते ।कस्तूरी काकी मना करती तो कहते तुमको नही मालूम मैंने कितने बुरे दिन देखे है । शहर की सड़को पर कई राते फांके में काटे है । तन ढकने के लिये पुराने बीस–पच्चीस रूपये में कपड़े खरीद का पहने है । भगवान ने मुझे अच्छे दिन दिखा दिये है तो मैं अपने बेटे बेटी को वे सारा सुख दूंगा जिससे मैं वंचित रह गया रोहन की मां ।

कस्तूरी काकी कहती अरे मैं तो मना नही कर रही हूं तुमको कि बच्चों की पढाई–लिखाई,खान–खर्च,कपड़े–लते में कंजूसी बरतो ।मैं तो बस इतना कह रही हूं कि साल में कम से कम एक जोड़ा अच्छे कपड़े तो खुद के लिये भी बनवा लिया करो । बेटवा के खर्चे में कमी मत करो पर अपना भी तो ध्यान रखा करो । तुम्हारे साथ रहकर मैं निरक्षर पढाई के महत्व को समझ गयी हूं । मैं भी चाहती हूं कि मेरा बेटा और बीटिया पढ़ लिखकर हमारा तुम्हारा ही नही गांव और देश का नाम रोशन करे । तुम्हारी शरीर पर सालो पुराने कपड़े मुझे अच्छे नही लगते । फटे कपड़ो को सिलवा–पुरवा कर पहनते हो क्या अच्छा लगता है । साल में कम से कम एक जोड़ी बढिया कपड़ा तो बनवा लिया करो ।

बलवीरकाका–अरे कहां दूल्हा बनना है कहकर खिस निपोर देते कस्तूरी काकी कहती तुम नही सुधरोगे । मुझे ही कुछ करना पड़ेगा । तब बलवीर काका कहते करते करते तो बाल भी खिचड़ीनुमा हो गये ।

कस्तूरी काकी–बात उल्टा पुल्टा करना कोई तुमसे सीखे ।

बलवीर कस्तूरी को समझाते हुए कहते आज तनिक कष्ट उठा लेगे तो क्या बुराई है कल के सुख के लिये ।

कस्तूरी–कल के लिये आज क्यों खराब करते हो ।

बलवीर–खराब नही सुखद बनाने का प्रयास कर रहा हूं ।

कस्तूरी–खुद को तकलीफ के साथ कंजूसी करके ।

बलवीर–अपने बच्चों के लिये कर रहा हूं कहां दूसरों के लिये कर रहा हूं काश अपने पास इतनी दौलत होती तो दूसरों की भी कुछ भलाई कर पाता। खैर अभी अपनो का भविष्य बना लूं बाद में यह भी इच्छा पूरी कर लूंगा ।

कस्तूरी–बहुत हंसीन सपने देख रहे हो ।

बलवीर–तुम्हारे साथ रहकर हंसीन नही तो और क्या देखूंगा ?

कस्तूरी–भगवान तुम्हारी ख्वाहिश पूरी करें ।

बलवीर कहते रोहन की मां हम कहां तकलीफ उठा रहे है । दोनो टाइम भोजन कर रहे है । अपनी छत के नीचे चैन से रात गुजार लेते है । महीने की पली तारीख को

तनख्वाह मिल जाती है । ठीक है बड़ा ओहदा और दौलत का ढेर नही है अपने पास पर जो है वह हमें खुश रखने के लिये काफी है । तुम्हारे संस्कारित बेटा–बेटी पढ लिख रहे है क्या यह कम है ?
कस्तूरी–मैं कहा मना कर रही हूं कि बच्चों की परवरिश में कंजूसी करो । उन्हे कपड़े लते मत दो । मुझे मालूम है बीटिया परायी हो जायेगी ।बेटवा अपनी बुढाती की लाठी है । इसका मतलब तो ये नही कि तीन–चार साल में एक जोड़ी खुद के लिये कपड़े बनवाओ और बच्चों के लिये इतना लाकर रख दो कि अलमारी में रखे रहे ।
बलवीर– भागवान अभी तो बच्चों की जरूरते पूरे करने भर की अपनी कमाई है । बाद में मेरी जरूरते बच्चे पूरी करेगे तू चिन्ता क्यों करती है । अरे कपड़ा भले ही पुराना पहनता हूं पर साफ सुथरे तो होते है ना । बच्चों के भविष्य के लिये तनिक कटौती कर लेता हूं तो क्यो बुराई है । आजकल के बच्चों और अपने जमाने में बहुत अन्तर है रोहन की मां।
कस्तूरी–ठीक है महाप्रभु तुम जीते मैं हारी । इस दीवली पर मेरे लिये साड़ी नही लाना अपने लिये कपड़े बनवा लेना यही मेरे लिये दीवाली का तोहफा होगा ।
बलवीर– तोहफा तुमको । दीवाला आने तो दो दूल्हे वाला शूट बनवा लूंगा ।
कस्तूरी–हर दीवाली पर कहते हो पर बनवाते नही हो । बच्चों के नाम पर तुमने कपड़े लते के शौक से तौबा कर लिया है ।
बलवीर–शौक किया होता तो बच्चों पर खर्च कैसे करता । देख नही रही हो बड़े बड़े ओहदे और अच्छी कमाई करके भी पैसे पैसे के लिये मोहताज है । कही कोई ठेके पर लुटा रहा है तो कोई कही और घर में बालबच्चे जरूरतों से जंग लड़ रहे है । मेरा शौक तो मेरे बच्चों का भविष्य है बस । अब तो मेरा बस एक ही सपना है बेटा अपने पैर पर खड़ा हो जाये बेटी के हाथ पीले हो जाये । इसके बाद शूट–बूट और बाकी शौक पूरी कर लेगे ।
कस्तूरी–रिटायरमेण्ट के बाद ।
बलवीर–ठीक समझी ।
कस्तूरी–बुढौती में शूट–बूट में तो जोकर लगोगे ।
बलवीर–तुमको तो खुशी लिगी ना । खैर कल की बात छोड़ो आज भूखे को दो रोटी मिल पायेगी ?
कस्तूरी–क्यों नही ? हाथ पांव धोकर बैठिये मैं खाना लगाती हूं ।
बलवीर काका आज की तंगी को कल की खुशी मानते थे । बच्चों के भविष्य के लिये हर तकलीफ उठाने को तैयार रहा करते थे । बड़ी बात तो यह थी कि वह तकलीफ में भी खुशी का एहसास करते थे ।

बलवीर काका का त्याग काम आ गया । बेटी सावित्री के हाथ पीले हो गये । वह अपने परिवार में हंसी–खुशी जीवनयापन करने लगी । साल दो साल की बरोजगारी के बाद रोहन को भी नौकरी मिल गयी । वह भी अपने पैर पर मजबूती से खड़ा हो गया । बलवीर काका काफी खुश रहने लगे । बलवीर अपनी कामयाबी पर अब जश्न मनाते नजर आने लगे थे । उनको अत्यधिक खुश देखकर कस्तूरीकाकी बोली– रोहन के बाबू सावित्री अपने घर–परिवार में रच बस गयी बेटवा अपने पांव पर खड़ा हो गया इसके बाद भी अभी कुछ बाकी है जो तुमको सूझ नही रहा है ।

बलवीर–क्या हमें नही सूझ रहा है भागवान तुम्ही सूझा दो ।

कस्तूरी–बेटवा का ब्याह । अरे कब तक ये बूढी चश्मा लगाकर कच्ची पक्की रोटी परोसती रहेगी। अब दो ही साल की तुम्हारी नौकरी बची है।कब सोचोगे बेटवा के ब्याह के बारे में ?

बलवीर–भागवान मैं चुपचाप बैठा तो हूं नही । मैं भी तलाश में हूं कोई बेटवा के योग्य पढी–लिखी लड़की मिल जाये तो ब्याह कर गंगा नहां लूं ।यही तो एक फर्ज पूरा करने को बचा है ।

कस्तूरी–बहू संस्कारित और अच्छे खानदान की मिल जाती तो कम से कम दो रोटी अपने को समय पर मिल जाती । हमें तो अपनी बहू से इतनी ही ख्वाहिश है । हमने तो अपनी सासू मां की सेवा में तनिक भी कोतहाई नही की । सास ससुर की बात तो हमारे लिये परमात्मा के आदेश के बराबर हुआ करता था । खैर आज के युग की बहुयें हमारे जमाने की बहुओ जैसी तो नही हो सकती ।

बलवीर–अरे आज भी पुराने संस्कार जीवित है ।आज की लड़किया कितनी भी मार्डन क्यों न हो पर मंदिर के सामने सिर पर दुपट्टा रखकर सिर तो झुका ही लेती है । क्यों डरती हो ?

कस्तूरी– मैं क्यों डरूं । मैंने तो अपने सांस ससुर को भगवान मानकर उनकी पूजा में तनिक भी कोतहाई नही बरती । मैंने अपने सास–ससुर के साथ कोई बुरा सलूक नही किया तो मेरी बहूं मेरे साथ क्यों करेगी ?

बलवीर–बहुत बड़ी बात तुमने कह दिया । बहू हमारे इस घर को मंदिर बना देगी । भगवान हमारी तपस्या को खण्डित नही करेगा । अच्छी बहू देगा जो हमारी विरासत में चार चांद जोड़ देगी ।

कस्तूरी–प्रभु हमारी ख्वाहिश पूरी कर देना । जीवन के बचे पल हंसी खुशी बित जाये।

बलवीर–अरे भगवान इतना निर्दयी थोड़े ही है कि हमारी तपस्या का प्रतिफल नही देगा ।हमारा शेष जीवन हंसी खुशी से ही बितेगा रोहन की मां । हमने किसी का

कुछ नही बिगाड़ा है हमारे साथ भगवान अन्याय क्यों। हमें जल्दी ही वैसी बहू मिल जायेगी जैसा तुम चाहती हो रोहन की मां ।
कस्तूरी– बेटवा का ब्याह जल्दी करके अपना फर्ज पूरा करो । दो साल के बाद रिटायर हो जाओगे तो अपने मनमाफिक जश्न नही मना पाओगे ।
बलवीर–मैं भी जल्दी चाहता हूं । कोई संस्कारित लड़की का बाप तो आये रिश्ता लेकर आये तो सही ।हम तो एक पैसा भी दहेज नही लेगे ।
कस्तूरी–दहेज नही हमें तो गुणवान पढी–लिखी और अच्छे संस्कार वाली बहू चाहिये बस । भले ही हमने अपनी बेटी के ब्याह में दहेज दिया है पर ना लेने की कसम खाते है ।
बलवीर–ठीक कह रही हो । हम अपराध नही करेगे । किसी लड़की के बाप की छाती पर कर्ज का बोझ नही डालेगे और ना ही भाई के कंधे पर ।
रोहन के ब्याह नही करने की जिद के बावजूद भी बलवीरकाका बहू की चिन्ता में बूढी होती पत्नी की ख्वाहिश पूरी करने में जुट गये । हर मिलने जुलने वाले से बेटे के ब्या की बात जरूर कहते । दहेजरहित ब्याह करने की बात जरूर कहते साथ यह भी कहते कि पढी लिखी अच्छे संस्कार बहू वाली चाहिये भले ही गरीब बाप की बेटी क्यों न हो । कस्तूरी और बलवीर की तलाश पूरी हो गयी । बेटे और होने वाली बहू रजनी आपस में बातचीत भी कर लिये । दोनो की रजामंदी से दहेजरहित ब्याह भी हो गया । मनमाफिक बहू पाकर कस्तूरी के जैसे पैर जमीन पर नही पड़ रहे तो वह हर मिलने वाली से बहू की तारीफ खुले दिल से करती और बलवीर और कस्तूरी बहू को बेटी का दर्जा तक दे दिये । बहू भी ऐसे सास–ससुर को पाकर खुद को गौरान्वित समझ रही थी ।
दो साल के अन्दर खानदान को कुलदीपक भी दे दी ।बहू अच्छी पढी लिखी थी । घर में किलकारी गूंजाका वह नौकरी करने की जिद करने लगी । सास सुर के मना करने पर कहने लगी कि बाबूजी दो महीने में रिटायर हो जायेगे तो एक आदमी की कमाई से घर चलाने में मुश्किल होगी ।
बलवीरकाका बोले–बहू घर के खर्च की तू चिन्ता ना कर हमे पेंशन भी तो मिलेगी ।
रजनी–बाबूजी पेशंन के कितने रूपये आयेगे हजार पन्द्रह सौ । कहां आप बड़े अधिकारी से रिटायर हो रहे है कि आपको बड़ी राशि मिलेगी ।
बहू की बात सुनकर कस्तूरी के पांव के नीचे से जैसे जमीन खिसक गयी वह बलवीर से बोली रोहन के बाबू बहू जो ठीक समझे करने दो ।
रोहन रजनी को नौकरी करने से रोकना चाहा पर वह सास–ससुर को ढाल बनाकर अपने मकसद में जीत गयी । हफते भर में ही एक स्कूल में टीचर की नौकरी ज्वाइन कर ली । दो महीने के बाद बलवीर काका रिटायर हो गये । कस्तूरी काकी भी पहले

जैसी नही रही उम्र की बीमारी ने उन्हे भी थका दिया । उन्हे भी सहारे आसरे की जरूरत लगने लगी । बलवीर के रिटायरमेण्ट का पैसा रजनी और रोहन पूरी तरह से खाली करने में लग गये और अपनी साजिश में कामयाब भी हो गये । बलवीर के पास मकान और पेंशन के अलावा दूसरी और कोई रकम नही बची थी ।रजनी पुराने मकान को बेचने की जिद पर अड़ गयी पर कस्तूरी और बलवीर नही माने बोले हमारा जनाजा इसी घर से निकलेगा । मेरे मरने के बाद जो चाहे तुम कर सकते हो पर मेरे जीते जी नही । बूढे–बूढी की जिद के आगे बेटा बहू घुटने टेक गये । अब क्या जो सास–ससुर रजनी को भगवान लगते थे अब वे राक्षस लगने लगे । उन्हे दो रोटी भी के लाले पड़ने लगे समय से । बलवीर और कस्तूरी के सपने बिखरने लगे ।

एक दिन बलवीर काका कस्तूरी काकी से बोले रोहन की मां भूख लग रही है । खाना मिल सकता है क्या ?

कस्तूरी–बेटी रोटी बन गयी क्या ? तेरे बाबूजी का दवाई खाने समय हो गया है । सिर चकरा रहा । इनहे खाना दे दो ।

रजनी–वे तो हमेशा भूखे रहते है । बाहर भी नौकरी करो घर में भी । ये सब मुझसे अब नही होता । सासू दिन भर खटिया तोड़ती रहती है रोटी भी नही बना सकती क्या ?

कस्तूरी–बहू नाराज क्यो हो रही हो । सब काम तो मैं ही की हूं ना तुम सिफ रोटी बेल रही हो । वह भी इसलिये कि रोटी मुझसे बरोबर बेलते नही बनती । अगर मेरी नजर जबाब न देती तो रोटी भी बेल लेती । खटिया कब तोड़ती हूं घर का काम कोई नौकरानी तो नही करने आती इसके बाद पोते की देखभाल हम हो न कर रहे है । तुम तो सुबह स्कूल चली जाती है चाय नाश्ता मैं ही बनाकर देती हूं । शाम को बस रोटी बनाती हो ।ठीक है कल से यह भी कर लिया करूंगी ।

रजनी–कल से नही अभी से । अलग–अलग रोटी बनाकर पेट भर खाओ । मैं न तीनो टाइम रोटी दे पाउंगी और न ही दवाई दारू का खर्चा उठा पाउंगी ।

कस्तूरी–क्या एक तवा दो रोटी ।

रजनी–हां अभी से ।

कस्तूरी –बेटी तू बंटवारा कर रही है । क्या इसी दिन के लिये हमने सपने देखे थे । रोहन को पढाया लिखाया था । अब हम अलग रोटी बनाये खाये ।

रजनी– सभी मां बाप करते है तुमने कर दिया तो कौन सा तीर मार दिया ।खूब बनाओ खाओ । मैं तुम्हारा बोझ नही ढो सकती । तुम लोग मेरे साथ रहे तो मुझे जहर खाना पड़ सकता है । लो तवा गरम है आटा गूंथा है बना लो बूढउंू और

अपनी रोटी मेरे और उनके भर की रोटी बन गयी है कहते हुए रजनी चूल्हे से दूर चली गयी ।
कई दिन दोनो बलवीरकाका और कस्तूरी काकी फांके में दिन गुजारे जब नही रहा गया तो बलवीर काका बोले रोहन की मां कब तक भूखे मरेगे । अब तो बेटा भी नही पूछता है । थाम ले हम दोनो चूल्ह चौके का काम अब कोई सहारा नही है । हम दोनो एक दूसरे के सहारे बने जब तक सांस है ।
कस्तूरी–हां क्यों नही । बेटा बहू की खुशी के लिये अब यह भी करना पड़ेगा ।
रजनी पहले खाना बना लेती इसके बाद नन्हे रोहित से संदेश भेजवाती कि जा दादी से बोल दे तवा गरम है रोटी बना ले । गैस राशन आदि सभी सामानों की व्यवस्था खुद बलवीरकाका करते ।नन्हा रोहित तुतलाते हो दादी को बोलकर चला जाता । बेचारी बूढी कस्तूरी आंखों में आंसू लिये रोटी सेंकती और बूढे बलवीर को दवाई खिला कर रोटी परोसती । दोनो के जीते जी ना जाने क्यो नरक का दुख मिल रहा था । वे सोच–सोच कर बीमार रहने लगे । पापी पेट की भूख के लिये रोटी तो चाहिये । बेचारी कस्तूरी चश्में के अन्दर से आंख फाड़–फाड़कर देखती और रोटी बनाती । दोनो का दिन काफी कष्टमय बित रहा था । उधर रजनी काफी खुश थी रोहन भी पत्नी के दबाव में । रोहन के सुबह दफतर चला जाता देर रात तक वापस आता । रजनी रोहित को झूलाघर छोड़कर देर से स्कूल पहुचंती । स्कूल से छूटती तो किटी पार्टियों का लुत्फ उठाती ।
रजनी की रोज–रोज की लेटलतीफी से उसकी क्लास के बच्चे उदण्ड करते । रजनी के रोज–रोज देर से स्कूल आने और बच्चों के उदण्डता की खबर स्कूल की संचालिका को लगी । वे रजनी के उपर निगाह जमाने लगी । जब तक रजनी न आती खुद क्लास लेती । सप्ताह भर स्कूल संचालिका के नजर रखने के बाद भी रजनी में परिवर्तन नही आया । वह अब रजनी की परेशानी को नजदीक से जानने की कोशिश कर दी । स्कूल की दूसरी शिक्षिकाओं से पूछताछ की पर सन्तुष्ट नही हुई ।
एक दिन स्कूल की संचालिका स्कूल –टाइम में रजनी के जा पहुंची । वहां बूढे बलवीर दर्द मे कराह रहे थे । बूढी कस्तूरी तवा पर रोटी जल्दी–जल्दी सेंक रही थी । यह सब संचालिका चुपके से खड़ी देखती रही । कस्तूरी रोटी लायी कांपते हुए हाथों से बलवीर की ओर बढाते हुए बोली लो खाकर दवाई खा लो । कस्तूरी और बलवीर की दशा देखकर संचालिका के आंखों में आंसू उतर आये । वे आंसू को पीती हुई दरवाजा खटखटायी और बोली कोई है ।
बलवीर–दर्द भूल कर बोले आ जाइये दरवाजा खुला है ।
संचालिका– आप लोग अकेले रहते है ।

बलवीर–नही बेटा बहू और एक पोता भी है । अभी तो हम पांच सदस्य है घर में ।
संचालिका–कांपते हाथों से अम्मा रोटी क्यों बना रही थी ।
कस्तूरी–बहू काम पर जाती है ना। फुर्सत नही मिलती उसको । घर और बाहर दोनों का काम देखना पड़ता है ना। उपर से हम बूढी–बूढे का बोझ भी ।
संचालिका महोदय बलवीर और कस्तूरी के बिना कुछ कहे सब तहकीकात पूरी कर ली । दूसरे दिन रजनी फिर देर से स्कूल पहुंची । संचालिका महोदया उसका इंतजार ही कर रही थी उसे क्लास में न जाकर अपने दफतर में हाजिर होने को बोली ।
रजनी संचालिका के आफीस में प्रवेश करते ही बोली कहिये मैडम क्यो तलब की है ?
संचालिका–मैडम आप शिक्षा देने के काबिल नही है। एकाउण्ट डिर्पोटमेण्ट से अपना हिसाब करवा लीजिये ।
रजनी–कालेज में पढाने की योग्यता है मेरे पास । आपने मेरी डिग्रियां देखकर नौकरी दी थी । अयोग्यता का इल्जाम क्यों ?
संचालिका–सेवा,त्याग और परमार्थ की शिक्षा देनी वाले खुद बड़े बुढे बुजुर्गो पर अत्याचार कर तो क्या शिक्षा देगे ?आप जा सकती है ।
रजनी–मैडम मुझसे अपराध हो गया है। भगवान स्वरूप सास–ससुर से माफी मांग लूंगी । उम्मीद है माफ कर देगे ।
संचालिका महोदया–चलो गाड़ी में बैठो । रजनी को लेकर संचालिका महोदया रजनी के घर पहुंची ।रजनी गाड़ी से उतर कर बलवीर और कस्तूरी के कमरे की ओर भागी ।बलवीर का पैर पकड़ कर रोते हुए बोली मुझे माफ कर दो बाबूजी ।
बलवीर–माफी किस बात की । क्या अपराध किया है तुमने ?
रजनी–मुझे अपने अपराध का पता चल गया है । माफ कर दो ।
कस्तूरी–बेटी कैसा अपराध कैसी मांफी कहते हुए गले से लगा ली । बूढे बलवीर जबाबा सवाल कर रहे घुटनो पर शरीर का बोझ डालते हुए उठे और रजनी के सिर पर हाथ फेरते हुए बोले बेटी तेरी खुशी में हम दोनों की खुशी है । हमारी ओर से कोई शिकायत नही है। तुमने खुद प्रायश्चित कर लिया । रजनी खुशी के मारे उछल पडी और संचालिका के सामने हाथ जोड़कर खड़ी हो गयी ।
संचालिका महोदया बोली धरती के भगवान माफ कर सकते है तो मैं क्यो नही ? अब क्या बूढी आंखों में चमक और पतझड़ हुए जीवन में फिर से बहार छा गयी ।
बूढे बलवीर का दर्द छूमन्तर हो गया । वह कस्तूरी को चश्मा थमाते हुए बोले रोहन की मां देखो हमारे सपने ।

2–खण्डितमूर्ति

मनवन्तीदेवी पति की मौत के बाद दुनिया में अकेली हो गयी । मां–बाप,भाई–बहन और सगे नाते रिश्तेदार अपशकुनी मानकर मुंह फेर लिये । परिवार वालो को भी मनवन्तीदेवी के दुर्भाग्य से भय सताने लगा । वे मनवन्ती के अपशकुन के प्रकोप से बचने के लिये उसे घर से निकाल दिया । मनवन्तीदेवी के जाये तो जाये कहां मायके और ससुराल दोनों के दरवाजे बन्द हो चुके थे । उसके सामने बस दो विकल्प थे एक तो ये कि वह आत्महत्या कर ले या झोपड़ी डालकर जमाने का मुकाबला करे। मनवन्ती देवी के ससुराल वालो ने ही नही मायके वालो ने भी उसे डूब मरने के लिये उकसाया । मायके और ससुराल वालों से उबकर वह गांव से कुछ दूर एक झोपड़ी डालकर करने लगी । मनवन्ती के हठ के आगे ससुराल पक्ष झुक गया और उसके मृतक पति का हिस्सा दे दिया। मायके वालो आंखे मूंद़ लिये । मनवन्तीदेवी बटाई पर खेती करवाकर जीवन बिताने लगी ।

पच्चीस बरस के लम्बे भयावह विधवा जीवन से हारकर मनवन्तीदेवी दौलतमंद हरीशबाबू के साथ जीवन के सांध्य काल में जीने मरने की कसमें खाकर दुनिया के सारे सुखों का भोग करने लगी । हरीशबाबू की पहली पत्नी सत्यवतीदेवी चार बच्चों और सम्पन्न घर परिवार छोड़कर कैंसर की भेंट चढ़ चुकी थी । सत्यवतीदेवी बहुत भाग्यशाली महिला थी । हरीश बाबू के घर में उनके चरण पड़ते ही मानो लक्ष्मी का वास हो गया हो । सत्यवतीदेवी के ब्याह कर आने के बाद हरीशबाबू को नौकरी भी मिली थी । सत्यवतीदेवी ने पति हरीशबाबू की नौकरी के लिये अनेक व्रत उपवास मंदिर,गुरूद्वारा,मस्जिद के दर्शन,पूजन की थी। नौकरी मिलते ही हरीशबाबू ने तरक्की के सोपान भी चढने शुरू कर दिये थे । तरक्की करते करते इतने उूंचे पहुंच गये थे कि उनके गांव में कोई इतना बड़ा रूतबेदार न था परन्तु सत्यवतीदेवी कैसर से पीड़ित हो गयी ।अन्ततः तड़प तड़प कर एक दिन मर गयी ।

सत्यवतीदेवी की मौत के बाद हरीश बाबू के उपर मुसीबतों का पहाड़ आ गिरा ।बेटे मनमाने हो गये छूटे साड़ की तरह । हरीशबाबू को दो नावों पर सवार होना पड़ गया । दो चार महीने के बाद उन्हे भाग कर गांव आना पड़ता था । हरीशबाबू मुसीबतों के भंवर में पत्नी के मरते ही कुछ ही सालो में बूढे हो गये ।लड़के अपनी अ–पनी राह चलने लगे । भर–पूरा परिवार होने के बाद भी उन्हे एक गिलास पानी देने वाला कोई ना था । मुसीबतों के चक्रव्यूह में झूलते कभी कभी एकान्त में बैठकर रो लेते । इससे उनका मन हल्का हो जाता ।

हरीश बाबू के पास पैसा भी बहुत था । हरीशबाबू को जितना दुख अपनी मुसीबतो से नही था उससे कही अधिक दुख बेटो के दुर्व्यवहार से हो रहा था । अब अपने दुख

को कम करने के लिये दारू की शरण में चले गये । बाप के बेचैनी को कम करने के लियें बड़े बेटे अंकुर ने बाप के ब्याह करने की अफवाह फैला दी । यह खबर मनवन्तीदेवी को भी लग गयी । वह अंकुर को बेटा मानकर अपने दिल की बात कह दिया । अंकुर ने भी मां मान कर सौदा कर लिया रूप्ये की लालच में । वह अपने बूढे बाप का ब्याह करवाने का षणयन्त्र रचने में कामयाब हो गया । अंकुर मनवन्तीदेवी के मायके तक पहुंच गया । उसके बाप को राजी किया बाप की लाखों की दौलत और जीवन भर के सुखमय जीवन का सपना दिखा कर। मनवन्ती का बाप भी शामिल हो गया । वही बाप जो मनवन्ती को अपशकुनी समझता था । अब वही मनवन्तीदेवी भाग्यशाली दिखने लगी थी । मनवन्ती भी पच्चास के उपर की हो गयी थी न कोई बालबच्चा था न होने की उम्मीद थी । मनवन्तीदेवी का बाप रूपये की लालच बूढी बेटा का ब्याह दौलतमंद रूतबेदार ओहदार से करवाने का चक्रव्यूह रचकर एक दिन अपनी विधवा बूढी बेटी और अंकुर को लेकर शहर पहुंच गया । नातहित किसी को भनक नही लगने दिया । अंकुर ने भी ऐसी ही साजिश किया अपने सगे भाई और बहन तक को खबर नही लगने दिया ।

हरीशबाबू अंकुर,बृध्द व्यक्ति और अनजान महिला को अचानक आ जाने से हैरान होकर पूछे अंकुर बिना किसी सूचना के क्यो दो आदमी के साथ कैसे आ गये । क्या काम पड़ गया । अभी तो सारा काम करके मैं आया हूं । तुम्हारे कर्ज की कुछ रकम भी चूकता कर आया फिर क्यों इस तरह आ धमके ? कोई मुसीबत आ गयी थी तो फोन कर सकते थे । अंकुर तुम तीन बच्चों के बाप हो । बेटी–दमाद वाले हो । इस तरह की गैरजिम्मेदाराना काम अच्छा नही लग रहा है ।

अंकुर–थोड़ी शान्ति रखोगे ?

हरीशबाबू–अच्छा बताओ ये लोग कौन है । मेरे पास वक्त नही है । डयूटी जाने का समय हो गया है ।

अकुंर– ये औरत मेरी मां है और नानाजी है ।

हरीश– क्या ? ये तेरी मां और नानाजी कहां से आ गये ।

अंकुर–मैंने मान लिया है ।इस मेरी मां से आपको कानूनन ब्याह करना होगा ।

हरीशबाबू –यह नही हो सकता । अट्ठावन साल मे ब्याह करूंगा । आधा दर्जन पोते पोती है दो नाती एक नातिन के होते हुए मैं ब्याह करूंगा । तुमको शर्म नही आयी । एक परायी औरत को लेकर आ गये । पागल हो गये हो क्या ?

अंकुर–हां मां की ममता के लिये ।

हरीशबाबू– तुम्हारी मां के मरे दस साल हो गये है । अब अचानक मां की ममता के छांव की कैसे जरूरत आ पड़ी । क्यों मेरे साथ छल कर रहा है । अरे जो मेरे पास धन दौलत है तुम तीनो भाईयों का ही तो है । मैं मरूंगा तो साथ नही ले जाउंगा ।

अंकुर–हरीशबाबू का पांव पकड़ते हुए बोला बाबू मुझे मां दे दो । इस मां का दुनिया में कोई नही है । मैंने मां मान लिया है । आप भी पत्नी मान लो । अब इस दो रोटी और तनिक सहारे की जरूरत है । बहुत तकलीफ उठायी है पच्चीस साल से अधिक का विधवा जीवन जी चुकी है । इसका अगला जन्म बना दो बाबूजी ।
हरीशबाबू–ऐसा होने से पहले मैं जहर खा लूंगा ।
मनवन्तीदेवी के बाप आंखों में नकली आंसूं भरकर बोले बेटा हो तो मेरी उम्र से दो चार साल छोटे पर बुध्दि में मुझसे कई गुना बेहतर हो । रूतबेदार ओहदे पर हो । तुम्हारी छांव में इस अभागिन का जीवन पार हो जायेगा । बेटा मेरी जिन्दगी का क्या भरोसा किस मोड़ पर साथ छोड़ दे । पच्चीस साल तो विधवा के रूप में काट ली पर अब नही कटता । मैं मनवन्ती को तुम्हारी सेवा के लिये सौंप रहा हूं । इसे मान देकर इसके स्वाभिमान को बढा दो बेटा । बेटा मेरी विनती मान लो तुम्हारे साथ मेरी बेटी का जीवन बित जायेगा । तुम्हे भी सहारे कि जरूरत है इसे भी । दोनो एक दूसरे के सहारे बन जाओ । बेटा इससे तुम्हारे बेटो को भी खुशी मिलेगी । अंकुर का मुंहबोली मां के प्रति प्यार तो देख ही रहे हो । इस मां बेटे के प्यार को अपनी स्वीकृति देकर सच्चा बना दो । बेटा एक बूढे बाप के पगड़ी की इज्जत रख लो कहते हुए अपने सिर से पगड़ी उतारकर हरीशबाबू के पांव पर रख दिया ।
हरीश–मेरी उम्र ब्याह करने की है । दादा और नाना बनचुका हूं । मेरी पोती दो बच्चो की मां बन चुकी है । क्यों दुनिया में मेरी इज्जत का जनाजे निकलवाने पर तूले है । मेरे बेटे मुझे कोई तकलीफ नही पडने देते । मेरी बेटी समान बहुये भी सेवा–सुश्रुषा में कमी नही रखती । मैं ब्याह कर इन सबकी निगाहों में नही गिरना चाहता । मेरे जीवन के दो चार साल तो और बाकी है । वे भी पार हो जायेगे । भोलाबाबा मेरी तनिक चिन्ता ना करे । आपकी बेटी का जीवन भाई–भतीजों के साथ बित सकता है । आप अपनी बेटी के भविष्य के बारे में जो भी निर्णय ले यह तो आपके उपर है । रही बात मेरे ब्याह करने की तो इस जन्म में तो नही हो सकता । अब आप देवीजी को साथ लेकर जा सकते है ।
मनवन्तीदेवी–देखो जी मैं जाने के लिये तो नही आउूं हूं । अब इस दरवाजे से मेरी लाश उठेगी ।
अंकुर– बाबूजी मां ठीक कह रही है ।
हरीश–मैं सब समझ गया हूं ।
अंकुर–कुछ नही समझे । मेरी मुंहबोली मां के आंसू के माोल समझे ही नही बाकी क्या समझ कर करेगे ? मुझे तो मां चाहिए बस .....

मनवन्तीदेवी– देखो जी तुम जिद पर हो तो मै भी अब जिद पर अड़ गयी हूं । बिना ब्याह किये जा नही सकती अगर जाने की नौबत आयी तो रेल के आगे कूछ कर जान दे दूंगी । तब निपटते रहनस ।
हरीश–बाबू धमकी ना दो । तुमको जाना पड़ेगा मैंने ब्याह करने के लिये तो तुमको बुलाया नही हूं । तुम क्यो आयी ।
मनवन्तीदेवी–मैं आयी नही लायी गयी हूं ।
हरीश–कौन लाया है मैं ?
मनवन्तीदेवी– अंकुर बेटवा ।
हरीश–अंकुर के साथ वापस लौट जाओ बाप बेटी किराये भाड़े का इन्तजाम मैं कर देता हूं ।
मनवन्ती–देखो जी मैं जाने के लिये तो आयी नही हूं अब यहां से जाउंगी तो तुम्हारे हाथ से सिन्धूर पहन कर वरना जान दे दूंगी ।
भोलाबाबा–मान जाओ हरीश बाबू मनवन्ती ठीक कह रही है । एक विधवा को सधवा बनाकर उसका पुर्नजन्म सुधार दो ।
हरीशबाबू–बाबा ऐसे कैसे हो सकता है ।
मनवन्तीदेवी रोने का स्वांग करते हुए उठी । बाप की पगड़ा उठाकर सिर पर रखते हुए बोली बाबा तुम घर जाओ । मै तो तुम्हारे लिये वैसे ही परायी थी । तुम बड़ी उम्मीद लेकर आये थे कि मेरे जीवन का दुख मिट जायेगा पर मेरी तकदीर नही बदल सके । मैं जा रही हूं रेल से कटकर जान दे दूंगी भले ही मेरा अगला जन्म बिगड़ जो कम से कम मेरे जनाजे में तो अंकुर के पिताजी शामिल तो होगे । इनकी पत्नी बनने का मौका नही मिलेगा तो क्या जनाजे में शामिल तो करवा ही लूंगी । बाबा मैं जा रही हूं कहते हुए रेलवे लाइन की और दौड़ पड़ी । हरीश बाबू सिर पर हाथ रखकर बैठ गये । भोलाबाबा के गाल पर मुस्कान को नही छिपा पाये । अंकुर दौड़ कर मनवन्ती का रास्ता रोका और अपनी कसम दे दिया । मनवन्तीदेची ऐसे लौट पड़ी जैसे कुछ हुआ ही नही । वैसे भी बाप बेटी दौलत ऐंठने का स्वांग ही तो कर रहे थे अंकुर को मोहरा बना कर ।
अंकुर मनवन्तीदेवी का हाथ पकड़ कर हरीशबाबू के सामने खड़ा हो गया बोला बाबूजी इस मां को मेरी मां का असली हक दे रहे हो या मैं भी इस मां के साथ कट जाउं । बाबू मेरे मरने के बाद मेरे बच्चों को बोझ तुम्हारे सिर पर होगा । बाबू आखिरी बार कह रहा हूं ना ना कहना मेरी कसम है तुमको । यदि ना कह दिये तो मेरा मरा मुह देखना पड़ेगा तुमको । हरीशबाबू लाचार हो गये दूसरे दिन तीस हजारी कोर्ट में कानूनन मनवन्तीदेवी के फरेब में फंस गये अटठावन साल की उम्र में । भोलाबाबा अंकुर के साथ हंसी–खुशी नाचते गाते वापस आ गये ।

मनवन्तीदेवी हरीशबाबू के साथ ब्याह कर दुनिया के सुख भोगने लगी जो कभी उसके लिये स्वप्न मात्र हुआ करते थे । धन–दौलत से खेलने लगी । नोटो की गड्डियां उसके हाथ आने लगी । वैभव को पाकर वह कभी –कभी अपने रौद्र रूप का प्रर्दशन भी कर देती हरीशबाबू के सामने । धीरे–धीरे वह हरीशबाबू के कमाई पर कब्जा जमा ली । अंकुर के साथ किये सौदे को भूलकर अपने और अपने मायके वालो की फिक्र हंसी–खुशी के साथ रहने लगी । हरीशबाबू इस सबसे बेखबर मनवन्तीदेवी को सच्ची धर्मपत्नी मान बैठे थे । उन्हे ब्याह के पीछे के फरेब की तनिक भी भनक नही लग पायी ।खैर इस फरेब में उनका बेटा भी शामिल था वह मनवन्तीदेवी को मोहरा बनाकर सारी कमाई का मालिक बनना चाह रहा था पर उल्टा हो गया खुद मोहरा बन चुका था ।

हरीशबाबू अटठावन साल की उम्र में मनवन्तीदेवी के साथ ब्याह किये । दो साल का समय ना जाने कब बित गया एहसास ही नही हुआ रिटायर हो गये । रिटायर होने के बाद बीस लाख रूपये मिले बाकी हर माह पेंशन तो मिलना ही था । बीस लाख का नाम सुनकर मनवती के पांव जमीन पर ही नही पड़ रहे थे । हरीशबाबू के सामने भी शंका–कुशंका के बादल रह रहकर छाने लगे थे । रिटायरमेण्ट के बाद महीना भर शहर रहे फिर वे अपने बेटे बहूओं के साथ बाकी का जीवन बिताने की प्रतिज्ञा कर शहर को अलविदा कह दिया । गांव में बेटे बहुओं ने बहुत मान–सम्मान दिया पर मनवन्तीदेवी को बेटे बहुओं में खोट के अलावा और कुछ नजर नही आता था । उन्हे हरीशबाबू के बेटों का परिवार डंक मारने लगा हो जैसे । मनवन्तीदेवी के सौतेलेपन से घर की सुख–शान्ति छिन गयी । हरीशबाबू जब तक घर में रहते मनवन्तीदेवी बहुओं की शिकायत बेटों की शिकायत पोते पोतियों की शिकायत लिये खड़ी रहती । उसके मां–बाप की दखलअंदाजी भी बढ गयी । यह दखलअंदाजी हरीशबाबू के बेटो को तनिक भी पसन्द नही आ रही थी । मनवन्तीदेवी के मायके वाले बंटवारा करवाने पर जैसे उतारू थे । हरीशबाबू के बेटे–बहुओं पर सौतेली मां मनवन्तीदेवी के सौतेलेपन का कहर बरसता रहता । हरीशबाबू दिन खेतों में काम करने में बिताने लगे । मनवन्तीदेवी के बंजरदिल पर परिवार के प्रति तनिक भी ममत्व नही जगा । उसका दिल दिन प्रति दिन कठोर होने लगा । वह हरीश बाबू से बेटे बहुओं से अलग रहने की जिद पर उतरने लगी । अन्ततः चूल्हा बंटवा कर ही चैन की सांस ली ।

हरीशबाबू जब बेटे बहुओं के साथ रहते थे तो उन्हे खाना समय से मिल जाता था पर अब खाना क्या समय से पानी भी मिलने की गुंजाईश कम हो गयी । हरीशबाबू सुबह खेत जाते राते में लौटते । यदि बेटे बहु खाने को देते तो वह झगड़ा करती कहती हमारे आदमी को जादू टोना करके अपने बस में कर रही है जबकि बहुये

हरीशबाबू को देवता की तरह पूजती थी । मनवन्तीदेवी खुद पर और मायके वाले पर अधिक ध्यान रखती और हरीशबाबू को जैसे भूल गयी । हां उनसे रूपये ऐंठने के तरह तरह के स्वांग रचती । रोज रोज बीमार रहने का नाटक करती। हर हफ्ते मायके जाती उसी मायके जिस मायके वालों ने अपशकुनी कहकर त्याग दिया था । वही लोग दौलतमंद हरीशबाबू से षणयन्त्र के तहत् ब्याह करवाकर कमाई पर तूले हुए थे । मनवन्तीदेवी का सौतेला व्यवहार परिवार को ही नही हरीशबाबू को भी डंस रहा था । उन्हे खाना तो समय से क्या मिलना ही बन्द हो गया था । पाचं लाख बैंक में जमा रूपये को छोडकर सब दौलत पर मनवन्ती का कब्जा हो गया था । वे मनवन्तीदेवी के अत्याचार से घबरा हरीश अब और अधिक शराब पीने लगे । मनवन्तीदेवी के अत्याचार और भूख ने उनकी जान एक दिन ले ली । हरीशबाबू की मौत ने मनवन्तीदेवी को खण्डितूमर्ति बना दिया बेटो–बहुओ पोते पोतियो,बेटी–दमाद और नातिन–नातियों की नजरो में ।

हरीशबाबू की मौत का सदमा बेटे,बेटी और बहुओ को खाये जा रहा था पर मनवन्तीदेवी धन दौलत पर कब्जा जमाने में जुटी हुई थी । बेटे–बहुओ ने हरीशबाबू का क्रिया–कर्म अपनी सामर्थ्य अनुसार रज–गज से किया । तेरहवी के बिहान भर मनवन्तीदेवी ने नात–हितों के सामने पंचायत बुला ली यह कह कर कि बुढउ मर गये अब हमारा जीवन कैसे बितेगा ? नात–हित और पंचो ने कहा कि बेटों और उनके परिवार के साथ रहो तीन–तीन बेटे है तुम्हारा जीवन वैसे ही पार हो जायेगा । वह नही मानी बोली मुझे इन बेटे बहुओं के साथ नही रहना है । मैं अलग रहकर अपना जीवन बिता लूंगी । धन दौलत जमीन जायदाद में मुझे आधा हिस्सा चाहिये ।

अंकुर पंचों के सामने हाथ जोड़कर खड़ा हुआ और बोला पंचो मांताजी आधा ले लेगी तो हम तीन भाईयों को क्या मिलेगा ?

मझला बेटा अभिशेक बोला पंचो बाबूजी तो नही रहे ।मरे या मारे गये यह तो रहस्य का विषय बना हुआ है । खैर जो होना था हो गया । बाबूजी को बीस लाख रूप्ये मिले थे बाकी हर माह पेंशन मिल रही है । मेरा मांताजी से सवाल है कि बीस लाख रूपये कहां गये ?

तीसरा बेटा अजीत मझले भाई की हां में हां मिलाते हुए बोला भइया ठीक कह रहे है । बाबूजी के मरे चौदहवां दिन हुआ है । मांताजी ने पंचायत बुला दी है तो पंचो सब हला–भला कर दो ।

बेटो की बात सुनकर मनवन्तीदेवी बैंक की पासबुक लाकर बड़े बेटे अंकुर के उपर फेक दी और बोली ये तेरे बाप के जमा रूपये है ।

अंकुर–मांतीजी बैंक में तो सिर्फ पांच लाख ही जमा है । बाकी और रूपये कहा गये ?

मनवन्तीदेवी–मुझे नही मालूम ।
अजीत– झूठ ना बोलो मां ।
अभिशेक– मां बाबूजी भूख से मर गये तो रूपये कहा गये । मां हमारी आस्था पर चोट कर खण्डितमूर्ति ना बनो मां ।
मनवन्तीदेवी–तुम्हारे बाबूजी जाने ।
अंकुर–बाबूजी लौटकर आने से रहे । तुम्ही बता दो ।
अजीत–मां तुमने बाबूजी को लूट कर हम भाईयों की दरिद्र बना दिया क्या तुम इसी लिये आयी थी ।
मनवन्तीदेवी –देखो मै कुछ नही जानती तेरे बाप की कमाई के बाकी रूपये कहां गये ? बैंक में जो रूपये है उसमें से आधा मुझे दे दो, बाकी तीनों भाई आपस में बांट लो ।
अभिशेक–बाप तो अत्याचार नही सह सके मर गये । मां उनके बेटों को क्यों मार रही हो ? हमारी एक बहन भी है ।
मनवन्तीदेवी–हमारे सामने तो तुम तीन हो । तुम बंटवारा कर लो । तुम्हारी बहन हिस्सेदार नही है वह मरे हुए के समान है ।
हरीशबाबू के बड़े भाई कृपाराम से सहा नही गया वे उठ खड़े हुए और बोले मनवन्ती तुम्हे दौलत प्यारी थी तुमने हड़प लिया । मां–बाप और बहन –बहनोई को तुमने दोनों हाथों से दान–पुन्य की जो तुमको अपशकुनी मानकर त्याग चुके थे । इन बच्चो का हक तो न मार ।क्यों अगला जन्म खराब कर रही है । इस जन्म में तो बंजर भूमि हो गयी है जहां दूब भी नही जमीं । ब्याह कर आते ही पहले पति को खा गयी । पच्चीस साल के विधवा जीवन के बाद मेरे देवता समान भाई को फांस कर भूखे मार डाली । बच्चों पर अत्याचार न कर मनवन्तीदेवी ।
मनवन्तीदेवी–जेठजी चार बराबर का हिस्सा करवा दो ।
अजीत–बहन का हिस्सा ।
मनवन्तीदेवी–बेटी का कोई हिस्सा नही होता ।
अंकुर–बैंक के अलावा और कम से कम दस लाख तो होगे । वे रूपये कहां है ।
मनवन्तीदेवी–मुझे नही पता । बैंक की जमा पूंजी ,खेतीबारी और घरद्वार में चार हिस्से कर लो । यदि मंजूर नही है तो कानूनी कार्रवाई कर मुझे बेदखल करवा देना तुम तीनो ।
अंकुर–ऐसा करना होता तो तुमको मां का दर्जा ही क्यो देते ?
मनवन्तीदेवी पंचों की बात नही मानी वह बोली मेरे पास जो कुछ है या रहेगा मैं मरने के बाद तो अपने साथ नही ले जाऊंगी । देखो तुम्हारे बाप क्या ले गये । यदि तुम लोगों पर विश्वास नही है तो कानूनी कार्रवाई कर लो । मनवन्तीदेवी की भूख से

और रौद्र रूप से भयभीत होकर तीनों भाई आपस में चर्चा कर राजी हो गये । पंचों ने मुहर लगा दी । मनवन्तीदेवी के रौद्र रूप को देखकर कृपाराम बोले अंकुर,अभिशेक और अजीत तुम तीनों मेरी बात ध्यान से सुनो – ममतारहित बंजरभूमि समान ये तुम्हारी सौतेली मां खण्डितमूर्ति हो गयी है। इसके षणयन्त्र और सौतेलापन का सच दुनिया के सामने आ गया है पर तुम लोग इस मनवन्तीदेवी को मां का ही दर्जा देना ।

अंकुर–ताउश्री मां भले ही सौतली है, हम भाईयों के सपनों की बारात को भले ही जनाजे में बल दी है पर हम तीनों भाईयों तुम्हारे आदेश के आगे सिर झुकते है । अभिशेक और अजीत ने भी सिर झुका दिया ।

3–दीवार

इकलौती बेटी,बाप बड़े ओहदे की सरकारी नौकरी पर तैनात और अच्छा जमीन–जायदाद के मालिक मीठुबाबू की बेटी काजल और कत्थुराम के बेटे चन्द्र के रिश्ते की खबर पूरे गांव की जबान पर चढ गयी थी । गांव वाले वापस में बात करते नही थक रहे थे कि देखो एक निरक्षर भूमिहीन हलवाह के लड़के से एक अफसर अपनी बेटी का ब्याह करने जा रहा है सिर्फ इसलिये की चन्द्र पढ रहा है । ना जाने क्यों उस अफसर बाप की ना जाने क्यों बुद्धि मारी गयी है । क्या देख लिये उस सम्पन्न परिवार ने कंगले कत्थु के बेटे और उसके परिवार में । दहेज में भारी–भरकम रकम भी देगा । वास्तव में मीठुबाबू खबर के गरम बाजार से बिल्कुल उल्टे थे । वे बेटों ही नही भतीजों की भी शिक्षा –दीक्षा से काफी चौकने थे । आधा दर्जन बेटे–भतीजो में एकमात्र बेटी काजल ने स्कूल का मुंह तक नही देख पायी । सम्भवतः पढे–लिखे मीठुबाबू के परिवार में बेटी–बेटा के बीच मोटी दीवार थी पर उसकी गुंज सुनाई नही पड़ती थी ।

मीठुबाबू ने चातुर्य का परिचय देते हुए बीटिया काजल का ब्याह बिना किसी धूम के चन्द्र के साथ सम्पन्न करवा लिया । बेटी के ब्याह में मीठुबाबू ने दिया तो कुछ नही पर नाम उंचा हो गया अनपढ बाप के पढ रहे बेटे से ब्याह होने भर से । ब्याह के बाद कत्थु को तानाकशी का शिकार भी होना पड़ा । लोग कहते बड़े ओहदेदार आदमी का समधी बनकर कत्थु बड़ा आदमी हो गया है । मालदार समधी है कत्थु को दहेज भी खूब दिया होगा पर कत्थु ने लेकर भी नहीं लेने का बहाना करता है । लोग उल्टे एक चोट और कर देते अरे भाई कत्थु बाकी कोर– कसर गौने में पूरी कर लेना । बेटी के साथ तो ढेर सारी रकम और ढेर सारा सामान आयेगा तुम्हारे घर में रखने की जगह नही मिलेगी ।

कत्थु कहता भइया दहेज सामाजिक बुराई है इस बीमारी को खत्म करना चाहिये । अरे मैने तो बेटवा का ब्याह लड़की से किया है दहेज से थोड़े ही किया हूं ।लोग थे कि रह–रहकर दहेज के नाम पर बड़ी रकम डंकार जाने का दोषी ठहरा ही देते । कुछ लोग तो सरेआम कहते अब तो कत्थु की चमड़ी मोटी हो गयी है धनासेठों की तरह । अरे भाई क्यो न होगा बड़े घर में बेटे का ब्याह जो हो गया है । कत्थु मोटा आसामी हो गया है दहेज की रकम से । किस –किस का मुंह पकड़ता चुपचाप सुन लेता और धीरे से बोलता काश लड़की भी पढ रही होती तो हमारे लिये बहुत बड़ा दहेज होता हमारे खानदान के लिये । अब तो इसी में सन्तोष करना है कि दुल्हन ही दहेज है भले ही लोग दहेज लेने का अपराधी कहे बड़े बाप की बेटी से दहेज रति ब्याह करने के जुर्म में ।

चन्द्र और काजल समय के साथ जवान हो गये । मीठुबाबू ने गौना देने की जल्दी मचा दी । चन्द्र बी.ए.का इम्तहान भी नही दे पाया था कि गौना आ गया । कंजूस मीठुबाबू ने गौने में कुछ रकम नही दिये । हां ढेर सारी मिठाईयां जरूर दिये जो पूरे गांव में खूब मिठाई बंटी थी । ब्याह से अधिक गौने का शोर मच गया कि कत्थु के बेटे के गौने में बहुत सारी रकम और सामान मिला है । दहेज की रकम से बड़ी़ मुश्किल से सवारी का भाड़ा पूरा हो पाया था । दुल्हन के बाप मीठुबाबू उपर से नाराज थे कि मेरी इकलौती बेटी के ब्याह में कार नही आयी । कत्थु तो मेहनत मजदूरी के भरोस परिवार पाल रहा था परन्तु उसका चन्द्र पढने लिखने मे होशियार था । मीठुबाबू बहुत दूर की सोचते थे ।चन्द्र से बेटी का ब्याह कर दो मकसद पूरे कर गंगा नहा लिये । एक बी.ए.पास दमाद मिल गया दूसरे दहेज भी नही देना पड़ा । पढे लिखे चन्द्र को नौकरी मिल जाने की पूरी गुजाईश थी । यदि मीठुबाबू धनी परिवार में चन्द्र जैसे लड़के से ब्याह करते तो दहेज में मोटी रकम भी देते और इज्जत में नही मिलती । मौके बेमौके लड़के वालों का मुंह खुला रहता । मीठुबाबू बेटी और बेटों के बीच मोटी दीवार खड़ी कर रखे थे जिससे बेटी को उड़ान भरने का मौका नही मिला निरक्षर रह गयी । वे बेटी की पढ़ाई लिखाई पर तनिक ध्यान नही दिये । पढा लिखा गरीब बाप का बेटा दमाद के रूप में जरूर खोज लिये । बड़ी शान से कहते देखो मैं अपनी फूल से लड़की को गरीब घर में देकर भी काफी खुश हूं ।

कत्थु भी काजल को बहू के रूप में पाकर बहुत खुश था । काजल भले ही पढी लिखी नही थी पर संस्कारवान और गुणवान लड़की थी । सास–ससुर का बहुत आदर करती थी । दूसरे कत्थु का समधी मीठुदादा पढा लिखा रूतबेदार ओहदार भी था । कत्थु कहता काजल के इस घर में आ जाने से मेरा परिवार भी सुधर जायेगा । पोते–पोती गोरे होगे,संस्कारवान गुणवान तो होगे ही बाप की तरह शिक्षित भी होगे

। काश समधीजी ने काजल का पढा लिखा दिया होता तो हमारे पोते–पोते बढिया तरीके से शिक्षित होते । कहते है ना एक पढी लिखी मां पूरी पीढी को शिक्षित कर सकती है । समधीजी यही बेटी बेटा के बीच भेद की दीवार खड़ी कर अन्याय कर दिये । ठीक है दहेज नही दिये । हमने मांगा भी नही ।वैसे भी दहेज दानव का नाश इस देश से जितना जल्दी हो जाये अच्छा है । समधीजी बेटी को चिट्ठी पत्री लिखने लायक पढा दिये होते तो कम से कम बहू चन्द्र को चिट्ठी लिख देती हमे पढकर सुना देती । दूसरों के सामने तो गिड़गिड़ाना नही पड़ता चिट्ठी लिखाने और पढाने के लिये।

चन्द्र का गौना मई के पहले सप्ताह में आ गया था और इम्तहान का नतीजा जुलाई महिने में । नतीजा सन्तोषजनक था । चन्द्र फरवरी माह में शहर नौकरी की तलाश में निकल पड़ा । कत्थु बहुत खुश था कि अब तक तो समधीजी छलवा करते रहे है । बेटवा शहर नौकरी की तलाश में जा रहा है तनिक सहारा बन जायेगे तो बेटवा भी कमाने खाने लगेगा । हमारे घर परिवार की स्थिति में सुधार आएगा । उनकी बीटिया को भी तो सुख मिलेगा । बेटवा की नौकरी के लिये तो समधीजी को मदद करनी चाहिये ।

कत्थु की सोच के विपरीत मीठुबाबू ने व्यवहार किया । नौकरी के लिये मदद तो दूर आश्रय तक देने में भी कोई मदद नही कर पाये ।चन्द्र अपने ससुरश्री से की मंशा को समझ गया । वह भी उनके सामने हाथ न फेलाने की दृढप्रतिज्ञा कर लिया । छोटी मोटी नौकरी किया । टीन के डिब्बे की फैक्टरी में खाली घी के डिब्बे धोने का काम किया । डिब्बा बनाने वाली मशीन को बैलों की तरह खींचा,तेजाब की फैक्टरी में काम किया । मण्डी में बोझ ढोने का काम किया पर मीठुबाबू ने दमाद की नौकरी के लिये तनिक भी प्रयास नही किये। अजनवी बने रहे । चन्द्र अपने ससुर के रूखे–व्यवहार से विचलित नही हुआ । शहर में फांका किया,फटे कपड़े पहना,पैसे –पैसे को नस्तवान रहा पर वह अपने ससुर मीठुबाबू के सामने हाथ फैलाया ।हां इज्जत पितातुल्य ही देता । गरीब लोग इज्जत करना जानते है यह संस्कार उसे अपने मां बाप से विरासत में मिला था । उसके मां बाप के पास तो धन देने को नही था पर आदर्शो,संस्कारो की मोटरी बहुत बड़ी थी । वे इसी में खुश रहना भी भलीभांति सीख गये थे ।चन्द्र जहां नौकरी के लिये जाता नौकरी उससे कोसो दूर भाग जाती । अन्ततः आठ साल बेरोजगारी का विषपान करने के बाद उसे नौकरी मिली। चन्द्र बच्चो के उज्जवल भविष्य के काजल और बच्चों को शहर में शिफ्ट कर लिया । मां बाप ,भाई–बहन भी शहर आने जाने लगे जो कभी शहर देखे भी नही थे। नौकरी करते चन्द्र को साल भर भी नही हुए थे कि मीठुबाबू के बड़े बेटे की बड़ी का ब्याह पड़ गया ।

काजल भतीजे के ब्याह में शामिल होने के लिये बढ–चढ़कर तैयारी करने में जुट गयी खैर चन्द्र भी कम न था । अपनी औकात के मुताविक भतीजी को गिफ्ट भी खरीद लिये ।घर परिवार के लिये कपड़े–लते भी खरीदे । गांव जाने एंव भतीजी के ब्याह में शामिल होने की तैयारी कर लिये । ब्याह से सप्ताह भर पहले रेल से गांव चल पड़े । तीन दिन की रेल यात्रा मे गिफट में दी जाने वाली सिलाई मशीन को छोड़कर सब कुछ चोरी चला गया । बड़ी मुश्किल से चन्द्र परिवार सहित अपने पैतृक गांव पहुंचा । रेल मे चोरी का समाचार सुनकर चन्द्र के घर में मातम पसर गया । बेटे के दिल पर चोरी का कुअसर न पड़े चन्द्र के मां बाप ने समझाया बुझाया,हौशला बढाया और ब्याह में शामिल होने के लिये रीन–कर्ज करके रकम का बन्दोबस्त भी किये । चन्द्र सपरिवार ब्याह में हंसी खुशी शामिल हुआ और ब्याह बिताकर अपने गांव वापस आ गये । अब चन्द्र के पास शहर वापस जाने के लिये किराये–भाड़े तक का इन्तजाम नही था । चन्द्र को परिवार सहित शहर वापस जाने के लिये पन्द्रह सौ रूपये तक का खर्च था । चन्द्र के मां बाप गांव के कई लोगो के सामने कर्ज के लिये हाथ फैला चुके थे पर कही नही तो कहीं बाद में आना सुनने को मिल रहा था । इसी बीच चन्द्र के ससुर मीठुबाबू बेटी नातिन–नातियों से मिलने आ धमके । उनके आव–भगत में दो चार सौ खर्च हो गये ।

मीठुबाबू काजल से पूछे तुम लोग शहर कब जा रहे हो ?

काजल–बाबूजी किराये का इन्तजाम नही हो पा रहा है । बूढी–बूढा कई जगह कर्ज के लिये गये पर सब ओर आजकल हो रहा है । इनकी छुट्टी भी खत्म हो गयी है । किराये का इन्तजाम न होने के कारण मेडिकल लिये है । देखो कब तक इंतजाम हो जाता है ।

मीठुबाबू कुछ नही बोले मौन धारण कर लिये । धीरे –धीरे शाम होने को आ गयी । वे अपने गांव वापस जाने के लियजिद करने लगे ।

कत्थु बोला–समधीजी सुबह चले जाना । घर पहुंचते पहुंचते रात हो जायेगी ।

मीठुबाबू–कहां पैदल हूं । इजाजत दीजिये ।

कत्थु–समधीजी एक अनुरोध है ।

मीठुबाबू–क्या .....?

कत्थु–चन्द्र का सब रेल में चोरी हो गया । नगद जो कुछ था वेा, बहू और नातिन के गहने गुरिये कुछ नही बचा सब चोर ले गये । बड़ी मुश्किल से तो घर पहुंचे थे । बच्चों की हालत देखकर मन बहुत रोया था । अब आप थोडी मदद कर दो ।

मीठुबाबू–कैसी मदद ?

कत्थु–पांच सौ रूपये का कर्ज । चन्द्र शहर पहुंचते ही वापस कर देगा ।

मीठुदादा–मौन साध गये और घर जाने के लिये उठ खड़े हो गये । मीठुबाबू बेटी दमाद की मुसीबत के वक्त में कर्ज के रूप में सिर्फ पांच सौ रूपये की मदद करने से मुंह मोड़ लिये । वही मीठुबाबू जो बेटों की छोटी–छोटी जरूरतों को पूरा करने के लिये रूपये का तनिक भी मोह नही करते थे । खैर चन्द्र के मांता पिता ने सूद पर रूप्या लेकर बेटा–बहू और पोते पातियों को शहर तो भेज दिया । चन्द्र शहर जाकर कर्ज चुकाने और मां बाप के खान खर्च के लिये रूपये का बन्दोबस्त कर मनिआर्डर भी कर दिया । काजल का जीवन अपने परिवार के साथ सुखमय बित रहा था । इसी बीच किसी के माध्यम से खबर काजल को लग गयी उसके कंजुस पिताजी उसके नाम से बहुत सारा रूपया जमा किये है । काजल तो लखपति हो जायेगी । इसीलिये मीठुबाबू काजल को दहेज में कुछ भी नही दिये पलंग,बिछौना और बोरे दो बोर गेहूं और ढेर सारी मिठाईयों के अलावा ।

खबर लगते ही काजल चन्द्र से बोली सुनो जी एक खबर लगी है ।

चन्द्र–कैसी खबर पांव भारी तो नही हो रहे ।

काजल–धत् तेरी कि इनको परिवार नियोजन की धुन ऐसी सवार है कि सोते–जागते उठते–बैठते बस एक ही बात ।नही ऐसी कोई बात नही है । हम दो हमारे तीनो पर भगवान की कृपा बनी रहे । हमारी तीनों सन्ताने पढ–लिखकर देश–दुनिया में नाम रोशन करें ।

चन्द्र–भूमिका बनाती रहोगी कि कुछ बताओगी भी बात क्या है ।

काजल–सभी लोग मेरे पिताजी को कहते रहते है कि वे बेटी–बेटा के बीच भेद की दीवार खड़ी किये हुए है ।

चन्द्र–सही तो है ।

काजल–मानती हूं मुझे स्कूल नही भेजे । उस जमाने में लडकियों को पढाने का चलन नही था नही पढाये। तुम तो पढे लिखे हो । मेरी पढाई की क्या जरूरत चूल्ह चौका के लिये । दस्तक करना तुमने सीखा ही दिया है । हम अपनी बीटिया को पढा रहे है सारी कसर पूरी कर लेगे बीटिया को पढा लिखाकर ताकि हमारे पिताजी को भी तो पता चले कि हमारी अनपढ बेटी की बेटी इतनी पढी लिखी है कि उनके खानदान में कोई इतना पढा लिखा नही है ।

चन्द्र–तुम्हारे बाप जैसे हम बाप कहलाना पसन्द नही करेगे । हमे तो कुछ नही चाहिये बस भगवान से यही मांगता हूं कि मेरे बेटी बेटा पढ लिखकर दुनिया में नाम रोशन कर दे हमारा हमारे खानदान का बस यही ख्वाहिश है । बाकी बात बाद में पहले खबर क्या थी ये तो बताओ नही तो पता चले कि खबर ही खो गयी । वह भी तुम्हारे मायके की ।

काजल–तुमको मजाक की हमेशा सूझती है ।अभी तक तो हमारे पिताजी को मजाक बना रहे थे अब मायके की खबर भी मजाक बनने लगी है । खबर क्या हैं जानना चाहोगे ।
चन्द्र–अवश्य देवीजी बताये ताकि हमारी कैद तकदीर संवर जाये ।
काजल–हमारी संवरे या तुम्हारी बात तो एक ही है ।
चन्द्र–क्या किसी खजाने की चाभी मिल गयी ।
काजल–मिली तो नही पर मिल जायेगी ।
चन्द्र–सचमुच तकदीर संवरने वाली है ।
काजल–हां .....
चन्द्र–कैसे.....?
काजल–हमारे पिताजी ने ढेर सारा रूपया हमारे नाम से जो जमा कर दिया है ।
चन्द्र–तुम्हारे नाम से किये तो पर अब नही है ।
काजल–चोरी हो गया ।
चन्द्र–हां ।
काजल–भला बैंक में जमा रूपया चोरी कैसे जा सकता है ।
चन्द्र–हो गया मेरा विश्वास करो ।
काजल–विश्वास नही होता ।
चन्द्र–विश्वास करो तुम्हारे पिताजी ने साजिश रचकर रूपये निकाल लिये ।
काजल–तुमको पता था ।
चन्द्र–हां.....
काजल–कहां,कब और कैसे ?
चन्द्र–ब्याह में तेरी भाभी इस बारे में किसी से बात कर रही थी कि ससुरजी ने बैंक मैनेजर के समाने उसे काजल बनाकर पेश किया । बैंक में ननद की फोटो तो लगी नही थी । सारा रूपया निकल गया । बैंक से सारा रूपया निकलते ही कुल दीपक को सौंप दिये। वो बात मेरे कान से टकरा गयी । आज सत्यापन भी हो गया ।
काजल दिल थामकर बैठते हुए बोली हे भगवान बाप ने बेटी के सपनों के बारात की परवाह नही कर बेटा–बेटी के बीच ऐसी दीवार बना दी जो आज तक नही टूटी ।

4–पोस्टमार्टम

भक्कूदादा की लाश पोस्टमार्टम के लिये जिला सरकारी अस्पताल के चीर घर भेज दी गयी है । यह बात भक्कूदादा के भतीजे नगेन्द्र के गले उतरी नही रही थी ।वह बार यही पूछ रहा था दादा मरे कैसे की उनकी लाश को पोस्टमार्टम के लिये भेजा गया है । कुछ दिन पहले तो वह उनसे मिलकर आया था । सड़क पर माटी फेंक

रहे थे । खेतीबारी का काम जब बन्द हो जाता था तब वे दूसरा काम कर लेते थे । मझले भाई की मदद के लिये । उनका खुद का परिवार तो उन्हे त्याग चुका था । भक्कूदादा,भिक्खू के परिवार के साथ पैतृक चोटीचौरा गांव से बीस कोस दूर उसकी सुसराल में रहकर सुसराल में नेवासा की प्राप्त जमीन और चार बीघा भाईयों के कमाई से खरीदी हुई जमीन फेजलपुर में खेतीबारी का काम करते थे । जमीन तो सभी भाईयों के नाम थी पर उपज का एक अन्न भी तीसरे भाई फत्तू को मझले भाई भिक्खू की घरवाली नही देने देती थी । अचानक भक्कूदादा की मौत का सुनकर नगेन्द्र घर–परिवार,गांव–पुर सभी बेचैन थे पर नगेन्द्र अत्यधिक परेशान था । बचपन में उसके आंख के सामने भिक्खू के हाथों भक्कूदादा की पिटाई का दृश्य उभर जाता था । इसी कारण उसका मन भक्कूदादा की मौत के कारण पर विश्वास नही हो रहा था । वह सोच सोचकर बेचैन हो रहा था उसके आंखे बरसती जा रही थी ।

भक्कूदादा बडे शरीफ ,साधु प्रकृति के इंसान थे और भय्यपन के लिये जान देने की बात पर पीछे हटने वाले भी नही थे । उनकी अचानक मौत ढेर सारे सवाल खड़े कर रही थी । भय्यपन में आकर मझले भाई भिक्खू के लिये अपनी झगड़ालू घरवाली तक का परित्याग कर दिया । वही भिक्खू स्वार्थबस भाईयों के नाम जमीन हड़पने की साजिश रचने लगा था जिस करणबस भक्कूदादा बेचैन से रहने लगे थे । शायद इसी साजिश ने भक्कुदादा की जान ले ली थी ।शंका–कुशंका के बादल नगेन्द्र के बाल–मन पर उमड़ रहे थे भक्कुदादा के मौत की खबर सुनकर ।

भक्कुदादा को छोटे भाई फत्तू के बेटे नग्रेन्द से बहुत मोह था । वह उसकी पढाई लिखाई में आ रही तंगी से वाकिब था पर कोई मदद नही कर पाता था भिक्खू की घरवाली के डर के मारे । छोटा भाई फत्तू गरीबी हालत में पैतृक गांव में भूमिहीन खेतिहर मजदूर था । भिक्खू शहर में अच्छी नौकरी कर रहा था । उनके खुद के परिवार में घरवाली उसकी बूढी मां एक बेटी और कहने को भक्कुदादा परिवार भी पर भक्कुदादा बदलते समय में एक नौकर से भी बदतर जीवन जी रहे थे । भक्कुदादा का पैतृक गांव बराबर आना जाना था । फत्तू और उसका परिवार भी जाकर मिल आता था । नगेन्द्र को भक्कुदादा से बहुत स्नेह था । वह महीने में दो तीन दिन के लिये जाता तो भक्कुदादा की भरपूर मदद करता । दस–पन्द्रह दिन तक के खाने के लिये पुआल का चारा हाथ वाली मशीन से काटकर आता । भक्कुदादा की मालिश भी कर देता । भक्कुदादा अपने सगे बेटे से अधिक प्यार भतीजा नगेन्द्र से करते थे नगेन्द्र भी उन्हे बाप जैसा ही मान –सम्मान देता था परन्तु दुर्भाग्यवस उनके बेटे बेटियां उन्हे बाप तक नही मानते थे ।

भक्कुदादा का सपना था कि नगेन्द्र पढलिखकर कोई बड़ा सरकारी अफसर बने । वे नगेन्द्र के भविष्य से काफी चिन्तित थे क्योंकि नगेन्द्र का भविष्य ही तो खेतिहर

मजदूर फत्तू का उद्धारक था ।भिक्कुदादा सड़क पर नहर पर या दूसरों के खेतों में मेहनत मजदूरी कर दस पांच रूपया मिक्खू की घरवाली से छिपा लेते थे जब नगेन्द्र जाता तो उसको देते कहते बेटा तू मन लगाकर पढाई कर तू अपने बाप को गरीबी के नरक से उबार सकता है । तेरा ताउ मिक्खू तो भाईयों का गला काटने पर उतारू हो रहा है । भाईयों के नाम की जमीन जिसके लिये फत्तू ने अपने गाय–भैंस और अपनी पत्नी के पुराने जेवर तक बेंच दिये । वही जमीन अब हाथ से खिसकती नजर आ रही है ।

उसी भक्कुदादा के सफेद कपड़े में लपेटकर चार–फाड़ के लिये सरकारी अस्पताल भेज दिया गया था थाना–पुलिस की कानूनी कार्रवाई पूरी कर । भक्कुदादा के मौत की खबर सुनकर चीटीचौरी गांव के लोग फेजलपुर गांव की ओर दौड़ पड़े । नगेन्द्र भी अपने बाप फत्तू के साथ चल पड़ा । वहां गांव वाले पहुंचे उससे पहले लाश पोस्टमार्टम के लिये जा चुकी थी । फेजलपुर से भक्कुदादा के सगे सम्बन्धियों सहित सभी गांव बडी मुश्किल से दोपहर ढलते वाले चीर घर पहुंचे । वहां भिक्खू के अलावा भक्कुदादा के चार–छः दोस्त हाजिर थे बस बाकी कोई नातहित न था नही भिक्खू के समधी और दमाद जो भक्कुदादा की मौत के किसी न किसी रूप से जिम्मेदार था ।

चीर घर के अहाते में कई लाशों के साथ भक्कुदादा की लाश इन्तजार कर रही थी ।लाशों के साथ आये लोगों की नजर चीर घर के दरवाजे पर लगी हुई थी कम दरवाजा खुले और उनके मृतक के नाम की पुकार पड़े । फत्तू और नगेन्द्र भक्कूदादा की लाश पर टकटकी लगाये हुए थे कि वे कब उठकर बैठ जाये । दोनों की आंखों से आंसूओ की झमाझम जारी थी । इसी बीच पोस्टमार्टम रूम का दरवाजा खुला भिक्खू दौड़कर सफेद कमीज पहने व्यक्ति के सामने हाजिर हुआ । कुछ उसके कान के पास बुदबुदाया और कुछ सौ–सौ के नोट उसके हाथ पर रख दिये । वह व्यक्ति मुट्ठी बन्द कर लिया । भिक्खू सफेद कमीजधारी के सामने हाथ जोड़कर बोला साहब भाई साहब गजेड़ी थे । दारू भी छक लेते थे ।

सफेदकमीजधारी–पोस्टमार्टम की रिर्पोट में सब साफ हो जायेगा ।

भिक्खू–साहब जल्दी करवा दीजिये । शाम होने का आ गयी है। क्रियाकर्म भी तो करना होगा । उसमें भी वक्त लगेगा ।

सफेदकमीजधारी–पहले के भी केस है । उनका भी तो करना है कि नही ।

भिक्खू–देख लीजिये साहब ।

सफेदकमीजधारी–देखते है कहते हुए अन्दर गया और फिर बाहर आ गया । भिक्खू से कुछ इशारे में कहा । फिर अन्दर चला गया ।

पोस्टमार्टम रूम से दूसरा आदमी निकला और भिक्खू कौन है कि आवाज लगाया । भिक्खू दौड़कर गया । तब वह आदमी बोला पोस्टमार्टम में डाक्टर साहब के असिस्टेण्ट या यो कहे तो जल्लाद साहब से मिल लो ।
भिक्खू–कहां मिलेगे ।
दूसरा आदमी–ठहरो आ रहे है । इतने में एक भारी भरकम आदमी आकर खड़ा हो गया । दूसरा आदमी व्यक्ति बोला यही असिस्टेण्ट साहब है । यही पोस्ट मार्टम करते है । साहब तो दस्तख्त कर देते है बस । इनको जितनी अच्छी भेट चढाओगे उतनी जल्दी पोस्टमार्टम ।
असिस्टेण्ट यानि जल्लाद– भिक्खू जल्दी करो । टेम नही है । देखो कितनी लाशे पड़ी है पोस्टमार्टम के लिये ।
भिक्खू–क्या करूं ? आप ही बताये ।
जल्लाद–एक अग्रेजी के बोतल का दाम और एक खजूर छाप लगेगी ।
भिक्खू ने जल्लाद की भी मुटठी गरम कर दी ।जल्लाद अन्द गया ठर्रे की बोतल का ढक्कन तोड़ा और गटागट पेट में उतार कर बोला भिक्खू भक्कू की लाश लाओ । तुमको बहुत देर हो रही है । सुबह से लाश लेकर बैठे हो पोस्टमार्टम के लिये । लाओ जल्दी से निपटा देता हूं ।
भिक्खू और चीर घर का एक कर्मचारी लाश को ले जाकर पोस्टमार्टम की बडी सी मेज पर पटक दिये । भिक्खू कुछ बुदबुदाया पर आवाज नही निकली। यह सब कार्रवाई नगेन्द्र अपनी आंखो से देख रहा था और कानो से सुन रहा था पर ना तो भिक्खू की नजर उसकी तरफ जा रही थी और ना ही सफेदकमीजधारी और ना ही दूसरे चीर घर के कर्मचारियों की सब अपना–अपना मतलब साधने में लगे हुए था भक्कूदादा की लाश पर सवार होकर ।
जल्लाद पूरी बोतल की दारू पेट में उतार कर छुरी को पत्थर पर रगड़कर धार दिया और फिर टूट पड़ा बकर कसाई की भांति भक्कूदादा की लाश का पोस्टमार्टम करने ।वह ढूढी के नीचे बड़ी सी छुरी घुसाया और फाड़ते हुए गर्दन तक ले गया । यह सारा दृश्य कांच रहित खिड़की से नगेन्द्र देख रहा था । जब जल्लाद पेट फाड़कर अंग निकालने लगा तो वह दृश्य नगेन्द्र से नही देखा गया वह दोनो हाथों से आंखे मूंदकर वही बैठ गया ।
लगभग आधे घण्टे के बाद पोस्टमार्टम रूम का दरवाजा खुला, पोस्टमार्टम रूम का सहायक फिर आवाज लगाया भक्कू के रिश्तेदार आ जाये । दरवाजे के पास खड़ा भिक्खू बोला साहब यही है ।
सहायक बरात मे आये हो क्या ? पोस्टमार्टम हो गया लाश ले जाओ । दाह संस्कार करो । फतू लाश को देखकर रो पड़ा भइया के लाश की हाल क्या हो गयी । यह

तो गठरी है । भिक्खू पोस्टमार्टम के बाद लाश की दशा ऐसी हो जाती है । चलो रोना बन्द करो । दाह संस्कार भी करना है । भक्कूदादा का मुंह परिवारजन भी नही देख पाये । भिक्खू ने वही टौंस नदी में दाह संस्कार करने की जिद पर अड़ गया । आखिरकार वही हुआ जो भिक्खू चाहता था । भयंकर बाढ का पानी चारो ओर भरा हुआ था । पानी के अलावा कुछ भी नही दिखाई दे रहा था । मुखाग्नि देने के लिये सूखी घास तक का बन्दोबस्त नही हो रहा था । सरपत के हरे पते को माचिस की तीली दिखाकर फतू मुखाग्नि दिया । मुखाग्नि देते ही उसकी आंखों के गंगाजल का सब्र टूट पड़ा और भक्कूदादा के मरे शरीर पर बरस पड़े । मुखाग्नि की क्रिया सम्पन्न हुई तो लाश के दाह संस्कार के लिये काफी दूर से चीटीचौरा गांव के लोग एक पत्थर उठाकर लाये और लाश के साथ उस पत्थर को बांध कर टौस नदी के तेज जलधारा में प्रवाहित कर दिये । दाह संस्कार की सारी प्रक्रियायें नगेन्द्र की आंखों के सामने सम्पन्न हुई थी। दाह संस्कार के बाद भिक्खू अपनी ससुराल फेजलपुर गांव के लोगों के साथ चल पड़ा । कुछ देर तक पानी के तेज प्रवाह को ताकते रहने के बाद फतू अपने पैतृक गांव के लोगों के साथ चल पड़ा ।

फतू ने बड़े भाई भक्कूदादा की तेरहवीं आदि कार्यक्रम छाती पर पत्थर रखकर पूरा किया । भाई के उपर लगे आत्महत्या के अपराधबोध से वह जीते जी मरा हुआ महसूस कर रहा था । कुछ महीनों के बाद सारी जमीन जायदाद भिक्खू ने अपने बेटी दमाद के नाम करवा लिया । फतू और भक्कूदादा को नवल्द घोषित करवाकर । इसके बाद भक्कूदादा की मौत का रहस्य धीरे धीरे खुलने लगा । असल में भक्कूदादा ने आत्महत्या नही की थी । उन्हे ढाठी देकर मारा गया था और पोस्टमार्टम ने हत्या को आत्महत्या बना दिया था । । भिक्खू पोस्टमार्टम की रिर्पोट को लहराते हुए कहता भक्कू ने आत्महत्या की है पर चीटीचौरा गांव के लोगों को कभी विश्वास नही हुआ। इस गैर कानूनी काम में और जिम्मेदार जनसेवा की कसम खाने वालें के साथ ग्राम प्रधान ने भी दोनो हाथों से रूपये बटोरे थे । भक्कूदादा को ढाठी देकर मारने की अलिखित खबर ने चीटीचौरा गांव के लोगो को दहला दिया । सभी की जबान पर बस एक ही बात–भला भाई ने भाई की जान ले ली जमीन हड़पने के लिये । फतू ने कानूनी कार्रवाई भी किया पर कहते है ना रूपये की मां पहाड़ चढती है। गरीब फतू चक्रव्यूह नही तोड़ पाया । भिक्खू के गुण्डे फतू को मारने के फेर में फिरने लगे । रोज–रोज धमकियां आने लगी कि फतू तेरा भी हश्र भक्कूदादा जैसा होगा । पोस्टमार्टम की रिर्पोट,कानूनी अड़चनें आर्थिक तंगी और भाई की दगाबाजी ने फत्तू को चारो खाने चित कर दिया और सपनों की बारात को भी ।

5–उधार

शाम के छः बजने वाले थे । दफतर के सभी लोग अपने–अपने घरों को जाने की जल्दी में थे । आकाश में अंवारा बादल छा रहे थे ।ऐसा लग रहा था कि जल्दी आंधी भी जायेगी मिस्टर राम साहब को भी घर जाने की जल्दी थी इसी बीच बेगाना एक व्यक्ति आया । वह राम साहब की ओर हाथ बढाते हुए बोला हेला राम साहब कैसे है मैं बेगाना आबजर्वर में काम करता हूं।
मिस्टर राम– मैंने आपको पहचाना नही ख्नाम आपका क्या हैं । कैसे आना हुआ। ।
मि. ठगावतार हूं ।
मि.राम–मौसम भयावह रूप अख्तियार कर रहा है । ऐसे खराब मौसम आप किसी खास वजह से आये है क्या ?
मि.ठगावतार–जी । जीवन मरण का सवाल है ।
मि.राम–क्या ?
मि.ठगावतार–हां । खून की सख्त जरूरत है । पैथालांजी आया था रूपये कम पड़ गये । पैथालोजी वाले ने मना कर दिया ।बगल में तो है पैथालोजी,आपका ख्याल आया और मैं सीधे आपके पास आ गया । मेरी मदद कर दीजिये ।
मिस्टर राम–मदद के लिये मेरे पास आये है तो बोलिये क्या मदद कर सकता हूं ।
मि.ठगावतार–कुछ रूपये की ।
मिस्टर राम– कितने रूपये की दरकार है ।
मि.ठगावतार–ज्यादा तकलीफ नही दूंगा बस पचहत्तर में काम चल जायेगा ।
मि.राम–लीजिये सौ रूपये और चलिये मैं छोड़ देता हूं ।
मि.ठगावतार–बस साहब इतना एहसान मत करिये कि मैं बोझ नही उठा सकूं ।
मि.राम–एहसान की कोई बात नही आदमी आदमी के काम नही आयेगा तो कौन आयेगा ।
मि.ठगावतार–रहने दीजिये साहब मौसम भी अब ठीक हो गया मैं गली में से शार्ट कट रास्ते से पहुंच जाउंगा । पैथालोजी में साथ आया दसरा व्यक्ति बैठा है । मैं चला जाउंगा । वह जल्दी जल्दी पैर बढाना शुरू कर दिया ।
मि.ठगावतार के जाते ही उधम ने पूछा कौन था रूपये क्यो दिये ?
मि.राम–ठगावता था । बेगाना आबर्जवर से ।
मि.उधम–पहचानते हो ?
मि.राम– नहीं ।
मि.उधम– रूपये क्यो दिये ?
मि.राम–इंसानियत के नाते।मेरे तनिक से रूपये किसी का भला हो जाये तो क्या हर्ज है ।
मि.उधम–झूठ बोलकर रूपये ले गया है और लोगों को भी चूना लगाया होगा ।

मि.राम–उसने झूठ बोला है तो वह जाने पर हमने तो सच्चाई समझकर उसकी मदद की है ।
मि.उधम–ठग लोग नकली आंसू बहाकर रूपये ऐठने को पेशा बना लिये है । तुम्हारा ठगावतार में भी मुझे तो ऐसे लग रहा था । ना जाने उसके उपर मुझे विश्वास क्यो नही हो रहा है कि वह सचमुच खून लेने आया था या ठगने ।
मि.राम–बेगाना आबर्जवर में काम करता है । झूठ तो नही बोल सकता । उधार ले गया है ना । वह भी मांग कर । बेचारा मुसीबत में है । मदद हो जायेगी पचहत्तर रूप्ये से तो क्या बुराई है । नेकी का काम तो हमने किया है ।
मि.उधम–बेगाना आबर्जवर के दफतर में कभी उससे मिले हो ।
मि.राम–नहीं तो ।
मि.उधम– फिर इतने यकीन के साथ कैसे कह रहे हो कि वह ठग नही था ।
मि.राम–उसके याचना को देखकर तो कोई भी आदमी कह सकता था।
मि.उधम–जो दिखता है वह होता नही होता है वह दिखता नही । तुम्हारे पचहत्तर रूपये तो गये । देने से पहले बेगाना आबर्जवर के दफतर में फोन लगा लेता । दूध का दूध पानी का पानी हो जाता ।
मि.राम–तुम भी तो यह कर सकते थे । खैर छोड़ो पचहत्तर रूपये न वह राजा हो जायेगा और न मैं रंक ।
मि.उधम–बात राजा रंक की नही है । इस तरह से ठगी का कारोबार बढेगा । कल वह किसी दूसरे के पास जाकर तुम्हारा नाम लेकर रूपये उगाह सकता है । वह झूठा तो था । मैं रूपये नही देने देता मुझे पता होता कि तुम उसको नही जानते हो । हो सकता है वह अब किसी दूसरे दफतर में पहुंच गया हो खून लेने का बहाना लेकर ठग ।
मि.राम–चिन्ता ना करो रास्ते में बेगाना आबर्जवर का दफतर है किसी दिन जाकर पता लगा लेगे कि सच्चाई क्या है ?
मि.उधम–तुम्हारे खिस्से से चले गये पचहत्तर रूपये ।
मि.राम–हां । ले तो गया ।
मि.उधम–राम साहब ठगों से सावधान रहा करो ।
मि.राम–किसी का दर्द नही देखा जाता । जहां तक हो सकता है मदद कर देता हूं ।
मि.उधम–ठग तो नाजायज फायदा उठा लेते है । दान –धर्म से बचो । अपने घर–परिवार का ध्यान रखा करो ।
मि.राम–नसीहता याद रखूंगा । चलो घर चले काफी देर हो गयी । मि.राम और उधम अपने –अपने घर चल पड़े । दफतर में ताला लटकाते हुए रहीस चपरासी बोला क्या

साहब घण्टे भर का टेम खोटा कर दिये । ना जाने किस बतकुचन में लगे रहे ।सब लोग चले गये आप लोग बैठे रहे । आप लोगो की वजह से मैं लेट हो गया ।
मि.राम–दफतर बन्द करने का समय तो अब हुआ है ।
रहीस–अब बतकुचन बन्द करो । रास्ता नापो मुझे भी जाने दो ।
मि.राम–ठीक है । तुमको जरूरी है पहले तुम नापो ।
मि.उधम–बाप रे चपरासी है या कोई तोप ।
मि.राम–तोप ही है । जब सिर पर बड़ा हाथ होता है तो गीदड़ भी शेर बन जाता है । वही हाल इस चपरासी की भी है ।चलो हम भी रास्ता नापलेते है ।
मि.उधम–चलो मि.राम हां एक बात याद रखना ।
मि.राम–कौन सी बाता ?
मि.उधम–आंख मूंद कर हर किसी पर यकीन मत किया करो ।
मि.राम–तुम्हारी सलाह पर अमल् करने की कोशिश करूंगा ।
महीने भर बाद मि.उधम पूछे – क्यों राम साहब आपका मित्र वापस लौटा क्या ?
मि.राम–किस मित्र की बात कर रहे है ।
मि.उधम–अरे वही जो सौ रूपये लेकर गया था खून लेने के नाम पर ।
मि.राम–दे जायेगा । बेचारे का बेटा हास्पिटलाइज्ड था । लेने दे हो गया होगा । सौ रूपये की तो बात है जब उसकी मर्जी होगी दे जायेगा । उसके बच्चे की तबियत ठीक हो गयी हो । मेरी तो यही दुआ है ।
मि.उधम–ठीक है एक दिन बेगाना आबर्जवर के दफतर जाकर पता तो लगाओ । पिछले साले भी तो तुम्हारा खण्डित दोस्त भी तो तुमसे हजार रूपया ठग लिया था मकान की किस्त चुकाने के लिये वह भी आज तक नही दिया ना । वह भी तो उधार ही ले गया था । बेगाना के दफतर जाकर पता तो लगाओ सच्चाई क्या है ?
मि.राम–ठीक है आज शाम घर जाते समय चला जाउूंगा कह रहे हो तो । वैसे तगादा करने का मेरा कोई इरादा नही है ।
मि.उधम– ठीक है कर्णमहाराज तगादा मत करना । बच्चे का हालचाल पूछ लेना ।
मि.राम–चला जाउूंगा ।
मि.राम दफतर से घर जाते समय मि.ठगावातार से मिलने अखबार के दफतर पहुंचा । चहां रिसपेशन पर नाम पूछा तो पता चला कि इस नाम का कोई आदमी काम नही करता इस अखबार के दफतर में ।यह सुनकर मि.राम को असलियत का पता तो चल गया पर वह ठगावतार के हुलिये के आधार उसकी तहकीकात करने लगा ।
रिसपेशन पर बैठी मैडम खिसिया कर बोली–सर यहां पर इस नाम का और इस हुलिये का कोई आदमी काम नही करता ।

मि.राम–बहनजी उसका बेटा बहुत बीमार था । हास्पिटलाइज्ड था । खून लेने गया था । पैसे कम पड़ गये थे । मेरे दफतर में महीने भर पहले आया था ।
मैडम–आपसे रूपया लेकर गया ।
मि.राम–हां ।
मैडम–सर इस दफतर में काम करने वाले किसी भी कर्मचारी का पिछले कई महीनों से कोई भी बच्चा हास्पिटलाज्ड नही हुआ है । आप खून के जरूरत की बात कर रहे है । मैं तो कह रही हूं ओ.आर.एस. की जरूरत नही पड़ी है ।
मि.राम–सांरी बहन जी ।
मैंडम–नाट मेन्शन प्लीज। लेकिन वह आदमी मेरे अखबार का नाम लेकर आपसे रूपये क्यो ऐठे । कही आपको पहचानता तो नही था और आप उसको नही पहचानते हो ।
मि.राम–ऐसा ही समझिये ।
मैडम–मतलब मैं भी अब आपको पहचान चुकी हूं ।
मि.राम–वो कैसे ?
मैडम–रचना के साथ फोटो भी तो पिछले अंक में छपी थी ।
मि.राम–सम्भवतः कहते हुए दफतर से बाहर निकल गया ।कई महीनों के बाद ठगावतार मालवा मिल के भीड़भरे बाजार में दिखाई पड़ गया । मि.राम स्कूटर दीवाल के सहारे टिकाकर मि.ठगावतार की ओर लपका । मि.ठगावतार मि.राम को नही देख पाया था । वह किसी से बाते कर रहा था । मि.राम एकाएक एसके सामने खड़ा हो गया । मि.राम को देखकर वह भौचक्का रह गया ।
मि.राम पूछा–क्यों भाई ठगावतार जी कैसे हो ?
मि.ठगावतार ठीक हूं ।
मि.राम–बच्चे की तबियत कैसी है ।
मि.ठगावतार–कौन बच्चा ?
मि.राम–जिसके लिये खून लेने गये थे ।
मि.ठगावतार–अच्छा वो तो मर गया, कहते हुए वह चकमा देकर भीड़ में खो गया वैसे ही जैसे पुलिस किसी चोर के पीछे पड़ी हो और चोर पकड में ना आये । मि.राम के सामने ठगावतार की असलियत जाहिर हो चुकी थी । वह माथा ठोक तो लिया पर परहित की राह पर सदा कदम फूंक–फूंक कर रखता रहा सपनों की बारात की का जनाजा न निकल जाये ।

6–येस सर

कामू–क्या बात है बडे बाबू माथे पर हाथ । अभी तो दिन की शुरूआत है । साहब ने फटकार पड़ गयी क्या ?
बड़ेबाबू–कोई काम है तो बोलो । क्यों भूमिका बना रहे हो । दूसरों की बाते क्यों कान लगाकर सुनते हो । अच्छी आदत नही है ।
कामू–बड़े बाबू दीवारों को भी कान होते है । आपने तो सुना ही होगा । दिल के जख्म को सहलाते हुए भी आप वफादरी पर खरे उतर रहे हो । बांस है कि आपको दोयम दर्जे के आदमी के अलावा और कुछ समझते ही नही। बड़े बाबू इतने पढे लिखे होकर भी दोयम दर्जे के आदमी माने जाते हो । आपके दिल पर क्या गुजरती होगी समझदार आदमी अनुभव कर सकता है । आपके दिल पर कितने गहरे–गहरे घाव है सब जानते है । हम से भी कुछ छिपा नही है ।
बड़ेबाबू–बांस तो बांस है । घर के मुखिया की तरह बांस होते है । हमें उनका सम्मान करना चाहिये ।
कामू–साहब ईमानदारी बरते सभी के साथ समानता का व्यवहार रखे तब ना ।
बड़े बाबू–कामू हमें तो अपना फर्ज पूरा करना है कुर्सी को सलाम करना है ।
कामू–साहब है कि आपको दोयम दर्जे का आदमी समझते हैआप हो कि पूंछ हिलाते रहते हो ।
बड़ेबाबू–कामू पूंछ हिलाने ऐसी कोई बात नही है । बात है नैतिक दायित्व समझकर व्यवहार करने की । हम नौकरी करने आये है । किसी से व्यक्तिगत् लड़ाई तो नही ना ।
कामू– बड़ेबाबू आदमी के सिध्दान्त भी कुछ होते है नैतिक दायित्व के साथ ।
बड़ेबाबू–तुम्हारी बात समझता हूं पर दूसरा अवहेलना कर रहा है तो कम से कम हम तो मानवीय सिद्धान्त और नैतिक दायित्व पर खरे उतरे ।
कामू– बड़ेबाबू यहां हर आदमी के लिये अलग–अलग डण्डे है । आदमी को देखकर व्यवहार होता है । इस संस्था में सामन्तवाद की जड़े अभी बहुत गहराई तक है । बड़े बाबू भले बन गये हो अपनी शिक्षा की वजह से पर रूतबा तो नही बढा है ,हो तो दोयम दर्जे के आदमी । आपको तो बड़ा साहब होना चाहिये था पर मामूली सी कलर्क की नौकरी कर रहे हो डांट–डपट सुनकर । यहां तो जिसकी लाठी उसकी भैंस वाली कहावत चरितार्थ है उपर से नीचे तक । आप जैसे लोग कितने पढे लिखे क्यो न हो पर उपर नही पहुंच पायेगे वही दूसरी ओर सामन्तवाद के पोषक दिन दूनी रात चौगुनी तरक्की कर रहे है । न्यूनतम् शैक्षणिक येाग्यता वाले ऊचे–ऊचें ओहदे पर बैठे हुए है । आप जैसे दोयम दर्जे के अधिक पढे–लिखे विषय विशेषज्ञ लोग भी बाबूगीरी कर रहे है या धक्के खा रहे है । खैर कर भी क्या कर सकते है ? सुनने वाला भी कोई नही है । यहां तो पांत–पांत पर काग बैठे हुए है, सम्भावना बनी नही

मौंका ले उड़े। आप जैसे लोग खुद के सपनों का जनाजा खुद के कंधों पर ढो रहे है आंखों में आंसू लिये ।
बड़ेबाबू–व्यवस्था में दोष है । समय के साथ बदलाव आयेगा ।
कामू–लोकतन्त्र की बयार में सामन्तवाद का बवण्डर खतरा है सदियों से शोषितों के लिये । यही कारण है कि आप जैसे लोग तरक्की से दूर पड़े हुए राह ताक रहे है । हमारे बांस भी सामन्तवाद के ही पक्षधर है। छोटे लोगों पर गुर्राते और गरियाते है,बड़ो की पीठ थपथपाते है । यहां तो भारतीय व्यवस्था वाली योग्यता में श्रेष्ठ है तो सारी तरक्की के रास्ते खुले हुए है यदि ऐसा नही है तो नाक रंगड़ते रहे जाओ तरक्की कोसो दूर भागती रहेगी । बांस भी आगे–आगे चलते है आप जैसों के दमन के लिये ।
बड़ेबाबू–बांस ही दोषी नही है ।
कामू–बांस आपकी एक भी अर्जी आगे बढाये क्या ? नही ना पर अपना मकसद पूरा करने के लिये साम,दाम,दण्ड और भेद सभी अस्त्र–शस्त्र को उपयोग कर रहे है । क्या नीचे वाले की पीड़ा उन्हे सुनाई,दिखाई नही देती ? क्या अंधे बहरे हो गये है ? ऐसा भी नही सब सुन–देख रहे है । वे चाहते ही नही कि आप तरक्की करो ।
बडे बाबू–मन में भेद का भूत बैठा हुआ है निकलने में वक्त लगेगा । खैर हमें तो अपना मन साफ रखना चाहिये । संस्था के हित में काम करना चाहिये ।
कामू–वही कर रहे हो पर क्या भूल पाओगे एस.पी.आर.साहब का किया गया खुलेआम शोषण, देर रात तक पर आमसभा के चुनाव का पूरा काम छाती पर बैठकर करवाये और कामचोरी का इल्जाम भी लगाये । आपका कितना शोषण किया । आप भूले तो हो नही होगे । हां भूलने का ड्रामा जरूर करते हो । हर काम के लिये आपकों बंधुआ मजदूर की तरह तलब कर लिया जाता है और फायदा चममचे लूट लेते है । क्या आप भूल गये मुख्यालय के जारी परिपत्र के बाद भी प्रोत्साहन राशि सालों तक नही दी गयी । बड़े बाबू हर जख्म हंस कर कैसे झेल लेते हो तनिक विद्रोह तक नहीं करते । आज तक मैं तो नही समझ पाया ।
बड़ेबाबू–ईमानदारी के साथ काम करने पर भी दण्ड मिलता है दुख तो हेाता ही है कामू पर किस –किस की शिकायत करें । यहां तो पूरे कुएं में भांग घुली हुई है । तुम जानते ही हो मैं दोयम दर्जे का आदमी हो गया हूं । मेरी कौन सुनेगा । हां बस एक तरीका है नौकरी से तौबा कर लू,यहां तथाकथित उचे लोग भी यही चाहते है पर परिवार का पालन कैसे करूंगा । तुमको पता ही है यहां छोटे आदमी की कौन सुनता है ।

कामू–कठिन तपस्या कर रहे हो बड़े बाबू घर–परिवार के लिये । यह तपस्या बेकार नही जायेगी । नौकरी छोड़ने की बात मन में नही लाना । मुझे मालूम है एस.पी.आर. साहब के आतंक से डर कर आप जेब में त्याग पत्र लेकर आते थे ।
बड़ेबाबू–कामू वो मेरी नौकरी के जीवन का दुखद दिन था ।
कामू–हां बुरे वक्त में धीरज बनाये रखे । बहुत बड़ी बात है । आज वही लोग शरमाते है अपने किये पर । बड़े बाबू लोगो के नजरिये में परिवर्तन नही हुआ आज तक । यदि हुआ होता तो आप बड़े बाबू नही बड़े अधिकारी होते ।
बड़ेबाबू– जो मैं कर सकता था किया पर मेरी तरक्की उपर वालो का पसन्द नही तो क्या कर सकता हूं ।मेरे लिये तो अब इस कम्पनी में तरक्की के सारे रास्ते बन्द हो चुके है ।
कामू–हां बड़े बाबू यह आपके भविष्य की ही हत्या नही उंची योग्यता की हत्या है। कहने का जमाना बदल गया है पर यहां अभी वही सामन्तवादी परम्परा जारी है।
बड़ेबाबू–मैं अपना धर्म ईमानदारी से निभा रहा हूं और यह मेरा फर्ज भी है । सामाजिक योग्यता के दम पर भले ही लोग मुझे अवन्नति के दलदल में ढकेलते रहे हो इस कम्पनी में पर मैं अपने धर्म और फर्ज से मुंह नही मोडूगा । भले ही बांस या कोई और हमारे लिये कुआ खोदता रहे । कामू सत्य कभी पराजित नही होता । मैं भी इन पत्थर दिलो पर सद्भावना की इबारत लिखने में कामयाब होउंगा ।
कामू–बड़े बाबू सामाजिक कुव्यवस्था के मौन और घातक प्रदर्शन तो हो रहा है । यह तो सत्य है । इसी आग की बलि आपका कैरियर चढ गया है इस कम्पनी में । कहने को तो जमाना बदल रहा है । दुनिया छोटी हो गयी है । इस दूरसंचार और भूमण्डलीयकरण के युग में पर भारतीय सामाजिक व्यवस्था की दरारे आज भी संवरी हुई है जिसकी वजह से वंचित समाज आज भी पिछड़ा हुआ है क्योंकि भारतीय व्यवस्था और सामन्तवाद दोनें एक दूसरे के पूरक है और ये दोनो ही शोषित समाज के लिये घातक है जिसकी लपट में शोषित समाज का वर्तमान और भविष्य दोनो सुलग रहा है ।
बड़े बाबू– भारतीय समाज में बदलाव जरूर आयेगा। मन में सांप की तरह लोट रही नफरत की जगह समानता और सद्भावना का बीजारोपण जरूर होगा ।
कामू– भारतीय समाज यदि महात्मा गांधी, डां.अम्बेडकर और लोहियाजी के दर्शन को आत्मसात् कर ले तो देश में समानता और सम्पन्न्ता की कभी न रूकने वाली बयार चल पडेगी । दुर्भाग्यबस यहां तो आम आदमी को बेवकूफ बनाकर बस अपना मतलब पूरा किया जा रहा है। इसी मानसिकता के कुछ बांस भी हो गये है । बात तो कुछ और करते है पर अपना मतलब अपहले साधते है उन्हे भी न तो संस्था और नही

समाज के हित से कोई मतलब होता है ।नीचे वाला की आंखों में आसू उन्हे सकून देता है । बड़े बाबू यह तो जान गये होगे ।
बड़ेबाबू–उची कुर्सी पर बैठकर छोटो को आंसू देना सरासर अन्याय है ।
कामू–न्याय है या अन्याय मतलब की दौड़ में कोई नही देख रहा है । आगे कैसे निकले जोड़तोड़ में लगा हुआ है । चाहे किसी का भविष्य चौपट हो कोई फर्क नही पड़ता लोग अभिमान में सब कुछ कर रहे है । कुछ लोग तो अपने भले के लिये दूसरी की छाती पर लात रखकर उपर पहुंच जा रहे है । कुछ तो लाशों पर चढकर अपना मतलब पूरा कर ले रहे है । इंसानियत के नाते इंसान का ऐसा उदेश्य तो नही होना चाहिये पर लोग है कि मानते नही । अपने को उपर उठाये रखने के लिये छलबल और भेदभाव को औजार बना रहे है । हमारी कम्पनी में सामन्तवाद उसी का विषबीज की लहलहाती फसल है जिसकी आग में आप जैसे आदमी का भविष्य तबाह हो रहा है ।
बड़ेबाबू–हमे तो अपने फर्ज के साथ न्याय करना है । जब तक नौकरी चल रही है परी ईमानदारी बरतूंगा । आगे बढने के रास्ते तो वैसे ही बन्द हो गये है एक दिन नौकरी भी चली जायेगी । मैं पूरे होश में पत्थर पर दूब उगाने की कोशिश करता रहूंगा । हार कर भी जीतने के लिये प्रयास करता रहूंगा। अब यही मेरे जीवन का उदेश्य हो गया है कामू ।
कामू–बडे बाबू गरीबो का हक हड़पने वाले,आंसूओ पर हंसने वालों की चमड़ी गेंडे की तरह होती है। ऐसे लोग नही पसीजते । यदि पसीजते है तो वह मात्र दिखावा होता है अपना मतलब साधने के लिये । बाबू ये लोग चाहते है इनके आगे पीछे येस सर,येस सर करते रहो और अभिमानियों की फटकार सुनते रहो ।
बडेबाबू–कामू कुर्सी का सम्मान करना है ।
कामू–कुर्सी पर चाहे अपात्र ही क्यो न बैठा हो ।
बड़ेबाबू–पात्र है या अपात्र हमें इस मुद्दे पर राय प्रगट करने का अधिकार नही है । कुर्सी पर प्रबन्धन ने बिठाता है काबिलियत देखकर ही बैठाता होगा । हमें तो बस काम करने के लिये है। कुर्सी पर बैठे आदमी के इशारे पर नाचने के लिये है ।
कामू–सच नौकरी तो मजबूरी है । काले अंग्रेजो की निरंकुशता हिटलरशाही है जो नीचे वालों के दमन पर उतारू रहते है । अपनों की पहचान कर उपर उठाने का जरिया भी ।
बड़ेबाबू– नौकरी में ना के लिये कोई गुंजाइस नही होती है । आदमी में कितनी योग्यतायें क्यो न हो, पर वह जिस ओहदे पर काम करता है उससे कम उसकी औकात अधिकारी की निगाह में होती है । कुछ तो गुलाम समझते है ।

कामू–ठीक कह रहे है जो कुछ आपके साथ हो रहा है इससे तो साबित हो गया है कि आपको दबा कर ही रखा गया है । वर्तमान में जो साहब है वही कौन अच्छा सलूक आपके साथ कर रहे है । ऐसे बुलाते है जैसे उनके घरेलू नौकर हो । जानता हूं साहब का व्यवहार तनिक भी आपको अच्छा नही लगता है पर मजबूरीबस येस सर कहना पड़ता है । हुक्म का पालन करना पड़ता है आधुनिक युग के दफतर में बंधुवा मजदूर की तरह ।सच नौकरी मजबूरी का नाम है खास कर छोटे लोगो के मामले में ।

बड़ेबाबू–बांस इज आलवेज राईट वाली कहावत यहां अक्षरशः चरितार्थ है।

काम– बांस इज नांट आलवेज राईट इस बात के प्रत्यक्ष प्रमाण है अपने बांस अपनों वालो की भरपूर मदद करते है,चाहे जब आये चाहे जब जाये या अपने हित में कोई भी काम करे भले ही इससे संस्था को नुकसान हो पर दूसरों पर नजर टिकाये रहते है । अरे यह भी कोई अफसरगीरी है । सच्चा अफसर तो घर के मुखिया के बराबर होता है जो हर आदमी के दुख सुख का ख्याल रखता है । हां काम भी करवाना अफसर को आना चाहिये क्योंकि काम के बदले ही तो तनख्वाह मिलती है। रूआब छाड़ना तो हिटलरशाही है अपनों को उपर उठाना गैरों को नीचे ढकेलना भेदभाव है पक्षपात है। भेद की आग में तो आपका कैरियर चौपट हुआ है इस संस्था में । योग्य व्यक्ति के साथ भेदभाव हत्या के समान है।

बड़ेबाबू–ये सब कहने की बाते हैं । मानता कौन है । जिसकी पहुंच है या भारतीय व्यवस्था वाली श्रेष्ठता है वही सिकन्दर बन जाता है । हमारे जैसे लोग कराहते भी है तो मुंह बन्द करने की सलाह दी जाती है ताकि दीवार को भनक न पड़ जाये । यहां तो योग्यताओं को ताक पर रखकर पहुंच वाले व्यक्ति को आगे बढाया जा रहा है भले ही शैक्षणिक योग्यता की कमी क्यों न हो। यही कारण है कि हम जैसेां को सिसकते हुए भी येस सर कहना पड़ रहा है । ऐसा न करे तो बेचारा नीचे वाला कहां टिक पायेगा । मजबूरी है नौकरी करनी है । भारतीय व्यवस्था जातिवाद के कुपोषण की शिकार है जिससे कमजोर वर्ग के हितों को अनदेखा किया जा रहा है। सक्षम वर्ग अठखेलियां कर रहा है कमजोर के हितों पर कब्जा जमाकर ।

कामू–क्या यहां योग्यता हारती रहेगी सामाजिक श्रेष्ठता के आगे ।

बड़ेबाबू–अभी तक तो ऐसा ही हो रहा है तभी ना, ना योग्यता श्रेष्ठ है और नही आदमियत जातीय दम्भ के आगे ।

कामू–ठीक कह रहे बड़े बाबू तभी आजादी का सपना मर रहा है । आम आदमी से आज भी आजादी कोसो दूर है ।

बड़ेबाबू–भले ही सपने मर रहे है पर सम्भावनाये नही मर सकती ।

कामू–बहुत बड़े थिंकर हो बड़े बाबू पर इस कम्पनी में विपत्ति ढो रहे है येस सर येस सर कहते हुए ।
बड़ेबाबू–यही कैद तकदीर की दास्तान है। इस दास्तान को बदलने का भरपूर प्रयास है देखो कहां तक सफल हो पाता हूं ।
कामू–बड़े बाबू जब तक सामनतवाद की जड़े हिलेगी नही तब तक आमआदमी का उद्धार तो नही हो सकता । भले ही तरक्की की ढोल मुसर से पीटा जाये पर आमआदमी पुरानी भारतीय व्यवस्था में घूटन महसूस करता रहेगा । लायक नालायक और नालायक लायक साबित होते रहेगे छल,बल से।
बड़ेबाबू–कामू हम देश समाज और आदमियत के प्रति फर्ज पूरा कर खुद अपनी पीठ थपथपा तो सकते है ।
कामू–यह तो कर ही सकते है पर जो दबे कुचले लोगो की उभरती योग्यताओ,प्रतिभाओं का बिखण्डित समाज में दहन हो रहा है उसका क्या ? देश मे स्वधर्मी जातीय समानता की जरूरत है,इसी से देश और समाज स्वस्थ हो सकता है । बड़े बाबू जाते–जाते एक बात बता दूं जो बांस मन–भेद रखते है,योग्यताओं का दहन करते है वो बांस कभी राइट नही हो सकते,भले आगे पीछे येस सर की रट लगाये रहे । हक के लिये लड़ना होगा बड़े बाबू येस सर येस सर से हक नही मिल सकता यहां । कब तक अपने सपनो की बारात का जनाजा निकलते हुए देखते रहोगे ?

7–मुखाग्नि

मुखाग्नि देते ही सत्येन्द्रबाबू को चक्कर खाकर गिर पड़े आने लगा । पत्नी का शव धूं–धूं कर जल रहा था । वे पसीने में तर–बतर चिता के पास बेसुध पड़े थे । उनके बूढे भाई कत्येन्द्र गोमती नदी के पानी छींटा मार मार कर होश में लाने की कोशिश कर रहे थे और बिलखते हुए कह रहे थे भगवान तुमने ये क्या कर दिया घर की लक्ष्मी को उठा लिया । अरे मरने की उम्र तो मेरी थी पर तुमने मुझे नही उठाया । कत्येन्द्र के आखों से बह रहा बाढ का पानी सत्येन्द्र के चेहरे पर तर–तर छू रहा था । बड़े भाई का विलाप सुनकर सत्येन्द्रबाबू उठ बैठे और कत्येन्द्र को छाती से लगाकर विलाप करने लगे । यह दृश्य देखकर गोमती के श्मशान घाट पर खड़े जन समूह की पलके गीली हो गयी ।
बूढे कत्येन्द्र अपने आंसू पीते हुए सत्येन्द्र के आंसू पोछने लगे और उपस्थित लोग भी समझाने–बुझाने लगे पर सत्येन्द्र बाबू की आंख के बाढ का पानी थमने का नाम ही नही ले रहा था । लोगो सत्येन्द्रबाबू को इस बाढ में बह जाने की शंका सताने लगी । सत्येन्द्र बाबू ने कैसर से पीड़ित पत्नी इज्जतदेवी के इलाज के लिये पैसे का मुंह

नही ताका था ।इज्जतदेवी परिवार के भले के लिये अपने जीवन का सुख त्याग दिया था । सत्येन्द शहर में नौकरी करते थे । इज्ज्तदेवी गांव में रहकर बूढी सास,जेठ ,अपने बच्चों और जेठ कत्येन्द्र के बच्चों की परवरिश करती रही । इज्जतदेवी परिवार की इज्जत के लिये परदेस की ओर रूख नही की और गयी भी तो जीवन के आखिरी दिनों में । इलाज के कुछ ही दिनों के बाद डाक्टरों ने घर ले जाकर सेवा–सुश्रुषा करने तक की हिदायद दे दी । इज्जतदेवी अपने त्याग और परिश्रम से खड़े घर–परिवार की छांव में वापस आकर एक दिन सब को छोड़कर चली गयी ।पत्नी की मौत से सत्येन्द्र बाबू टूट गये । पत्नी का क्रिया कर्म निपटा कर वे नैकरी पर चले गये । बेचारे खुद बनाते तो पेट की आग बुझा पाते । उनके सामने बहुत बड़ी मुसीबत आ धमकी । तीनो बेटे –बहू,पोते–पातियों से भरा घर परिवार होने के बाद भी उन्हे दो रोटी टाइम से कोई देने वाला न था । एक बेटी थी गंगा जो आंख पूरी तरह खोल भी नही पायी थी कि सत्येन्द्र बाबू ने ब्याह के बंधन में बांध दिया था । पूरी तरह युवा भी नही हो पायी कि ससुराल विदा कर दिये थे । वह भी दो बच्चों की मां बन चुकी थी । बेटी तो होती ही परायी है ।गंगा भी मां की कैंसर से मौत के सदमे को बर्दाश्त नही कर पा रही थी और बाप का भी दुख नही देखा जा रहा था । साल छः माह में दो चार दिन के लिये शहर जाकर बाप की सेवा–सुश्रुषा कर आती । उनके बिस्तर,चद्दरें कपड़ा–लता धोकर प्रेस कर रख आती । खैर ये कपड़े कब तक चलते महिने भर के बाद भी जस के तस हो जाते । बेचारे सत्येन्द्र बाबू मुसीबत को गला लगाकर आंसू बहाते । सत्येन्द्रबाबू मुसीबत में टूटते रहे पर बेटो ने कभी उनकी खबर नही ली । हां रूपये की मांग बराबर बनी रहती ,कभी चिट्ठी आती या कोई गांव के शहर आता उससे पर कोई मिलने की जहमत नही उठाता शायद बाप की सेवा–सुश्रुषा के डर के मारे।

सत्येन्द्र बाबू को जीवन भर एक ही धुन सवार थी कि वे बेटो के लिये अधिक से अधिक दौलत जोड़ दे ।खैर काफी हद तक सफल भी हुए । बेटी के बारे में कभी नही सोचे । बेटी का ब्याह एक गरीब परिवार में कर गंगा नहा लिये थे । उनको बेटी की कोई फिक्र न थी जबकि बेटी के सुसराल में चहुंओर से अभाव का प्रहार था और दमाद भी बेरोजगार का दंश झेल रहा था । इसके बाद भी बेटी की दशा की तरफ सत्येन्द्रबाबू ने कभी उलटकर नही देखा । उनका एक ही मकसद था कि वे अधिक से अधिक धन का ढेर खड़ा कर दे बस बेटो के लिये । बेटे थे कि घास नही डालने को तैयार थे दूसरी ओर गरीब बेटी बाप की दुर्दशा को देखकर ब्याकुल थी । जहां तक उससे सेवा सुश्रुषा हो जाती कर आती अपने घर मंदिर की । देखने वाले कहते देखो गंगा बेटी होकर बेटों का कान काट रही है । सत्येन्द्रबाबू के बेटे है कि उन्की निगाहे बस उनकी कमाई पर लगी हुई है । बेटी दमाद निःस्वार्थ सेवा कर रहे

है गरीब होकर भी। कुछ तो सत्येन्द्रबाबू के मुंह पर व्यंग कसते कितना अन्याय करोगे इकलौती बेटी पर अरे जमीन और दौलत में बेटी को हिस्सा नही दोगे सब जान गये है पर उसके हक तो दे सकते थे । स्व.इज्जतदेवी के गहनों पर बेटी गंगा का तो हक बनता था पर तुमने सब बहुओं को ऐसे बांट दिया जैसे कोई राजा । सत्येन्द्रबाबू बेटी के प्रति अन्याय ठीक नही । सत्येन्द्रबाबू ऐसे मौन साध लेते जैसे कुछ सुने ही न हो ।

सत्येन्द्रबाबू की बेटी दमाद को रत्ती भर लालच न थी पर वे अपने फर्ज पर हर मौके पर खरे उतरते । बेटी दमाद और उसके परिवार के लोग स्वाभिमानी थे मेहनत मजदूरी करने में भी संकोच नही करते थे । दो टाइम की रोटी इज्जत से मिल जा रही थी । इसी बीच दमाद नर्मदानरायन को नौकरी भी मिल गयी । गंगा के दिन और अच्छे से कटने लगे । सत्येन्द्रबाबू दिन भर नौकरी करते रात में आते चूल्ह चौका करते तब जाकर दो रोटी नसीब होती । नर्मदानरायन के साथ गंगा शहर में रहने लगी । वह शहर से सत्येन्द्रबाबू की खोज खबर लेती रहती । मौका मिलते ही बेटी दमाद दो चार दिन के लिये उनके पास चले जाते । बेटे बहु पराये होते जा रहे थे पर रूपये की मांग पहले से भी अधिक बढ गयी थी । सत्येन्द्रबाबू अपने परिवार को बिखरता हुआ देखकर बेचैन थे । चार छः महीने में जब गांव जाते तो उनके साथ जो कुछ घटता घबरा कर शहर भाग आते ।

एक दिन रात में सत्येन्द्रबाबू डयूटी से आ रहे थे । अपने क्वार्टर पहुंचते उससे पहले एक स्कूटर वाला टक्कर मारकर भाग गया । कई घण्टे वही पड़े रहे । किसी तरह एक्सीडेण्ट की सूचना पड़ोसियों को लगी वे लोग ले जाकर भर्ती करवाये । पलास्टर चढ गया बेचारे अब बैठकु हो गये । पड़ोसियों से जहां तक बन पड़ता किये । अस्पताल से छुट्टी मिलने पर पड़ोसी क्वार्टर पर ले आये उठना बैठना मुश्किल था । हर काम तो पड़ोसी कर नही सकते थे बेचारे परेशान पलास्टर कटवा दिये । बाप के एक्सीडेण्ट की खबर बेटी दमाद को लगी । वे दोनो दमाद हजारो किलोमीटर दूर से गंगा को लेकर सत्येन्द्रबाबू के पास पहुंचा । कुछ दिन रहकर वे दोनों सेवा सुश्रुषा किये । गंगा बाप के तकलीफ न हो इसीलिये खाना बनाने के कुछ उपकरण के साथ दाल–चावल बनाने के लिये इलेक्ट्रानिक मशीन खरीदकर दे आये । सत्येन्द्रबाबू अब बेटी दमाद की तारीफ के पुल बांधने लगे थे पर भूलकर धन दौलत के मामले में तटस्थ थे ।

बेटी दमाद हजारों किलोमीटर की दूरी से सत्येन्द्रबाबू को देखने पहुंच आये पर बेटे–बहु अनभिज्ञ बने रहे । बेटो की बढती हुई दूरी को देखकर कुछ लोगो किस ीअनाथ विधवा से व्याह कर लेने की सलाह देने लगे पर सत्येन्द्र बाबू उम्र और नाती पोतो के ब्याह करने की उम्र का वास्ता दे देते । बेटे बहुओ को सत्येन्द्रबाबू से तनिक

मतलब नही था हां मतलब था तो बस कमाई से । उनकी गिद्ध नजरे तनख्वाह,बैंक बैलेंस पर लगी रहती । कोई भी बेटा सत्येन्द्रबाबू के साथ रहने को तैयार न था । बेटो की चाल को देखकर वे नौकरी छोड़ने को तैयार न थे । वे कहते जब तक नौकरी है तब तक जीवन है ।

हारकर सत्येन्द्रबाबू ने लोगों की राय मान लिये और ब्याह की खबर जंगल की आग की तरह फैल गयी ।इस खबर ने उनकी उजड़े हुए जिन्दगी के सपनों में बहार के झोके आने लगे । वे सत्येन्द्रबाबू के बड़े बेटे से सांठ–गांठ सौदेबाज कर ली । सत्येन्द्रबाबू को चूल्ह चौका करने वाली घरनी की जरूरत थी और उर्मिलादेवी को भी परवरिश की दरकार थी ताकि मरने के बाद दो गज कफन और मुट्ठी भर माटी के साथ कोई मुखाग्नि देने वाला भी तो हो । उर्मिलादेवी सत्येन्द्रबाबू के पैतृक गांव के पास की थी । आखिरकार बेटे की अगुवाई में बूढे बाप का कानूनन ब्या हो गया । इस ब्याह की भनक बेटी दमाद को नही लगने पायी । खरचूलाल नई मां के सहारे पूरी दौलत हथियाने के सपन बुन चुका था ।

उर्मिलादेवी घाघ किस्म की औरत थी । खरचूलाल उसकी बातों की मिठास के अन्दर के जहर को नही भांप पाया । कुछ महिनो के बाद ही उर्मिलादेवी के अन्दर का सौतेलेपन का ज्वालामुखी फूटने लगा । वह सत्येन्द्रबाबू की मोटी तनख्वाह को अपने कब्जे में करने लगी । उधर खरचूलाल नई मां के रौद्ररूप को देखकर घबराने लगा । हर महीने गांव पहुंचने वाली रकम में धीर–धीरे कटौती होने लगी । बड़ी चिन्ता में खरचूलाल के दिन बितने लगे । उर्मिलादेवी में आये बदलाव से सत्येन्द्रबाबू भी अचम्भित थे । ब्याह के बाद भी दिन बहुत अच्छी तरह तो नही बित रहे थे पर दो रोटी बना बनाया मिल रहा था । ड़ेढ साल कब बित गया पता ही नही चला सत्येन्द्रबाबू रिटायर हो गये ।

रिटायरमेण्ट के बाद का जीवन सत्येन्द्रबाबू पोते–पोतियों के बीच बिताने का फैसला कर वे पैतृक गांव आ गये । उर्मिलादेवी को भरा–पूरा परिवार काटने को जैसे दौड़ाने लगा । बेटे–बहू पोते–पोती उन्हे फूटी आंख नही भाते । उर्मिलादेवी ने ऐसा ताण्डव मचाया कि जो बेटे एक चूल्ह की रोटी खाते थे वे अपने–अपने चूल्हा पर बनाने खाने लगे तब जाकर उर्मिलादेवी के दिल को ठण्डक पहुंची । सत्येन्द्रबाबू को रिटायरमेण्ट के बाद पन्द्रह लाख रूपये मिले थे । अठनी–चवन्नी को मोहताज उर्मिला पन्द्रह लाख की मालकिन बन गयी थी और हम महीनों पांच हजार से अधिक पेंशन भी उसके हाथ में आने लगी थी । भीखारिन जैसा जीवन बिताने वाली उर्मिलादेवी रानी महारानी जैसे रहने लगी । मायकेवालों की मदद के लिये बैंक की पासबुक लेकर खड़ीरहने लगी । उर्मिलादेवी की करतूतो सत्येन्द्रबाबू बेचैन थे । सत्येन्द्रबाबू द्वारापानी पी–पीकर बचायी गयी रकम उर्मिलादेवी मायके भेजने में व्यस्त हो गयी । सयेन्द्रबाबू

भर पेट रोटी के लिये बेटे बहुओं के दरवाजे की ओर ताकने पड़ रहे थे । सत्येन्द्रबाबू उर्मिलादेवी में आये बदलाव और उसकी ठगी को देखकर हैरान –परेशान थे और बेटे–बहू,पोते–पोतियां आतंकित । सत्येन्द्रबाबू के सारे मनसूबे धराशायी हो गये । उर्मिलादेवी की पैसों की भूख बढती जा रही थी । सत्येन्द्रबाबू के समझाने पर वह रौद्र रूप धारण कर लेती थी । बेटे तो पहले से ही उर्मिलादेवी के सौतेलपन से घायल दूरी बना चुके थे । बेटों का भी बाप के प्रति लगाव तनिक न बचा था । ख्वाहिशे पूरी करना तो सपने की बात हो गयी थी सिर्फ उर्मिलादेवी के सौतेलेपन की वजह से ।

सत्येन्द्रबाबू का पुत्र मोह भंग नही हुआ था । वे पहले से अधिक बेटे के सुरक्षित भविष्य के लिये चिन्तित थे । कुछ खेतीबारी की जमीन और पक्का मकान भी बनवा रहे थे पर इस सब को देखकर उर्मिलादेवी का खून खौल रहा था । वह सत्येन्द्रबाबू के इस खर्चे को फिजूलखर्ची कहकर उन्हे प्रताड़ित करती रहती । इसी बीच बड़े बेटे खरचूलाल से अन–बन हो गयी ।वह अपने सगे बहनोई के सामने बाप को बेटी की गाली दे दिया । सत्येन्द्रबाबू को काटो तो खून नही । दमाद के सामने जहर का घूट पीकर बर्दाश्त कर गये । अन्ततः खरचूलाल बाप की मौत पर न आने और मुखाग्नि न देने की कसम खाकर वह अपने बाल–बच्चों को लेकर परदेस चला गया ।

सत्येन्द्रबाबू बेटे की इस तरह की कसम से वे टूट गये । बाकी दोनो बेटों और उनके परिवार ने और अधिक दूरी बना ली । सत्येन्द्रबाबू के उपर दुखों का पहाड़ गिर पड़ा । दूसरी पत्नी उर्मिलादेवी अभिशाप साबित हो गयी । घर परिवार बिखर गया। धन–दौलत पर उर्मिलादेवी कब्जा जमाने के लिये तरह –तरह के षणयन्त्र रचने लगी । कई –कई दिनों तक रोटी बेचारे सत्येन्द्रबाबू को नसीब नही होती । सत्येन्द्रबाबू इस गम को कम करने के लिये शराब का सहारा लेने लगे पर क्या गम घटने जगह और बढने लगा । उर्मिलादेवी तरह–तरह के लांछन लगाकर प्रताड़ित करने लगी । कोई सत्येन्द्रबाबू को सहारा देने वाला न था बेटी दमाद तो हतारों कोस दूर परदेस में थे जिन्हे सत्येन्द्रबाबू की फिक्र थी । गांव–पुर के लोग कहते जैसा किया है वैसा भोगेगा । बुढौती में जवान औरत से ब्याह तो बर्बादी ही है। सचमुच सत्येन्द्रबाबू और उनका हंसता खेलता परिवार बर्बाद हो गया ।

सत्येन्द्रबाबू को चिन्ता निगलने लगी एक दिन अचानक अचेत होकर गिर पड़े । कोई अस्पताल तक ले जाने वाला न मिला । उर्मिलादेवी को मां–बाप,भाई–भतीजों से अब फुर्सत न थी जो उन्हे पापिन करार कर त्याग चुके थे । वे भी सत्येन्द्रबाबू की रकम देखकर कुत्ते की तरह उर्मिलादेवी के आगे–पीछे पूछं हिलाते नजर आ रहे थे । सत्येन्द्रबाबू अचेत होकर गिर गये है कि खबर कोसों दूर बेटी के देवर जयचन्द को लगी । वह दौड़ा भागा आया और छोटे और मझले बेटे रोशनलाल और चेतनलाल

को साथ लेकर सत्येन्द्रबाबू को जीप में रखकर अस्पताल की ओर भागा पर क्या रास्ते में सत्येन्द्रबाबू दम तोड़ दिये ।

जयचन्द्र सत्येन्द्रबाबू के मौत की खबर भाई सोचचन्द्र को न देकर मौत की शैय्या पर पड़े है कि खबर दिया और कहां कि तुरन्त गांव के लिये निकल पड़ो । रात काटना बहुत मुश्किल है । बाप की बीमारी की खबर सुनकर बेटी गंगा के आंसू बन्द होने का नाम ही नही ले रहे थे । सोचचन्द पत्नी गंगा को लेकर तुरन्त चल पड़ा । दूसरे दिन चार घझटे लेट रेल बनारस पहुंची । वह रेल से उतर कर किराये की टैक्सी लिया और सूरज डूबते–डूबते ससुराल पहुंचा पर लम्बे इन्तजार के बाद सत्येन्द्रबाबू की मृतदेह गोमती नदी के घाट पर अग्नि को समर्पित कर दी गयी थी । सोचचन्द ससुराल से पन्द्रह किलोमीटर दूर गोमती नदी के किनारे श्मशान घाट की ओर ड्राइवर से चलने को कहा पर ड्राइवर ने चार सौ रूपये और अधिक किराया लेने की बात पर अड़ गया । सोचचन्द तुरन्त पूरे किराये के सोलह सौ उसके हाथ पर रख दिया । ड्राइवर से घाट से उस घाट भटकता रहा देर पर देर होती गयी उधर चिता की आग भयावह रूप ले चुकी थी जैसे उसे भी जल्दी हो । काफी भटकने के बाद सोचचन्द श्मशान घाट पर पहुंचा । वहां सब क्रिया क्रम पूरा हो चुका था मुखाग्नि छोटे बेटे रोशनलाल ने दी थी बस अग्नि शान्ति करने के लिये मटके के पानी को लेकर रोशन चक्कर लगाने के लिये चला ही था कि कार दिखाई पड़ गयी वह रूक गया यह कहकर कि जीजी और जीजाजी आ गये । गंगा और सोचचन्द मुट्ठी भर माटी देकर श्रध्दा सुमन समर्पित किये इसके बाद आखिरी कर्मकाण्ड पूरा हुआ । चिता की अग्नि एकदम शान्त हो गयी । मृत देह का बचा हुआ तनिका सा अवशेष गोमती नदी को समर्पित कर दिया गया । बेटे–बहू,बेटी–दमाद और सगे सम्बन्धी तीसरा एंव अन्य कर्म–काण्ड विधि–विधान से सम्पन्न करवा रहे थे । तेरहवी के दिन सत्येन्द्रबाबू का बड़ा बेटा खरचूलाल शहर से आया सिर्फ घरवाली को लेकर पांचों बच्चों को नही लाया । वह अपनी बाप को मुखाग्नि न देने की कसम पूरी कर इतरा रहा था । तेरहवी बितते ही उर्मिलादेवी सत्येन्द्रबाबू के छोड़े धन–दौलत को हथियाने की साजिश जोरो से करने लगी । सफल भी हुई बस बैंक में जमा कुछ रूपयों पर पूरी तरह कब्जा नही हो पाया कानूनी पेचीदिगी जो आ गयी थी । खरचूलाल भी खूब चाले चल रहा था पर उर्मिलादेवी के सामने मात खा गया । आखिरकार बैंक में जमा छः लाख रूपया,घर और खेती की जमीन सत्येन्द्रबाबू तीनों बेटो और उर्मिलादेवी में बराबर–बराबर बट गया और बेटी गंगा को मृमक बना दिया गया। शेष नौ–दस लाख रूपये उर्मिलादेवी डंकार गयी । लोगो उर्मिलादेवी को देखकर कहते कैसी औरत है जो दौलत बटोरने के लिये ,पतिव्रता बनने का ढोंग कर रही है।बेचारे सत्येन्द्रबाबू को रोटी के लिये तरसा–तरसा कर मार डाली । खरचूलाल को दखेकर

लोग कहते ना थकते वाह रे कलयुग की औलाद बाप के जीते जी तो उसके सपनों का जनाजा निकालता रहा। मरने के बाद मुखाग्नि तक नही दिया । अब देखो उसी बाप की दौलत के लिये और उसके उतराधिकार के लिये ऐसे घडियाली आंसू बहा रहा है जैसे कोई श्रवणकुमार हो ।

8–डोली बनाम अर्थी

लू कुछ हल्की होने लगी थी परन्तु तपन पूरी तरह बरकरार थी । आकाश धुल से नहाया हुआ था । गांव में शादी का सीजन जोरो पर था । सड़क पगडण्डी सभी रास्ते मुसाफिरों की आवाजाही से शादी के जश्न का मूक साक्षी बन रहे थे ।नांच मण्डली वाले इक्के पर लाउडस्पीकर बजाते,नाटक के डायलाग बोलते,शादी के पारम्परिक गीते गाते अपने गन्तव्य की ओर भागे जा रहे थे । झुण्ड के झुण्ड साइकिल वाले और पैदल भी कम ना थे कोई सोहर,कोई कजरी कोई आल्हा एवं अन्य पारम्परिक सांस्कृतिक गीतों से माहौल को खुशनुमा बनाते हुए गति तेज करते जा रहे थे। कुछ ही देर में सूरज लाल आवरण में ढंक गया । रजोदेवी रतन की इन्तजार में खोई हुई थी,बेटी की डोली की चिन्ता जो खाये जा रही थी। गरीब को तो चारो ओर से मुसीबतों का आक्रमण अपनी हड्डियों पर रोकना पड़ता है । रजोदेवी चिन्ता की चिता पर बेहोश सी पड़ी थी इी बीच रतन भी साइकिल की घण्टी बजाते हुए आ गया पर रजोदेवी को पता ही नही चला । रजोदवी को चिन्ता में खोया हुआ देखकर रतन बोला अरे भागवान अब किसकी इंतजार है मैं तो आग गया ।

रजोदेवी–किधर से आ गये मैं तो सड़क की ओर ही देख रही थी ।

रतन–उडकर ।

रजोदेवी–क्या ?

रतन–तुम्हारे सामने कब से घण्टी बजा रहा हूं तुम सुन नही रहा हो और कह रही हो किधर से आ गये। ये कैसा इन्तार है ।

रजोदेवी–है तो इंतजार ही । खैर छोड़ो बात बनी ?

रतन–समझो पक्की हो गयी ।

रजोदेवी–चलो बेटवा की मेहनत सफल हो गया ।

रतन–हां छोटी बहन रजनी के ब्याह के खर्चे की चिन्ता से इतना परेशान होकर श्रीधर की नहर पर माटी फेंक रहा है जबकि उसका इम्तहान सिर पर है । भाई और बाप दोनो का फर्ज निभा रहा है । खेतिहर मजदूर बाप की मजबूरी को समझता है। श्रीधर की पसीने की कमाई के रूपये से लड़का छेकाई की रस्म पूरी कर आया हूं ।

मां बाप की बाते रजनी के कानों को छूं गयी । उसकी आखों से आंसू झलक पड़े बेचारी अल्पव्यस्क जो थी । रजोदेवी को बीटिया की उपस्थिति का एहसास हो गया । वह रजनी को आवाज दी । वह छुईमुई की तरह खड़ी हो गयी ।
रजोदेवी–बेटी अपने बाबूजी के लिये गगरी से ठण्डा पानी और गुड़ लाओ।
रजनी–लाती हूं मां ।
रजोदेवी–रजनी के बाबू मैं हुक्का चढाकर लाती हूं ।
रतन गुड़ खाकर पानी पीया और गमछे में हवा करने लगा ।
रजोदेवी–लो हुक्का पीओ मैं बेना से हवा कर देती हूं ।
रतन–ये अच्छा रहेगा ।
रजोदेवी–घर–वर से ठोंक बजाकर देख लिये हो ना ?
रतन–अरे बईद कक्का की रिश्तेदारी में है । बाप नही है सिर्फ मां बेटे है । बैजू बनारस में पढा है । कम्पाउडरी कर रहा है । बीटिया राज करेगी ।
रजादेवी–बीटिया राज करे यही तो कामना है । अच्छा ये बताओ कि तुमको घर–वर पूरी तरह से पसन्द आ गया है ना । ऐसा तो नही कि बईद बाबा के दबाव में हां कर आये हो ।
रतन–भागवान मैं अपने बच्चों का भला बुरा समझता हूं । बीटिया की भलाई के लिये हां कर आया हूं , पर एक बात है जो खटक रही है ।
रजोदवी–कौन सी बात ?
रतन– लड़के की उम्र तनिक ज्यादा है ।
रजोदेवी–लड़के की उम्र लड़की से दो–चार साल अधिक होगी तो चलेगा । माली हालत कैसी है इसकी तहकीकात भी कर लेनी चाहिये थी ।
रतन–देखो माली हालत भी उतनी अच्छी नही है पर बेटी को सकून की रोटी जरूर मिल सकती है । ऐसा मेरा विश्वास है बाकी उसकी तकदीर । मां बेटे दोनों कुछ ना कुछ कमा ही रहे है । मां दाई का काम करती है,बेटा कम्पाउण्डर का । पुश्तैनी जमीन एकाध बिगहा तो होगी ही । बीटिया का जीवन आराम से कट जायेगा । बड़े घर में बेटी ब्याहने के लिये बड़ी रकम भी तो चाहिये ।वो हमारे पास है नही । देख रही हो बेटवा पढाई छोड़कर माटी फेंक रहा है ।
रजोदेवी–काश मेरी फूल सी बेटी रजनी की जिन्दगी में दुख की तनिक भी धूप ना पड़ती ।
रतन–रजनी की मां कितने साल से भटक रहा हूं । बिरादरी में जिनकी हालत तनिक सुधर गयी है वे लड़को को ब्याह के नाम पर बेच रहे है । हमारी औकात तो बेटी के लिये दूल्हा खरीदने की तो है भी नही । लड़कियों के लिये दहेज तो जहर साबित हो रहा है । गरीब घर में बेटी सुरक्षित और सुखी जीवन बिताये तो इससे अच्छी बात

हमारे लिये क्या हो सकती है । यहां तो दहेज की कोई मांग भी नही है,लड़का अच्छा पढा लिखा है। मुझे तो लगता है कि मेरी बेटी की गृहस्ती बहुत बढिया चलेगी ।
रजोदेवी–खैर बईद बाबा की रिश्तेदाी में है तो सब हाल उन्हे मालूम होगा । देखो ब्याह करने से पहले गहराई से जांच–पड़ताल कर लेना ।
रतन–हां बेटी के जीवन का मामला है । ऐसे तो फेंकना नही है । गांव के अनुभवी लोगों से रायमशविरा करके ही ब्याह करूंगा । यदि बात नही बनी तो छेकाई की रस्म में जो रकम दिया हूं वह तो बईद कक्का वापस करवा देगे । ऐसी बात भी हो गयी है। रजनी की मां दुनिया उम्मीद पर टिकी है । हमें भी उम्मीद है कि मेरी बेटी बैजू के साथ खुश रहेगी ।
रजोदेवी–देखो तुमको घर–वर पसन्द आ गया है । ये अच्छी बात है पर परिवार के लोगों से अपने बडे भाई साहब से भी समझ लेते ।
रतन–भईया हमारी बात को काटेगा क्या ?
रजोदेवी– काटेगे तो नही पर अपनी आंख से देख लेते तो बात कुछ और होती ।
रतन– मैं तो जबान दे आया हूं पर तू कह रही है तो यह भी कर लूंगा ।
रजोदेवी–इस बार बड़े भाई साहब के साथ बस्ती के एक दो और अनुभवी लोगो को ले जाकर घर–वर दिखा देना । करना अपने मन की पर राय तो ले लेना ।
रतन–क्यों खरचा करवाने की बात करती हो । दो–चार लोगों को लेकर जाउंगा तो इसमे खर्चा तो होगा की नही पर तुम्हारी बात को भी मानना पड़ेगा ।
रजोदेवी–काश हमारी बात गउरमिण्ट मान लेती ।
रतन–कौन सी बात । यहां तो गउरमिण्ट वादे पर चलती है । वोट लेते ही मुकर जाते है सब अपनी–अपनी रोटी सेंकने लगते है । खैर तुम अपनी बात तो बता दे ।
रजोदेवी–जन्म–मरण विभग की तरह विवाह विभाग बनाकर । जहां लड़की– लड़के के मां बाप शादी योग्य बच्चों के नाम लिखा देते । उम्र और योग्यता के अनुसार गउरमिण्ट सूचना दे देती,मां–बाप की स्वीकृति और लड़की –लडके की पसन्द के अनुसार ब्याह का प्रमाण पत्र जारी हो जाता तो इतनी परेशानी नही होती ।
रतन–काश ऐसा हो जाता पर अभी तो ऐसा कोई कानून नही है। भविष्य में बने यह तो गउरमिण्ट जाने । रही बात रजनी के ब्याह की तो वह तो हमें ही करना है ।
रजोदेवी–रजनी के बाबू तुम थक गये हो आराम करो । श्रीधर भी आ गया उसको भी रोटी दे दूं । जब तक बीटिया का ब्याह नही होगा तब तक चैन नही मिलेगा ।
रतन–हां ये तो है बेटी के मां बाप जो है ।
रजोदेवी– दोनो बेटो,श्रीधर,रामधर, चारो बेटियों रजनी, चिन्ता,मिन्ता और सुगन्दा रोटी परोस कर खुद खाना खायी रतन तो सबसे पहले खा लिया था । खाना खाने के

बाद रजोदेवी चूल्ह–बर्तन का काम निपटा कर सोने गयी ।काफी करवटे बदलने के बाद नींद ने दस्तक तो दी पर कुछ ही देर में वह चिल्ला कर बिस्तर से उठी और रजनी की तरफ दौड़ी । सोई हुई रजनी को गले लगाकर रोने लगी । आहट पाकर रतन भी गया । हाल देखकर हक्का–बक्का रहा गया । हिम्मत करके वह बोला श्रीधर की मां क्या हो गया रजनी को लेकर रो क्यो रही हो ?
रजोदेवी–बहुत बुरा सपना देखी हूं ।
रतन–सपना और हकीकत में अन्तर होता है । सपना देखकर इस तरह से विलाप कर रही हो । क्या देखा तुमने सपने में कि बीटिया को छाती से लगाकर रो रही हो आंधी रात में ।
रजोदेवी– मैं सपने में देखी कि रजो का ब्याह हो गया ।
रतन–इसमें रोने की कौन से बात है । ब्याह तो होगा ही ...
रजोदेवी–पूरी बात तो सुनो ।
रतन–ठीक है सुनाओ ।
रजोदेवी– ब्याह तो हो गया पर मांग में सिंधुर पड़ते ही एक डरावाना सा आदमी काले भैसे पर सवार होकर आया और बीटिया निगल गया कहकर आंसू बहाने लगी ।
रतन–रामधर की मां ये तुम्हारा भ्रम है फिर भी किसी जानकर से समझ लेगे । देखो श्रीधर,रामधर, रजनी, चिन्ता,मिन्ता और सुगन्दा सभी घबरा गये है। मन से भ्रम का भूत निकाल फेको और शान्त होकर सो जाओ ।
रजोदेवी–ठीक कह रहे हो ।
रतन बेटी के ब्याह के पहले घर–वर के बारे में जांच–पड़ताल किया पर उसे गरीबी के अलावा और खोट नजर नही आयी खैर गरीब तो खुद रतन भी था ।बैजू की शिक्षा–दीक्षा से वह काफी प्रभावित था । उसके उम्मीद थी कि बैजू को आगे चलकर कोई सरकारी नौकरी मिल जायेगी । नही भी मिली तो क्या कम्पाउण्डरी की कमाई से गृहस्ती तो आराम से चल सकती है ।उपर से बैजू की मां की भी कुछ कमाई तो हो ही जाती है । अपनी तुलना में वह बैजू को खाता–पीता पाया और भगवान का नाम लेकर अपनी हैसियत के अनुसार दान–दहेज देका बीटिया का ब्याह बैजू से कर दिया ।
रजनी मायके से हंसी–खुशी विदा हो गयी । ससुराल में सास मां ने भी आव–भगत की । रजनी को बीटिया मानकर बेटी जैसा बरताव करने लगी । एक बात दबी रह गयी थी वह ब्याह के बाद उभर कर आयी । बैजू का चाल–चलन ठीक नही था । उसके बुरे चाल–चलन ने फूल जैसी रजनी का ख्याल नही आने दिया । वह देर रात में घर आता सुबह जल्दी चला जाता । बूढी मां बहुत समझाती पर उसकी बुरी

आदते नही छूटी । साल भर के अन्दर रजनी की गोद हरी हो हो गयी । वह भी एक बेटी का मां बन गयी । बेटी के आते ही बैजू और अधिक लापरवाह हो गया । बेटी के जन्म के बाद से रजनी बीमार रहने लगी । वही रजनी जिसका मायके में कभी सिर तक नही दुखा था । बूढी सास से जिसकी आंखो से अब सूझना भी कम हो गया था । घुटने में शरीर का भार ढोने में आनाकानी करने लगे थे, जहां तक होता दवा –दारू करती पर बैजू कभी भूलकर एक गोली तक नही दिया । बूढी मां कहती बेटा बहू की तबियत ठीक नही हो रही है । दवाई क्यो नही देता या अस्पताल ले जाकर क्यो नही दिखाता बेचारी खटिया में सटती जा रही है । वह कहता इसको दवाई देने से काई पैसा मिलेगा क्या । अस्पताल ले जाकर इलाज करवाने के लिये मेरे पास पैसे नही है । कौन सा इसका बाप भारी –भरकम दहेज दिया है कि उसी रकम को इसके इलाज पर खर्च करूं ।

बूढी मां कहती बेटा ऐसे कसाई क्यो बन रहे हो । रजनी तुम्हारी धर्मपत्नी है । तुम्हारी अर्धागिनी है उसके इलाज के लिये पैसा मांग रहे हो । बेटा ऐसा जुल्म ना कर बहू की इलाज करवा नही तो उसकी जान चली जायेगी । बेचारी को चलने में चक्कर आ रहे है ।

बैजू– कल मरती है तो आज मर जाये । मुझे परवाह नही और वही हुआ रजनी तड़प–तड़प कर मौत से जूझने लगी । तब जाकर उसके रजनी के मायके किसी पड़ोसी ने खबर पहुंचा दी । खबर मिलते ही रतन,रामधर,रजोदवी और बस्ती के चार छः लोग आये और मृतशैय्या पर पड़ी साल भर की नन्ही सी गुड़िया को छाती से चिपकाये रजनी को लालगंज सरकारी अस्पताल मे भर्ती करवाये । दो–तीन के मौत से संघर्ष के बाद रजनी भोर में हार गयी ।

मौत के बैजू रजनी की लाश अपने गांव तक ले जाने को मना कर दिया । बूढी मां बार–बार समझाती रही कि बेटा लड़की की डोली मायके से उठती है और अर्थी सुसराल से । रजनी की मृत देह का दाह–संस्कार करना तुम्हारा फर्ज है पर वह नही माना । मां एवं अन्य लोगों की बार–बार की समझाईस के बाद बैजू नही मान रहा था । यह सब रामधर से नही देखा गया । वह अपने बाप रतन से बोला बाबू बहन को बहनोई ने तड़पा तड़पा कर तो मार ही डाला क्या अब लाश भी सड़ायेगे ?

रतन–बेटा जो उचित समझ तू ही कर बीटिया के सपनों की बारात में दमाद ने आग लगा दी । मेरी मति मारी गयी थी मैं बेटी को जल्लाद को सौप दिया ।

रामधर–बाबू अब पछताने से क्या होने वाला है । मेरी बहन तो वापस नही आने वाली । लाश के दाह संस्कार का इन्तजाम मायके वालों का करना होगा ।मैं ईक्का लेकर आता हूं । रामधर ईक्का लाया । रामधर ,रतन और उसके गांव से आये लोग लाश को ईक्का पर पीछे की तरफ बांधे। विलाप करती हुई रजोदेवी और सास आंसू

बहाती हुई रजनी की सास भी सवार हो गयी पर बैजू साथ जाने को भी तैयार न थे । मां की कसम के बाद वह भी ईक्के पर छाती तान कर बैठ गया । ईक्कावान चाबुक हवा में लहराया और घोडा सरपट दौड़ पड़ा । दो घण्टे के बाद ईक्का रजनी के मायके पहुंच गया । रजनी की लाश को देखकर पूरी बस्ती रो पड़ी पर बैजू की पलके गीली नही हुई वह ऐसे सीना ताने हुए था जैसे कोई बहादुरी का काम कर रहा हो घरवाली को तड़पा–तड़पा कर मारकर।

लाश को नीम की छांव पुआल बिछाकर लेटा दिया । बस्ती के लोग बांस काटकर टिकठी बनाने लगे । बस्ती के दो लोग कफन एवं दाह संस्कार का सामान लेने के लिए पल्हना बाजार की ओर दौड़ पड़े । कुछ ही घण्टो में सारी तैयारी हो गयी और रजनी का जनाजा श्मशान की ओर चल पड़ा ।

रजोदेवी गुड़िया को छाती से चिपकाये दहाड मार–मार कर रोते हुए कह रहा थी क्या भगवान तुमने हमारी बेटी की ऐसी तकदीर ऐसी क्यो लिख दी कि जहां से डोली उठी थी वहीं से अर्थी उठ रही है ।

9–परित्याग

बीटू की मां चेहरा मुरझाया हुआ । बसन्त के मौसम में पतझड़ क्यों ।

ज्ञानेश्वरी–तुमको मजाक सूझ रहा है मेरे मुरझाये चहरे को देखकर ? सच औरत के दर्द को कोई नही समझ पाया।

रामेश्वर–देवी दर्द का कारण जान सकता हूं ?

ज्ञानेश्वरी–सुनोगे ?

रामेश्वर–अवश्य ।

ज्ञानेश्वरी–दर्द का कारण है बंटवारा ।

रामेश्वर–कैसा बंटवारा देवी ? परिवार में बंटवारा नही देवी ऐसा ना कहो । रहस्य को सुलझाओ मेरी चिन्ता ना बढाओं । बंटवारे का नाम सुनकर मुझे घबराहट होने लगी है ।

ज्ञानेश्वरी–घबराने की कोई बात नही । डाक्टर का फोन आया था ।

रामेश्वर–डाक्टर बंटवारा चाहता है ?

ज्ञानेश्वरी–अरे नही क्यों बात का बतंगड़ बना रहे हो ।

रामेश्वर–किस बंटवारे की बात कर रही हो ।

ज्ञानेश्वरी– पिताजी की सम्पति का बंटवारा ।

रामेश्वर–यानि बीटू के नाना की छोड़ी सम्पति का बंटवारा ।

ज्ञानेश्वरी–हां ।

रामेश्वर–चलो अच्छा हुआ । कोर्ट का फैसला आने में कई साल लग गये । लाखों रूपये तो कोर्ट के चक्कर में खत्म हो गये होगे ।
ज्ञानेश्वरी–अच्छा तो हुआ पर मेरा कत्ल तो हो गया ।
रामेश्वर–तुम्हारा कत्ल । बात मेरी समझ में नही आयी ।
ज्ञानेश्वरी–हां तुम मर्द जो ठहरे हमारी बात कहां समझ में आयेगी । अब तो औरते भी औरतों का दुश्मन बनने लगी है । बेचारी ठगी औरत जाये तो जाये कहां ? हर आदमी औरत से बलिदान चाहता है । मेरे सगे भाई और मेरी सौतेली मां ने कानूनीतौर पर मेरा कत्ल करवा दिया । मेरी मां अपने त्याग के भरोसे घर परिवार की कल्प कर दी थी पर बेचारी कैंसर जैसी जानलेवा बीमारी से जूझ कर मर गयी । मां के मरने के दस साल बाद भाईयों ने बाप की दूसरी शादी करवा दी । साल भर हुआ नही नई मां को भी खा गयी । आज नई मां बाप की सम्पति की उत्तराधिकरी हो गयी । मुझे से तो अपने मां–बाप की औलाद कहलाने का हक छिन लिया गया । कानूनी तौर पर मार दिया गया ।
रामेश्वर–बीटू की मां जीवन–मरण तो सब प्रभु की इच्छा पर है । किसी के कहने से कोई मरता है क्या ?वैसे भी हमें हिस्सा तो चाहिये नही था । जाने दो उनकी खुशी में अपनी खुशी है ।
ज्ञानेश्वरी– मैं कहां हिस्सा मांग रही थी कि वे लोग इतनी बड़ी चाल चले है । मुझे मृत घोषित कर दिये है । अरे कानूनी तौर पर तो मुझे भी हक है । बाप ने भेदभाव किया । भाईयों का पढाया मैं अनपढ गंवार रह गयी । मां–बाप जब तक दुनिया में थे तब तक उनकी औलाद थी अब उनके मरने के बाद यह भी हक छिन लिया गया ।
रामेश्वर–किसने कहा तुम्हारा हक नही है । हमारा घर –परिवार तो पूरी तरह तुम्हारे कब्जे में है । क्यों आसूं बहाती हो। हमे तो वैसे भी हिस्से की दरकार नही थी न रहेगी । तुम्हारे भाई–भतीजे और नई मां हंसी खुशी रहे तुम्हारे कानूनी कत्ल से तो क्या बुराई है । मायके से हक छिना गया है । ससुराल में तो नही ना । हक की बात कर रही हो यहां तो तुम्हारा साम्राज्य है ।
ज्ञानेश्वरी–देखो मजाक न करो ।अरे उनका इतना तो फर्ज बनता था कि नही कि वे मुझसे रायमशविरा कर लेते । मेरी भी इच्छा जान लेते । जबकि दिल्ली के बैंक में जमा रूपये को निकालने के लिये । मैने दस्तख्त किये थे ना । एक रूपये लिये । उल्टे अपने ही खर्च हो गये । उनको तो मालूम होगा ही न कि मां –बाप की सम्पति में बेटी का भी बराबर का हक है । अरे मां–बाप की सम्पति से मुझे हिस्सा नही चाहिये था पर उन्होने मुझे मृत घोषित क्यो कर दिया । मेरे तीन–तीन नन्हे–नन्हे

बच्चे है । आज भी मैं दवाई के भरोसे चल रही हूं । मेरे भाई और सौतेली मां ने मेरी मौत का हलफनामा कचहरी में दे दिये । वाह रे मतलबी भाई और सौतेली मां ।
रामेश्वर–चेहरे पर बसन्त लाओ । अभी पतझड़ का मौसम नही है । ले जाने दो अपने को वैसे भी नही चाहिये वैसी सम्पति ।
ज्ञानेश्वरी–हिस्से का अफसोस नही है जीते जी मार क्यो दिया । दुख तो इस बात का है । फर्जी हलफनामें में कहा गया है कि हरिहर की कोई बेटी नही थी । तुम बताओ मैं कहां से आई हूं । तुमको पता है मृतको का एसोशिसन बना हुआ है ।
रामेश्वर–हां तो ।
ज्ञानेश्वरी–क्या तुमको नही लगता कि मुझे अपनी मां बाप की बेटी का कहलाने का हक कचहरी से नही मिल सकता ?
रामेश्वर–क्यो नही पर ऐसा कर रिश्ते का खत्म नही करना है । कानूनी तौर पर कागज पर कत्ल हुआ है ना । समाज तो इसे मान्यता नही दे रहा है न ।
ज्ञानेश्वरी–क्या यह मेरे साथ अन्याय नही । क्या कानूनी तौर पर रिश्ते का खात्मा नही ?क्या काननूनन की नजरो में मरी पड़ी रहूं । कितने गुपचुप तरीके से मेरा कत्ल हो गया और मुझे पता ही नही चला ।
रामेश्वर–हुआ तो है कत्ल पर इसका मतलब तो ये नही कि बदला लिया जाये ।
ज्ञानेश्वरी–क्या लड़की इतनी मजबूर है कि जीवन भर मर–मर कर जीती रहे।आखिर मां–बाप,भाई–भतीजे और रिश्ते के लोग कितना त्याग चाहते है । लड़कियों का जन्म से पहले हो जा रहा है । मुझ कुछ भाग्यशाली जन्म पा भी जाती है तो उन्हे अपने सगों के जुल्म का शिकार होना पड़ जाता है । सम्पति से मैं खुद बेदखल हो जाती एक बार मुझ से पूछ तो लेते कत्ल करने से पहले । वे मुझे ही नही मेरे भरे पूरे परिवार का कत्ल कर दिये है । इसका जबाब तो देना ही होगा ।
रामेश्वर–सम्पति से कोई मोह नही है । भाईयों के खिलाफ कानूनी कार्रवाई करने से पूरे परिवर को जेल हो सकती है । क्या तुम ऐसा चाहोगी ?
ज्ञानेश्वरी–क्या तुम चाहोगे कि लड़कियों का कोख में कत्ल होता रहे। लड़कियां जुल्म की शिकार होती रहे ।हक से वंचित होती रहे । दोयम दर्जे की इंसान बनी रहे ।
रामेश्वर–कभी नही चाहूंगा ।
ज्ञानेश्वरी–फिर क्यों नही कानूनी जंग लड़ने देते ?
रामेश्वर– काफी विलम्ब हो चुका है । वैसे भी सम्पति में हिस्सा की दरकार नही है ।सबक सिखाने के और भी तरीके तो है ,जिससे जीवन में कभी भी सिर ना उठा सके । अपराधबोध से दबे मरे रहे ।

ज्ञानेश्वरी–तुम्हारी बात समझ गयी । भतीजे के ब्याह में नही जाने सोच रही थी । अब जाउंगी । ब्याह बित जाने पर सब पर्दाफाश कर दूंगी फिर ना मुंह देखूंगी ।
रामेश्वर–मायके का परित्याग कर पाओगी ।
ज्ञानेश्वरी–औरत क्या नही कर सकती है जब तनकर खड़ी हो जाये तो ।
रामेश्वर–कानूनी तौर पर तुम्हारा ही नही हम और हमारे बच्चो तक का कत्ल हो गया है लेकिन धैर्य नही खोना है । अब तो बस सबक सिखाना ही मकसद है ताकि जिन्दगी भर पूरा कुनबा अपराधबोध से नही उबर पाये ।
ज्ञानेश्वरी–तुम साथ हो तो ऐसा ही होगा । सांप भी मर जाऐगा और लाठी भी नही टूटेगी । सबक तो सीखा कर रहूंगी । एक पेट से जन्म दगा कर रहे है । उस सौतेली मां की क्या बात करें ।
रामेश्वर–ठीक है जैसे भी सबक सीखाना चाहो सीखाओ पर कचहरी के चक्कर में समय ,पैसा का नुकसाान तो होगा ही बेइज्जती भी बहुत होगी ।
ज्ञानेश्वरी–ठीक है । ब्याह बितने के बाद पूरी गांव और नातहितों के सामने अपने भाईयों के हाथ हुई अपने कागजी कत्ल को उजागर कर उनका परित्याग कर आउूंगी ।
घायन नागिन सी ज्ञानेश्वरी पति की समझाइस से कानूनी कार्रवाई न करने को तैयार तो हो गयी पर सामाजिक कार्रवाई करने की जिद पर अड़ी रही। शहर से गांव भतीजे के ब्याह में शामिल हुई । हंसी–खुशी हर कार्यक्रम में भाग ली । अपने मन की घाव का तनिक भी एहसा किसी को नही होने दी ।ब्याह हंसी–खुशी बित गया ।दुल्हन भी आ गयी । ब्याह के बिहान भर सौतेली मां का गुस्सा फूट पडा । अनबन तो दौलत के बंटवारे को लेकर पहले से ही थी । वह पूरी दौलत अपने कब्जे में करना चाहती थी पी कचहरी ने चार हिस्से करने का आदेश पारित कर दिया था । ज्ञानेश्वरी तो वैसे मरी हुई साबित हो गयी थी । सौतेली मां की बढती लालच और बाप की मेहनत की कमाई का सौतेली मां के मायके की तरफ होते रूख को देखकर और कोर्ट में हुए खर्चे को न देने की जिद पर अड़ी सौतेली मां से खार खाये ज्ञानेश्वरी के बड़े भाई सेठूमल ने गांव की पंचायत बुला दी वह भी ज्ञानेश्वरी के गवाही में । ज्ञानेश्वरी को भी ऐसे मौके की तलाश थी । पंचायत बैठ गयी । सेठूमल पंचों के सामने हाथ जोड़कर खड़ा हुआ ।
ग्राम प्रधान –सेठूमल पंचायत किस प्रयोजन बस बुलाये हो । अपनी समस्या पंचों के सामने रखो ।
सेठूमल–पंचो । छोटी मां ने बाप की छोडी सम्पति में बराबर का हिस्सा तो ले लिया पर कोर्ट –कचहरी में आये खर्चे के रूपये नही दे रही है । दोनों भाईयो ने भी कोर्ट

कचहरी के चक्कर मे हुए खर्चे की अभी तक भरपायी नही की है । छोटी मां तो एक पैसा न देने की कसम खा लिया है पंचों हमारे पास भी बाल बच्चे है,छोटी मां क्यों अन्याय कर रही है ।
सेठूमल की बात सुनकर दोनो छोटे भाई रतन और जतन बोले पंचों भईया हिसाब किताब कर एक–एक पाई ले लिये है । छोटी मां ने दिया है या नही वही जाने ।
सेठूमल आग बबूला हो गया । वह भागते हुए घर में गया और हिसाब की डायरी लेकर आया । पंचों के सामने एक–एक खर्च और रीन कर्ज का ब्यौरा सुनाने लगा । सेठूमल की बात न तो छोटी मां और नही भाई रतन,जतन ही मानने का तैयार थे ।
ग्राम प्रधान बोले–ज्ञानेश्वरी बेटी तू भी कुछ कहना चाहेगी ?
ज्ञानेश्वरी आंखों में आसू की बाढ लिये हाथ जोड़कर खड़ी हुई पर उसके मुंह से आवाज नही निकल रही थी । आंसू आंखों के बांध तोड़ चुके थे । वह कभी छोटी मां को निहाती तो कभी भाईयों को ।
ग्राम प्रधान बोले–बीटिया कुछ तो बोल । क्यो इतनी दुखी है ?
ज्ञानेश्वरी–पंचो मैं तो अपने बाप की औलाद ही नही हुई तो मुझे मां बेटों के बीच लेन–देन से उपजे आक्रोश के बीच में आने का तो हक ही नही बनता ।
ग्राम प्रधान–बीटिया क्या कह रही हो ।
ज्ञानेश्वरी–हां पंचों बाप के तो बस यही तीन भाई औलाद है । मैं तो पैदा ही नही हुई अपनी मां की कोख से तो मेरा क्या हक । वारिस तो तीनो भाई और छोटी मां है । मै तो अपने मां–बाप की नाजायज सन्तान हूं वह भी लड़की ।
ग्राम प्रधान–बेटी कौन कहता है कि तुम हरिहरबाबू की औलाद नही हो ।
ज्ञानेश्वरी–हलफनामा ।
ग्रामप्रधान–कैसा हलफनाम बेटी ।
ज्ञानेश्वरी–छोटी मां और बाप समान भाई सहब से पूछिये ।
ग्रामप्रधान–सेठूमल बीटिया क्या कह रही है ।
सेठूमल–प्रधानजी गलती तो हो गयी है ।
ग्रामप्रधान–कैसी गलती ?
ज्ञानेश्वरी–मैं बताती हूं ।
ग्रामप्रधान–बताओ बीटिया ।
ज्ञानेश्वरी–पंचों यह सत्य है कि लड़की पराई होती है लेकिन वह मायके के खूटें से भी वह अच्छी तरह बंधी रहती है क्योंकि वह मां–बाप,भाई–भतीजों और मायके के पूरे गांव के मान–सम्मान में अभिवृद्धि के लिये सदैव लालायित रहती है । उसी लड़की

को दौलत की लालच में सगे मां–बाप की औलाद होने का अधिकार छिन लिया जाये तो उस लडकी पर क्या बितेगी ?
ग्रामप्रधान–इतना बड़ा अपराध कैसे हो गया सेठूमल ।
सेठूमल–पंचो सभी जानते है पिताजी की छोड़ी सम्पति का केस कचहरी पहुंच गया था। चार साल में फैसला आया । केस की सुनवाई के दौरान बालिग वारिसों की सूची मांगी गयी तो हम भाईयो और छोटी मां ने आपस में रायमशविरा कर हलफनामा दे दिया की हमारी कोई बहन नही है । बाप के सम्पति के असली वारिस हम तीन भाई और छोटी मां है ।
ग्रामप्रधान–सेठूमल जिस ज्ञानेश्वरी को तुम लोगो ने झूठा हलफनामा देकर मृतक घोषित कर दिया है । वही ज्ञानेश्वरी दिल्ली के बैंक में जमा लाखो रूपया निकलवाने में तुम्हारी मदद की थी । एक पैसा भी भी नही ली थी। बेचारी खुद अपना पैसा खर्च की थी । तुम लोगो ने पैसे का बन्दरबांट किया था । यह तो पूरा गांव जानता है । इसके बाद भी तुम लोागे ने ज्ञानेश्वरी का कानूनी कत्ल करवा दिया ।
सेठूमल–गलती हो गयी पंचो ।
ग्रामप्रधान– इस गलती की सजा में तुम सब सलाखों के पीछे जा सकते हो ।
ज्ञानेश्वरी–पंचो हमें सलाखों के पीछे तो नही भेजना है और ना कानूनी झंझट में पडना है । हमारे अपने सगों ने हमारे सपनों की बारात में आग ही नही लगया है रिश्ते को भी लतिया दिया है । आज मैं इन खून के रिश्तेदारो का अपने कानूनी हत्या के जुर्म मे परित्याग करती हुए कहते हुए अपने घर–मंदिर की ओर दौड़ पड़ी ।

10–शवयात्रा

किसी जमाने में राजा के रफतार दल के प्रमुख रहे रफ्तार बाबा के घर से भोर में ही विलाप की आवाज जोर जोर से आने लगी ! विलाप की आवाज सुनकर शंका बढने लगी कि कही बाबा को तो कुछ नही हो गया ! बाबा कई दिनों से बीमार चल रहे थे !शंका सही साबित हुई ! बाबा दुनिया छोड चुके थे ! बेटी और बाबा की बूढी घरवाली बाबा की श्शव पर सिर पटक पटक कर विलाप कर रही थी ! क्यों ना करते,अब उनकी देखभाल करने वाला और ना ही बची थी कोई और सहारे की लाठी ! बेटी दमाद के रिश्तों में कडवाहट भर गयी थी !दोनों में अलगाव सा हो गया था ! बाबा को कोई और औलाद ना थी ! बाबा को आंख मूंदने के बाद अब सिर्फ दो मजबूर महिलायें रह गयी थी ! विलाप सुनकर आसपास के लोग इक्टठा हो गये ! कुछ लोग रिश्तेदारो परिजनों के पता ढूढने लगे ताकि मौत का संदेश भेजा जा सके ! कुछ लोग अन्तिम संस्कार के सामान के इंतजाम में जुट गये! बाबा के घर के सामने भीड कुछ ज्यादा ही इक्टठा हो गयी थी इसी भीड में दीनानाथ भी

शामिल था ! तैयारी होते होते श्शाम होने को आ गयी !अन्ततः अन्तिम याव्रा प्रारम्भ हो गयी ! कुछ लोग कंधा दिये कुछ बगैर कंधा दिये ही चलते बने ! अब भीड बिल्कुल छंट गयी थी ! गिने चुने लोग ही बचे थे छुटटी का दिन होने के बाद भी ! श्शव को श्मशान तक ले जाने लायक ही लोग ना बचे सब अपने अपने घरो को चले गये ! बचे हुए लोगो में से ज्यादातर बूढे थे जो खुद का बोझ ढोने में अस्मर्थ लग रहे थे !शव भी भारी था ! कुछ दूर जाते ही सब हांफने लगे थे ! दीनानाथ जैसे बहुत कम ही लोग थे हृप्टपुप्ट जवान जो बडे सम्मान के साथ चल रहे थे! सच लग रहा था किसी मानवतावादी नेता का जनाजा निकल रहा है !शव ढोने में बडी मश्कत करनी पड रही थी ! हर आदमी एक दूसरे को आशा भरी निगाह से देखता ताकि कंधे का भार थोडी देर के लिये उतर जाये !बडी मश्कत के बाद श्शव याव्रा अपने ठिकाने पर पहुंच सकी !
मुखाग्नि रफतार बाबा के किसी नजदीक के रिश्तेदार ने दी ! बाबा पंचतत्व में विलीन हो गये लोग अपने अपने घरों को चलते बने !घर पहुंचते पहुंचते काफी रात हो गयी ! दूसरे दिन सुबह सुबह मि.तलवार बाबू की मुलाकात दीनानाथ से हुई जो पास में ही रहते थे रफतार बाबा के घर के दस मकान छोडकर ही रहते थे जो खुद को बहुत बडा महान समझते थे श्शायद बडी बिरादरी का होने के नाते ! दीनानाथ ने रफतार बाबा की मौत की दास्तान सुनाई !
मि.तलवार दांत साफ करते हुए मुस्कराते हुए बोले मालूम हैं दीना घर पर ही तो था ! कहकर खिस निपोर दिये
दीनानाथ बोला फिर भी श्शव याव्रा में नही श्शामिल हुए !
मि.तलवार बोले हां दीना नही श्शामिल हुआ यही ना जानना चाह रहे हो !
दीनानाथ बाबा तो आपके ही बिरादरी के थे !
मि.तलवार तो क्या हुआ ! अपने घर के तो नही थे ! हजारों लोग मरते हैं दीना ! आकाश की ओर देखते हुए मि.तलवार बोले !
दीनानाथ अरे मि.तलवार जी कालोनी की बात थी ! यहां तो सभी परदेसी हैं !
मि.तलवार तो क्या हुआ ! अच्छा छोडों तुम बताओ कंधा तो नही दिया ना !
दीनानाथ कैसे ना देता ! लोग तो कम थे श्शव यात्रा में ! कोई ढोने वााला भी न था ! भइया कंधा ही नही ढोना भी बहुत पडा था ! देखो कंधा लाल हो गया हैं !
मि.तलवार विस्मय भरे अन्दाज में बोले गजब हो गया !
दीनानाथ क्या हो गया कौन सा गलत काम कर दिया मि.तलवार बाबू !
मि.तलवार अनर्थ कर दिया तुमने !
दीनानाथ क्या कर दिया भईया !

मि.तलवार बाबू सत्यानाश जो नही करना था कर दिया ! तुम्हे तो श्शव छूना ही नही चाहिये था !
दीनानाथ क्यों बूढी अम्मा और उनकी बेटी को लाश लेकर रोने देना था ताकि वे भी तडप तडप मर जाती ! हमारे जैसे लोगो ने ही तो बाबा की लाश को श्शमशान तक पहुंचाया ! हम लोग ना होते तो शायद लाश मशान तक ना पहुंचती बेचारी लाचार औरते सिर पटकती रहती !
मि.तलवार कुछ भी होता चाहे लाश सड जाती पर तुमको हाथ नही लगाना था !
दीनानाथ अच्छा तो आप यह कहना चाह रहे हो कि मैं श्शूद्र हूं इसलिये बाबा की लाश को नही छूना था ! यही ना ! अरे इसानियत भी तो कुछ चीज होती हैं ! अरे इंसानियत जिन्दा हैं अभी ! जाति से बडी इंसानियत हैं भइया !
मि.तलवार तुमने सत्यानाश कर दिया अब बाबा की आत्मा को शान्ति नही मिलेगी !दीना तुमको कंधा ही नही देना चाहिये था ! अरे परम्परायें तो अभी जवान हैं ! तुम्हारे तोडने से टूट जायेगी क्या ! तुमको शव यात्रा में ही नही श्शामिल होना था !श्
दीनानाथ वाह रे परम्परा ! श्शव दरवाजे पर गोधूलि बेला तक पडी थी तब तो घर से परम्परावादी और जातिवाद के पोपक बाहर ही नही निकले ! बाबा तो आपकी ही बिरादरी के थे मि.तलवार बाबू ! हमारे जैसे लोगो ने शव को श्मशान पहुंचाकर गलती कर दिया !तलवार बाबू शव तो शव है चाहे जिसका हो !
मि.तलवार कुछ भी सफाई में कहो पर दीना एक शूद्र को उच्च जाति की श्शव को हाथ नही लगाना चाहिये ! ए वही तलवार बाबू थे जो एक शूद्र मां की छाती चूसकर सांसे भर रहे थे! मि. तलवार बाबू अरे क्या जमाना आ गया हैं ! शूद्र सवर्ण की लाश को श्मशान ले जाने लगा हैं ! शव को कंधा देने लगा हैं ! मि.तलवार अपनी विषवाणी से आदमियत का खून करे दांत साफ करते हुए आगे बढने लगे ।
दीनानाथ बोला–मूछो पर ताव देने वाले बाबूजी जाति के नाम पर कब तक आदमियत के सपनो की बारात का जनाजा निकालते रहोगे ? कब तक आदमी के जनाजे की उर्वरा से जातिवाद को पोषित करोगे ? भगवान आदमियत के दुश्मनों को सद्बुद्धि बख्शे कहते हुए मौन खड़ा हो गया प्रार्थनारत् ।

11– ज्योति

ठण्डी का यौवन दिसम्बर का बचपन,झाबुआ का आदिवासी दुर्गम इलाका । डां. सेवाराम पसीने से तरबतर 250 नेत्र आपरेशन बडे,छोटे एवं सुक्ष्म और हौसला बिल्कुल जवां ।डां.माणिकचन्द पसीना सूखाने की नियति से शिविर के प्रवेश द्वार पर

खडे ही हुए थे कि एक बूढी बेबस लाचार औरत अपने बेटे का सहारा बनी, शिविर के सामने ठिठकते हुए डां. साहेब से पूछ बाबू जी डां.सेवाराम कहां मिलेगे ।
डां. साहेब–अम्मा जी डां.सेवाराम से क्या काम है ।
बूढी अम्मा–बाबू जी अंधो को ज्योति देने वाले डां.साहेब को नही जानते ।
डां.साहेब–नहीं अम्मा ।
बूढी अम्मा–बाबूजी वे तो कारे के उजियारे है । डां.सेवाराम नही जानते बाबू जी । उनको तो दुनिया जानती है यदि डां.सेवाराम को नही जानते तो किसी को नही जानते । बाबूजी बुरा नही मानना ।
डां. साहेब–अम्मा वो कैसे कारे के उजियारे हो गये ।
बूढी– वे तो बहुत बडे डांक्टर है आंखों के । रोशनी विहीन आंखों को रोशनी दे देते हैं । बाबू जी आपको इतना पता नही हैं । अच्छा ये बता सकते हो । वो आंखो के आपरेशन का शिविर कहां लगा हैं । शहर में अखियां चौंधिया गयी है बाबू जी ।शिविर किधर लगा है बस इतना ही बता तो बाकी मैं ढूढ लूंगी डां. साहेब को ।
डां. साहेब– हां अम्मा यह तो मालूम हैं आ जाओ मेरे साथ ।
डां. साहेब आगे आगे बूढा अम्मा बेटे का हाथ थामे पीछे पीछे । डां. साहेब शिविर के अस्थाई मरीज परीक्षण कक्ष में अम्मा को बैठने का अनुरोध करते अपनी कुर्सी पर बैठते हुए बोले बोलो अम्मा क्या काम है डांक्टर डां.माणिकचन्द से । मैं ही हूं ।
बूढी अम्मा–बाबू जी आप ।
डां. साहेब– हां अम्मा मैं ।
बूढी अम्मा–जी मेरी बुढोती की लाठी टूट रही है असमय । बडी उम्मीद से आयी हूं कि आप मेरी लाठी को टूटने ना दोगे । बाबू जी बचा लो मेरी लाठी को ।
डां.साहेब–अम्मा उदास ना हो । थोडा वक्त तो दो ।
बूढी अम्मा–बूढी हो गयी हूं । सठिया गयी हूं , गरीबी का बोझ तो माथे था ही अब जवान बेटे की आंख का चला जाना भी दुख के समन्दर में ढकेल दिया हैं बेमौत मरने को बाबूजी । बेटवा के अलावा अब तो कुछ सूझता ही नही बाबू जी।
डां.साहेब बूढी अम्मा को सान्तवना ही दे रहे थे कि इतने में शिविर के आयोजक लोग आ गये ।डां.साहेब से बोले साहेब रात ढेर बित चुकी हैं थोडा खाना खा कर अराम कर लीजिये । डां.साहेब उनके अनुरोध को ठुकराते हुए बोले आप लोगो को हमारी फिक्र हैं मैं आप सब का एहसानमन्द हूं । हमारे सामने एक बूढी मां अपने जवान बेटे जिसकी ज्योति चली गयी हैं उसके इलाज का अनुनय विनय कर रही हैं !दुख के आसूं बहा रही हैं । ऐसे समय में खाना और अराम तो सम्भव नही हैं । समस्या के निदान का समय है ।

आयोजनकर्ता–डां.साहेब अब तक तो आप 250 आपरेशन कर चुके है और अभी तक आपने नाश्ता भी किया नही है और ना ही अराम ।
डां.साहेब देखिये मानव सेवा ही हमारा कर्म और धर्म बन चुका है।मैं कोई समझौता करने को तैयार नही ।
आयोजक–डां.साहेब आप बहुत थक गये हेागे ।
डां.साहेब–बिल्कुन नही । मैं जरा भी थकावट महसूस नही कर रहा हूं ना ही भूख ही ।मेरा तो उदेश्य है मानवसेवा ।आप लोग जरा मेहरबानी कीजिये थोडा सा वक्त दीजिये ताकि एक मां की उम्मीद को प्राणवायु दे सकूं ।
डां.साहेब बूढी अम्मा से बात करने लगे । अम्मा कब से आपके बेटे को तकलीफ है ।
बूढी अम्मा–बाबू जी पिछले साल से है तकलीफ कांपते हुए बोली ।
डां.साहेब–अम्मा ठण्ड लग रही है ।
बूढी अम्मा–बाबूजी हडिडयां बोल रही है।
डां.साहेब अम्मा को हीटर के पास बैठाते हुए बोले अम्मा आग सेको पर हाथ नही लगाना,नही तो करण्ट लग जायेगी । याद रखना । थोडी देर बैठो गर्मी लगने लगेगी । तकलीफ के विपय में आपके बेटे से जान लूंगा ।
बूढा अम्मा– बाबूजी आप हमारे बेटे के समान ही हो ।
डां.साहेब– हां वो तो हैं । अम्मा आप हाथ सेंको में तकलीफ के विपय में जानकारी ले लेता हूं ।
बूढी अम्मा–ठीक है बाबूजी ।
डां.साहेब अपनी कुर्सी पर बैठते हुए पूछे क्यों भाई आपका नाम क्या हैं और कब से नही दिखायी पड रहा है ।
बाबूजी गोपी नाम हैं पिछले साल से ही नही दिखाया पड रहा है । बिल्कुल ही
डां.साहेब–पिछले साल से ।अच्छा ये तो बताओ दारू तो नही पीते थे ।
गेापी– बाबू जी दारू और ताडी के बिना तो सकून ही नही मिलता ।
डां.साहेब–गोपी को पेशेण्ट टेबल पर लिटा दिये ।सघन आंख की चेकिंग किये । इसके बाद गोपी को कुर्सी पर बैठाये तब बोले गोपी मामला तो बहुत गम्भीर हैं पर घबराओ नही । अभी भी उम्मीद बाकी है । पहले आते तो अच्छा होता । खैर छोडो , तुमको ज्योति मिल सकती हैं पर तुरन्त आपरेशन करना होगा ।
डां.साहेब की बात सुनकर बूढी अम्मा की आंखों में जैसे रोशनी बढ गयी एकदम से आग तापना छोडकर डां.साहेब के पास आ गयी और बोली क्या बोले बाबूजी जरा एक बार और बोलो ना ।
डां.साहेब–अम्मा गोपी फिर से दुनिया देख सकेगा ।
बूढी अम्मा–बाबू जी कारे में उजियारा डालकर बडा उपकार करोगे ।

डां.साहेब–अम्मा जी कोशिश तो पूरी करूंगा पर मेरी फीस ।
बूढीअम्मा–मतलब रूपइया बाबू जी वह तो मेरे पास नही है ।
डा.साहेब–अम्मा बिना फीस के कैसे काम होगा । सबने फीस दिये है । फीस तो चाहिये ही ।
बूढी अम्मा–बाबू जी मै। बेबस लाचार अंधे बेटे की मां। कैसे बन्दोबस्त करूंगी। मेरी झोली तो खाली हैं । गरीबी,भूखमरी ने मेरी झोली को चाल डाले है । मेरी झोली में कुछ थमता ही नही । कैसे फीस दे पाउंगी
डां.साहेब अम्मा तुम नही दे पाओगी तो क्या हम गोपी से ले लेगे डां.साहेब मुस्कराते हुए बोले क्यो भाई गोपी दे सकोगे ।
गेापी– मां न तो सब दास्तान कह दिया है। खैर मेरी औकात में होगा तो जरूर दूंगा ।
डां.साहेब– गोपी तुम तो बहुत धनी हो । तुम्हारे पास मां तो है । तुम दे सकते हो तभी तो मांग रहा हैं।
गोपी –मांग लो साहेब ।
डां.साहेब– मेरे भाई फिर मुकरना नही ।
गेापी–साहेब औकात में है तो जरूर दूंगा चाहे मुण्डी ही कट जाये ।
डां.साहेब–पक्का ।
गेापी– हां साहेब पक्का ।
डां.साहेब–वचन देना होगा ।
गेापी–हां साहेब वचन दिया । दे दूंगा क्या मांग रहे हैं ।
डां.साहेब– गोपी दारू.....
गेापी– क्या.... दारू.....
डां.साहेब–हां गोपी दारू.....
गेापी–यही वचन मांग रहे थे दे दूंगा साहेब.....
डां.साहेब दे देागे ।
गेापी– हां साहब ।
डां.साहेब– फिर देरी किस बात की दे दो वचन गोपी की अब कभी दारू नही पीओगे ।
गेापी–क्या मांग लिया साहेब ।
डां.साहेब– वचन दिये हो गोपी मुकरना नही । कसम खाओ अब कभी दारू नही पीओगे ।
गेापी–ठीक है साहेब अबतो मैं नही पाउूंगा और औरो को भी पीने से माना करूंगा ।
डां.साहेब– श्शाबास गोपी श्शाबास । मिल गयी फीस ।

बूढी अम्मा की आंखों में रोशनी के साथ श्शरीर में ताकत भी बढ गयी यह सुनते ही । वह उछल पडी और बोली वाह बाबूजी क्या तुमने फीस ली है ।
डां.साहेब–अम्मा मेरे जीवन का उदेश्य ही है मानव सेवा तभी तो डांक्टर बना हूं । अपने कर्म पथ पर सतत चलता रहता हूं चाहे चम्बल के दुर्गम स्थल हो बस्तर हो या झाबुआ का आदिवासी इलाका । मुश्किलो से खेलकर भी इलाज करने निकल पडता हूं रात हो या दिन ।
बूढी अम्मा– हां बाबू जी डांक्टर के वेप में सचमुच भगवान हो ।
डां.साहेब अम्मा निश्चिन्त होकर बैठो आपरेशन के बाद गोपी देखने लगेगा ।
बूढीअम्मा–बाबूजी गोपी को दुनिया दिखा दो फिर से ताकि मैं चैन से मर तो सकूं मुसीबतो मे जीकर भी ।
डां.साहेब –ऐसा ना कहो अम्मा ।
बूढी अम्मा–बाबूजी गोपी देखने लगेगा तो मुझे मौत भी आ जाये फिर कोई रंज नही रहेगा।मेरी लाठी मजबूत तो हो जायेगी ।
डां.साहेब –जरूर मजबूत होगी और बेटे का सुख भी तो भोगना है ।
बूढी अम्मा–हां बाबू जी बेटा की कारी जिन्दगी में रोशनी भर जाये दो रोटी कमाने खाने लगे बस इतना सा ही तो अपना ख्वाब है ।
डां.साहेब–अम्मा भगवान पर भरोसा रखो कहकर डा.साहेब गोपी को आपरेशन थियेटर में ले गये ।गोपी का आपरेशन बडा था । आपरेशन होते होते बारह बज गये राति्र के इस बीच कई बार बिजली भी गयी पर आपरेशन कामयाब रहा ।डां.साहेब आपरेशन थियेटर से हंसते हुए निकले और गोपी की मां से बोले अम्मा अब गोपी देखने लगेगा बस पटटी खुलने तक इंन्तजार करो ।
बूढी अम्मा–बाबू जी भगवान तुमको लम्बी उम्र और हर कदम पर कामयाबी दे ।
बूढी अम्मा की बात अभी पूरी भी नही हुई थी कि 500 आदिवासी भाई बहन ढोल नगाडे बजाते गाते आ गये और डां.साहेब की जयजयकार करने लगे । कुछ लोागो ने डा.साहेब को कंधे पर बिठा लिया क्योंकि डा.साहेब 251 आपरेशन कर चुके थे ।पूरी रात खूब जश्न मना। डा.साहेब ने भी खूब लुत्फ उठाया !रात कब बित गयी पता ही नही चला ।समय बितता चला गया। मरीजों की आखों पर से पटटी खोलने का भी समय आ गया । डां..साहेब एक एक मरीज की पटटी खुद अपने हाथो से खेालते गये और बधाई देते भी ।गोपी की आंख की पटटी खोलने का क्रम सबसे आखिरी था ।उसका भी क्रम आया ।डां.साहेब गोपी से पूछे भाई गोपी सबसे पहले किसको देखना चाहोगे ।
गेापी–डा.साहेब आपको और मां के हाथो से पटटी खुलवाना चाहूंगा ।

डा.ंसाहेब– ठीक हैं गोपी,भगवान तुम्हारा भला करें ।डा.ंसाहेब गोपी के सामने बैठ गये और गोपी की मां के हाथो पटटी खोली गयी ।
बूढी अम्मा– दिखाई दिया बेटा ।
गेापी – हां अम्मा सामने भगवान बैठे हुए है ना कहकर डां.साहेब का पैर छूने को लटकने लगा डा.साहेब नही गोपी नही मेरे भाई कहकर गल से लगा लिये ।
गेापी के जीवन का कारा छंट चुका था । पूरा शिविर परिसर और आसपास के गांव भी खुशी में तरबतर थे । डा.ंसाहेब को दूसरे मिशन पर जाना था पर श्रघ्दालु लोग छोडने को राजी ना थे । सच सच्चे मन से की गयी मानव सेवा का प्रतिफल भी तो अच्छा ही होता हैं यही तो भगवान महावीर बुघ्द,ईसा ने भी किया ।डां.साहेब को दूसरे मिशन पर जाना जरूरी था बडी मुश्किल से वे वहां से निकल पाये ।इसके पहले 500 आदिवासी भाई बहनो ने डां.साहेब की पूजा अर्चना किया । गोपी की बूढी मां डां.साहेब के आगे हाथ जोडकर खडी हो गयी बोली बाबू जी आपने मेरी और मेरे बेटी के कारे जीवन में ज्योति भर दिया जाओ बाबूजी सदा सुखी रहो । अधियारे से भरे जीवन को ज्योति देने चल पडे डां.सेवाराम सपनों की बारात को कुसुमित किये ।
11 खून के छींटे ।
सूरजदेवता गांव की दहलीज पर पांव भी नही रखे थे लेकिन अधियारा छंटने लगा था। गोपाल भैंस और दोनो बैलों को हौदी पर लगाकर ओसारी मे खटिया पर डेबरी की रोशनी में पढने बैठ गया। दो पन्नेपलट ही पाया था कि वह मोती को आता हुआ देखकर पढाई छोड़कर उसकी तरफ दौड़ पड़ा। पास पहुंचकर गोपाल साइकिल का हैडिण्डल पकड़ लिया । मोती साइकिल से उतर गया ।
गोपाल–भईया सब तो ठीक है ना ।
मोती–गोपाल सब छोड़ पहले तो तू ये बता तेरे बाबू कहा है ?
गोपाल–भइया इतनी घबराये हुए क्यो हो। कोई अनहोनी हो गयी है क्या ?
मोती–गोपाल वक्त बहुत कम है । मुझे तुरन्त वापस जाना होगा । तू तो ये बता तेरे बाबू कहां है ।
गोपाल–भईया कुछ जरूर छिपा रहे हो क्योकि तुम्हारी आंखों में आंसू और चेहरे पर घबराहट । भईया तुम तो ऐसे घबरा रहे हो जैसे चोर दरोगा को देखकर ।
गोपाल दसवी की परीक्षा दे चुका था और ग्यारहवी की तैयारी कालेज खुलने से पहले से करने लगा था । उसके सामने मोती घबराहट के बोझ से दबा जा रहा था । उपर से गोपाल के सवाल पर सवाल ।मोती आंखों को गमछे में मसलते हुए बोला गोपाल मैं बहुत परेशान हूं । तेरे बाबू कहां है उनसे जरूरी संदेश देकर मुझे तुरन्त लौटना है ।

भईया ऐसा कौन सा जरूरी संदेश है जो मुझसे नही कह सकते बाबू से कहोगे । खड़े क्यों हो भईया बैठो दातून करो । पानी पीओ। बाबू जमीदार के काम पर चले गये है मैं बुला लाता हूं दौड़कर ।
मोती के आखों के आंसू नही रूके बह निकले । वह आंसू पोछते हुए बोला जल्दी बुलाकर लाओ बहुत जरूरी काम है ।
गोपाल–भाईया मुझे बताओ ना ।
मोती–नही तू तो जो अपने बाबू को बुलाकर ला ।
गोपाल–भईया जमींदार बाबू को नही आने देगे तो ।
मोती–बोल देना भईया पाही पर से जरूरी संदेश लेकर आये है ।
गोपाल–भईया जमीदार नही आने देगे । कहेगे जा अपने भईया को भेज दे ।
मोती–कह देना फरसाधारी दादा की तबियत खराब है ।
गोपाल–क्या ?
मोती–हां अब देर ना कर जल्दी जा बिना कोई सवाल किये ।
गोपाल–जा रहा हूं भईया ।
इतने में दोनो हाथो में गोबर लगाये उसकी मां गौशाला से बाह निकल आयी और बोली कहां जा रहा है गोपाल ।
मोती–फुआ बड़े फूफा की तबियत अचानक बहुत खराब हो गयी है । आजमगढ अस्पताल में भर्ती करवाने के लिये मझले फूफा और गांव के लोग निकलने वाले थे । मैं भागकर संदेश देने आ गया । कहकर मोती जोर से रो दिया । जेठ जी कि तबियत अचानक कैसे खराब हो गयी । दौड़कर जा गोपाल अपने बाबू को बुलाकर ला तो ।
मोती–रूक गोपाल मैं भी तेरे साथ चलता हूं । तू मुझे दूर से बताकर वापस आ जाना मैं फूफा से बात कर लूंगा । मेरी बात सुनकर जमीदार छुट्टी भी दे देगे ।
गोपाल–ठीक है भईया चलो कहकर गोपाल आगे –आगे चल दिया और मोत उसके पीछे हो लिये। गोपाल दूर से मोती का जमीदार का घर दिखाते हुए बोला देखो भइया सबसे बड़ी हवेली है ।
मोती–हवेली तक चल ना दूर से दिखा कर तू भागाना चाहता है ।
गोपाल–चलो हवेली तक छोड़ आता है ।
मोती–अनजान हवेली और वहां के लोग है ।तर–तरह के सवाल पूछेगे । तू साथ रहेगा तो दिक्कत नही होगी ।
गोपाल–अब क्या आ गये वो तख्त पर लाल मूंगवा जैसे बड़े जमीदार बैठे हुए है । देखो बाबू हल लेकर निकल रहे है ।वह आगे बढकर बोला बाबू ये पाही से मोती भइया आये है ।

मुसीबत हल रखकर बैल खोलने के लिये हौद की ओर लपका इतने में जमीदार बोले ओर मुसीबत वो देख तेरा बेटवा किसी को साथ लेकर आ रहा है । तुमको आवाज दिया है तुम सुन नही रह हो ।
मुसीबत –क्या गोपाल स्कूल नही गया ?आने दो खबर लेता हूं ।
जमीदार–मुसीबत पूरी बात सुन ले फिर तमतमा लेना । गोपाल के साथ तुम्हारा कोई नात भी है ।
मुसीबत–अरे बाप रे मोती भिन्सहरवै चल दिया था क्या ? कौन सी विपत्ति आन पड़ी । वह बैल खूंटे से बांधकर मोती की और कदम बढाया । मोती ठिठक गया । मोती को परेशान देखकर वह बोला मोती बेटा इतना सबेरे कैसे आना हुआ सब ठीक तो है ना ?
मोती–नही फूफा ।
मुसीबत–क्या हुआ बेटा ?
मोती–बहुत बुरा हुआ फूफा कहकर रोने लगा ।
मोंती को रोता हुआ देखकर जमींदार भी तख्त पर से उठकर मोती के सामने आकर बोले क्या हो गया मुसीबत येलड़का रो क्यो रहा है ?
मुसीबत–मालिक अभी तो कुछ बताया नही बस रोये जा रहा है ।
जमींदार दूसरे मजदूर को आवाज लगाते हुए बोले अरे अरे खलीफा पानी लाओ दौड़कर । नही मालिक प्यास नही है । फूफा को मेरे साथ चलना होगा ।
जमीदार–अरे हुआ क्या है कि मुसीबत को साथ ले जा रहे हो ?
मोती–फरसाधारी फूफा नही रहे ।
जमीदार– अचानक क्या हो गया । कुछ दिन पहले तो आया था । ठीक ठाक लग रहा था । कौन सी बीमारी लग गयी । मजदूर टोलो से लेकर जमीदारों की बस्ती तक फरसाधारी के मरने की खबर फैल गयी । मुसीबत के दरवाजे पर पूरे मौजे के लोग इक्ट्ठा हो गये । मुसीबत मालिक के कुछ रूपये कर्ज लिया और घर आया । बस्ती के पन्द्रह लोग साइकिल लेकर तैयार थे फरसाधारी के जनाजे में शामिल होने के लिये । मुसीबत चलने की तैयारी करने लगा । गोपाल भी जाने के लिये दौड़कर किसी की साइकिल मांग लाया । बार–बार के मना करने पर नही मान रहा था । मुसीबत के मना करने पर रोने लगा । आखिरकार 25 कोस की दूरी साइकिल से नापने के लिये गोपाल भी चल पड़ा । जाते–जाते दोपहर होने को आ गयी ।मोती घबराये जा रहा था इतने में पाही के कुछ लोग इंतजार करते मिल गये ।
रामकरन आगे बढकर आया और बोला बहुत देर कर दिये मुसीबत बहनोई ।
मुसीबत–यहां क्या कर रहे हो ?
रामकरन–तुम लोगो की इंतजार कर रहा हूं ।

मुसीबत–क्यू ? हम तो आ रहे है । 25 कोस की दूरी साइकिल से आना टेम तो लगेगा ।
चुलबुल–लाश तो आजमगढ गयी ।
मुसीबत–आजमगढ क्यों ।
रामकरन–पोस्टमार्टम के लिये ।
मुसीबत–पोस्टमार्टम क्यों ?
रघुवर–आत्महत्या का केस है । लाश पेड़ पर लटकी मिली है ।
मुसीबत–भइया ने आत्महत्या क्यों की इतने कहते ही गश खाकर गिर पड़ा । गोपाल दौड़कर पोखरी में से गमछा गिलाकर लाया और अपने बाप का चेहर गिला करना लगा । तनिक देर में वह उठ बैठा और बोला गोपला दस कोस और तुमको साइकिल चलानी पडेंगी बड़े ताउजी की लाश लेने जाने के लिये । सुन रहा है ना ये लोग कह रहे है फरसाधारी भइया ने आत्महत्या कर लिया है । चलो मुसीबत गिरते सम्भलते साइकिल उठाया और सबसे आगे –आगे चलने लगा ।भूख प्यास से लस्त–पस्त चार घण्टे जी–तोड़ साइकिल चलाने के बाद आजमगढ चीरघर पहुंचे । गम्भीरपुर थाने की कार्रवाई पहले ही पूरी हो चुकी था । ले–देकर बस पोस्टमार्टम होना था ।फरसाधारी की लाश पोस्टमार्टम के लिये लाइन में लगी थी । डाक्टर कुछ देर पहले हुई लाश के पोस्टमार्टम के परिजनो से चर्चारत थे । इतने में पोस्टमार्टम रूम से जल्लाद बाहर आया । गड़साधारी को इशारे से बुलाया,कुछ उसके कान के पास बोला गड़साधारी ने एक खजूर छाप धीरे से थमा दिया ।इतने में चीर–फाड़ करने वाले चिकित्सक ने गड़साधारी को बुलाया वहां भी वही रूपये का लेन–देन हुआ । बस क्या कुछ ही देर में फरसाधारी की लाश ढेर के रूप में बाहर आ गयी । फरसाधारी की लाश को देखकर मुसीबत बोला भईया बड़े भाई साहब ऐसे तो पाही पर नही आये थे तुम तो भईया की गठरी बना दिये । तुम सगा भाई होकर भाईयों के सपनों की बारात में आग क्यों लगा दिये ? मुसीबत के सवाल से गड़साधारी को पसीने छूट पड़े ।
कुछ ही देर में फरसाधारी के शव के चिथड़ों को सजा–संवार टौस नदी के किनारे पर लाया गया । मुसीबत के मुखाग्नि देते ही लाश को पत्थर बांधकर पानी में फेंक दिया गया । गड़साधारी पाही यानि ससुराल की ओर चल पड़ा जहां तीनो भाईयों ने मिलकर पांच बीघा जमीन खरीद लिया था जिस जमीन पर फरसाधारी खेती करता था और मुसीबत साथ आये पैतृक गांव वालों के साथ अपने गांव की ओर ।
मुसीबत के घर से विलाप की लपटे उठ रही थी और गांवों में फरसाधारी की आत्महत्या की खबर का हा–हाकार । मुसीबत भाई के क्रियाकर्म में जुट गया ।

गड़साधारी घाट के दिन सूरज डूबते आया और चला गया । तेरहवी के दिन भी उसके बेटी दमाद और रिश्तेदार तो आये नही
गड़साधारी भी जरूर काम है कहकर सूरज उगने से पहले रवाना हो गया ।
समय बितता रहा । समय की मार ने फरसाधारी के मौत के रहस्य उजागर कर दिये फरसाधारी की मौत आत्महत्या नही हत्या थी । गड़साधारी ने बेटी दमाद के मोहफांस में आकर फरसाधारी की हत्या करवा कर लाश को पेड़ पर लटकवा दिया था सिर्फ फरसाधारी और मुसीबत की पाही की जमीन पर कब्जा करने के लिये । कहां गया है समर्थ दोष नही गोसाई वही हुआ । मुसीबत कोर्ट कचहरी भी किया पर हाथ लगी बर्बादी । गड़साधरी का दमाद खरभूराम गड़साधरी के पैसे के बल पर सभी को खरीद लिया खुद फरसाधारी के खून के छींटों से नहाई पांच बीघा जमीन का मालिक बन बैठा । बेचारा मुसीबत का मारा मुसीबत असहाय सा देखता रह गया जिन्दा होकर भी कानून की निगाहो मरा साबित हो गया।
समय अपनी गति से बित रहा था । खरभूराम मुसीबत के पैतृक गांव के घरोही की जमीन भी हड़पने की भरपूर कोशिश कर लिया पर गांव वालों के मुंहतोड़ जबाब से वह पीछे लौट गया ।समय ने करवट बदला उसका बेटा गोपाल पढाई तो बड़ी मुश्किल से किया था ,कई बरसों की लम्बी बेरोजगारी के दिन भी काटने पडे थे परन्तु मां बाप की तपस्या के प्रतिफल स्वरूप गोपाल को नौकरी मिल गयी । धीरे–धीरे मुसीबत के दिन फिरने लगे । उधर गड़साधारी और उसके परिवार को भूत का भ्रम सताने लगा। इसी भ्रम में वे बीमार रहने लगे । उन्हे शंका सताने लगी कि फरसाधारी मरने के बाद भूत हो गया है । फरसाधारी की आत्मा का वे बनारस,कामख्या और ना जाने कहां कहां ले जाकर तर्पण करवाये पर भ्रम का भूत खत्म नही हुआ बढता ही गया । इसी भ्रम में गड़साधारी और उसकी घरवाली बेटी दमाद के लिये बोझ साबित होने लगे । रोटी के लिये कुत्ते–बिलियों की तरह टकटकी लगाना शुरू हो गया । गड़साधारी के आंखों में आसूं देखकर गांव वाले कहते खुद के सपनो की बारात में भाईयों का हक मारकर बजी शइनाई के स्वर देर सबेर मातमी तो होते ही है । फरसाधरी के खून के छींटो से संवरी पांच बीघा जमीन जीवधारी हो गयी है आने वाले समय में भी आंसू का कारण बनी रहेगी । स्वर्ग नरक सब धरती पर है । भाईयों के सपनो की बारात को जनाजे में बदलने वाला सगा भाई कैसे सुखी रह सकता है ?

12–कत्ल–ए–बयां ।

भवानीनन्दन दफतर से आते ही कमरे में बिछी चटाई पर पसर गये । भवानीनन्दन को चारो खाने चित पसरा देखकर पुष्पा की चुन्नी खडा हो गयी। वह दौड़कर लोटे में पानी लायी और आंचल पानी में भीगोकर भवानीनन्दन का माथा पोछते हुए कहने लगी क्यों चिन्ता में डूबे रहते हो । अरे बड़े ओहदेदार नही हुए तो क्या छोटे तो हो। ठीक है योग्य हो।तुम अपनी योग्यता को रचनात्मक कामों में लगाकर चिन्ता मुक्त तो हो सकते हो ।

भवानीनन्दन–थोड़ा शान्ति रखो ।

पुष्पा–क्यों घूटते रहते हो । बातों का बोझ चिन्ता बढाता है । आज फिर दफतर में कोई दुर्व्यवहार कर दिया क्या ? देखो दफतर की बात घर मत लेकर आया करो ।जानती हूं छोटा ओहदेदार अगर अधिक योग्य होता है तो चारो ओर से भूकम्प का सामना करना पड़ता है । तुम उठो हाथ पांव धोओ । मै तुलसी अदरक डाल कर चाय बनाती हूं ।

भवानीनन्दन–भागवान जो बनाना हो बनाओ । कुछ देर के लिये अकेला छोड़ दो ।मैं क्या–क्या कत्ले–बयां करूंगा ?

भवानीनन्दन की बात खत्म भी नही हुई कि टेलीफोन घनघना उठा । भवानीनन्दन गरजे पुष्पा दौंडकर फोन उठाओ तुम्हारा है ।

पुष्पा–नही तुम्हारा है तुम उठाओ ।

भवानीनन्दन– बाप रे बाप क्या किस्मत हो गयी है ।उधर दफतर वाले दिन भर कोसते रहते है । घर में बीबी का हुक्म ।

पुष्पा–अरे अब तो उठाओ ।

भवनीनन्दन–हां उठाता हूं कहते हुए रिसीवर उठाकर बोल कौन भाई साहब.....

दानवीर–हां । बड़ी देर कर दी फोन उठाने में कोई खास बात हो गयी क्या ?

भवानीनन्दन–क्या खास बात होगा । हां सपनों की बारात पर डाका जरूर पड़ जाता है ।

दानवीर–क्या ?

भवानीनन्दन–हां ।

दानवीर–मतलब कत्ल–ए–बयां ? भइया रविवार को मिलता हूं ।

भवानीनन्दन–कत्ल–ए–बयां सुनने के लिये ।

दानवीर–मन का बोझ कम करने के लिये ।

भवानीनन्दन–ठीक है। यहां तो मझधार में नईया डूबोने वाले बहुत है । अपनों के सामने मन कत्ल–ए–बयां में कोई बुराई नही ।

रविवार के दिन दानवीर जल्दी आ धमके । पुष्पा ने बढिया चाय नाश्ते का इन्तजाम किया । चाय की चुस्की लेते हुए दानवीर बोले भाई साहब आप किस कत्ल की बात कर रहे थे फोन पर ।
भवानीनन्दन–मेरा कत्ल–ए–बयां कोई कथा नही बल्कि भोगा हुआ यथार्थ है ।
दानवीर–सबल की सफलता तो निर्बल की छाती पर टिकी है ।शोषक समाज शेर की तरह कमजोर आदमी का शिकार कर रहा है ।यह तो जगजाहिर हो चुका है तभी तो वह दिन दूनी रात चौगुनी तरक्की कर रहा है । कमजोर गरीबी,बेबसी के दलदल में ढकेला जा रहा है । ये शोषक लोग बड़े शातिर होते है, मुंह खोलने वालों के सामने हड्डी का टुकड़ा डाल देते है ताकि आपस में लड़ते रहे और वे शोषण करते रहे । इस प्रतिष्ठा के संघर्ष में जातिवाद परमाणु बम की तरह से असरकारी साबित होता है ।खैर छोड़ो तुम तो ये बताओ तुम्हारे साथ क्या बुरा किसने कर दिया ।
भवानीनन्दन–भईया जब से आंख खुली है तब से ही बुरा हुआ है । आज तो कोई नया नही है ।पहले जाति के ठेकेदार कर रहे थे । अब दफतर के कोने बड़े ओहदे पर बैठे मन में राम बगल में जातिवाद की छुरी रखने वाले लोग । इसी जातिवाद की छुरी से भविष्य का कत्ल–ए–आम होने लगा है । भईया गांव रहा या शहर मेरा मुकाबला जातिवाद के नरपिशाच से जरूर हुआ । जब पपहली बार नौकरी की तलाश में दिल्ली गया था वहां जातिवाद के सांप ने ऐसा फुफुकारा था की आज भी उसका भय मन से नही निकला ।
दानवीर–ऐसा क्या हो गया ?
भवानीनन्दन–बेरोजगारी ने मुझे तोड़कर रख दिया था । अपने भी पराये लग रहे थे । फांका में भी दिन काटने पड़ रहे थे । इसी बीच एक फैक्टरी के बोर्ड पर आवश्यकता है लिखा हुआ देखकर शैक्षणिक प्रमाण–पत्रों के साथ हाजिर हुआ । इण्टरव्यू मे पास भी हो गया । इसके बाद मुझे बड़े अधिकारी के पास भेज दिया गया। अधिकारी ने एकदम से पूछा तुम कौन हो ।
मैं बोला भवानीनन्दन सर.....
अधिकारी–देख लिया है तुम्हारे प्रमाण पत्र । मैं जाति पूछ रहा हूं।
मैं बोला एस.सी. हूं सर.....
अधिकारी–यहां रिजर्वेशन लागू नही हैं । तुम्हारे लायक इस फैक्टरी में नौकरी नही है।
दानवीर–क्यां नौकरी नही मिली ?
भवानीनन्दन –नही । जातीय श्रेष्ठता की परीक्षा में फेल हो गया ।
दानवीर– जातिवाद तो समाज और दफतर की नस–नस में समाया हुआ है । खैर लम्बी बेरोजगारी के बाद सरकारी नही तो अर्धसरकारी विभाग में मिल तो गयी ना ।

भवानीनन्दन –हां मिल तो गयी पर यहां भी जातिवाद का विषधर डराता रहता है । दिन में काम रात में पढाई कर उूंची–उूंची शैक्षणिक योग्यताये हासिल किया पर यहां भी शैक्षणिक योग्यताये काम नही आ रही है । मेरा कैरियर सामन्तवाद की बलि चढ गया । पुष्पा की बीमारी की वजह से अपने कैरियर का जनाजा निकलते हुए देख रहा हूं।

दानवीर–अर्ध सरकारी विभाग में सामन्तवाद ।

भवानीनन्दन–जातिवाद का कहर मानो या सामन्तवाद का । इसी चक्रव्यूह में फंसा मेरी उम्मीदे दम तोड़ रहा है । मैं तरक्की से दूर फेंका जा रहा हूं उूंची–उूंची शैक्षणिक योग्यताओं के बाद भी जबकि विभाग में न्यूनतम् शैक्षणिक योग्यता और जातीय श्रेष्ठता रखने वालों के लिये मुंह मांगी तरक्की मिल रही है । कहने को अपने देश में समानता का हक हासिल है,देश में लोकतन्त्र है पर सच्चाई तो ये है कि आज भी सामन्तवाद की जड़े बहुत मजबूत है ।यही मजबूती कमजोर वर्ग को पनपने नही दे रही है । जाति के नाम पर तरक्की के रास्ते बन्द पड़े है ।

दानवीर–ठीक कह रहे हो भवानीनन्दन । अगर तुम्हारे साथ अन्याय नही हुआ होता तो तुम विभाग में बड़े ओहदे पर जरूर होते क्योंकि शैक्षणिक योग्यताये जो है पर अफसोस सामन्तवाद का दीमक चटकर रहा है हक को ।

भवानीनन्दन–बूढी व्यवस्था का असर वर्तमान में पढे लिखों के दिल में इतनी गहराई तक जगह बनाये हुए है कि वे अपनी जातीय श्रेष्ठता के अभिमान में उूंची–उूंची शैक्षणिक योग्यताओं को रौदने में तनिक भी कोर–कसर नही छोड़ रहे । पिछले सप्ताह मि. श्री एस जो विभाग बड़े प्रशासनिक अधिकारी है । योग्यता क्या है सिर्फ सिम्पल ग्रेजुएट परन्तु उपर पहुंच और जातीय योग्यता भारी है वे बड़े अधिकारी है । मैं इस साहब से कैडर चेंज करने के आशय से अनुरोध किया तो वे एक झटके में बोले तुम्हारे जैसे लोगो के लिये प्रशासन में जगह नही है ।

दानवीर–सच जातिवाद का नर पिशाच तुम्हारे लिये तो काफी घातक सिद्ध हो रहा है ।

भवानीनन्दन–मेरे सपनों की बारात को ठग चुका है ये नर पिशाच । मुझे तो नही लगता है कि इस शैतान के आगे मैं सामन्तवादी डण्डे से हांके जा रहे विभाग में तरक्की कर पाउूंगा । मेरा तो भविष्य तबाह हो गया है । अब तो मेरे सामने कुआं है पीछे खाई है जाये तो जाये कहां । रोटी के लिये नौकरी तो करना है । भविष्य दाव पर लगा दिया हूं दानवीर बाबू ।

दानवीर–चिन्ता से कुछ नही होगा । कर्म करते रहिये परिस्थितियां बदलेगी । सामन्तवाद और जातिवाद के पोषक तुम्हारी योग्यता का लोहा जरूर मानेगे । विभाग में तुम्हारी तरक्की छिनी जा रही है तो अपनी योग्यता को सृजनात्मक कामों में झोको

। इससे तुम्हे प्रसिद्धि जरूर मिलेगी।तुम्हारी राह में काटा बिछाने वाले देखना एक दिन पछतावा की आग में जलेगे मरेगे ।
भवानीनन्दन–सामन्तवाद के पोषकों की चमड़ी गेडे की चमड़ी से मोटी हो गयी है दीन–दुखियों के आसूं को कोई असर नही होता। कमजोर वर्ग की योग्यताओं को ठेंगा दिखाकर तकदीर कैद करना ये लोग अच्छी तरह जानते है ।
दानवीर–सच कमजोर की कहीं सुनवाई नही हो रही है । जातिवाद का ताण्डव देखने में कम हुआ है पर अन्दर तो जहर भरा हुआ है जिसकी लपट से तुम्हारे जैसे लोगों का भविष्य सुलग रहा है ।हौशला रखों तुम्हारा श्रम बेकार नही जायेगा ।
भवानीनन्दन–बस हौशले की आक्सीजन पर तो सांसे भर रहा हूं । बाकी कोई आसरा नही बचा है । अब तो दफतर में जातीय दबंग लोग गाली तक देने लगे है । जातीय श्रेष्ठ अफसर कसूरवार हमें ही ठहरा रहे है ।
दानवीर–तुम्हारा तो चहुओर से कत्ल हो रहा है ।तुम्हारा कत्ल–ए–बयां तो पलके गीली कर दिया । आधुनिक दफतर में इस तरह का दुर्व्यवहार विश्वास ही नही होता पर सच्चाई है। न जाने कब तक जातिवाद और सामन्तवाद का जहर देश की एकता को दीमक की तरह चट करता रहेगा और कमजोर तबके की तकदीर को कैदी बनाता रहेगा ?
भवानीनन्दन–भूमण्डलीयकरण के इस युगा में जातीय योग्यता को श्रेष्ठ मानने वालो द्वारा कमजोर का हक छिना जा रहा है और आत्म सम्मान चोटिल किया जा रहा है ।
दानवीर–जाति के नाम पर शैक्षणिक योग्यता का दमन तो अक्षम्य अपराध है पर दुर्भाग्य है कि सत्ता के ठेकेदारों की भी दिलचस्पी इसी में हैं तभी जातिवाद का जहर फैलता जा रहा है । कमजोर वर्ग पिछड़ता जा रहा है । कमजोर वर्ग के पढे लिखे भी तरक्की से दूर होते जा रहे है,उनकी सपनों की बारातों का जनाजा निकाला जा रहा है। इसी का तो प्रतिफल है सामाजिक भेद–भाव और गरीबी । धर्म और लोकतन्त्र दोनों के ठेकेदार आंख मूंदे मलाई छान रहे है । कमजोर अपने हक को छिनते हुए देखकर तुम्हारे जैसे आंसू बहाने को बेबस है । कोई गुहार सुनने वाला नही है ।
भवानीनन्दन–अरे गुहार सुनी कई होता तो अपने देश में सामाजिक और आर्थिक असमानता की खाई अब तक न होती । दबंग लोगों का ही तो चहुंओर कब्जा बरकरार है । आज के इस युग में भी कमजोर वर्ग के साथ वैसा ही हो रहा है जैसा किसी युग में दासों के साथ होता था । इस युग में बाह्य रूप से तो कम सूझता है पर आन्तरिक रूप से दर्द भयावह है । मैं तो परिवार के पोषण के लिये मौन

सत्याग्रह कर रहा हूं । भोगे हुए यथार्थ के आंसू की स्याही से पन्ने पर उतार रहा हूं ।
दानवीर–तुम्हारा सत्याग्रह जरूर सफल होगा पर बरसों लगेगे ।
भवानीनन्दन–जानता हूं मै इस सत्याग्रह के प्रतिफल को नही भोग पाउंगा । मेरी आत्मा को खुशी मिलेगी अपने किये पर ।
दानवीर–अच्छे काम के परिणाम अच्छे आते है । हां देर जरूर होती है । भवानीनन्दन तुम्हारे कत्ल–ए–बयां से मेरा दिल कांप गया । भेदभाव का जहरीला वृक्ष सूखेगा । कमजोर वर्ग भी तरक्की करेगा और सामाजिक समानता का हक भी पायेगा । मुझे तो यकीन है क्योंकि देश का संविधान भी तो यही चाहता है । गिद्ध कब तक किसी का हक चट करते रहेगे । मुझे इजाजत तो भाई..... ।तुम्हारे सपनों की बारात को पर लगे । मैं तो बस दुआ कर सकता हूं ।
भवानीनन्दन–आपकी दुआये जरूर काम आयेगी । जातीय श्रेष्ठता भले ही मेरी शैक्षणिक योग्यता को डंसती रहे परन्तु मैं अपने सपनों की बारात को किसी ना किसी रूप में मुकाम तक अवश्य पहुंचा दूंगा अपने मौन सत्याग्रह के बलबूते ।
दानवीर–मेरी दुआये तुम्हारे साथ है दोस्त ..... ।

13–किराये का घर ।

नरेशबाबू की नौकरी शहर में लग गयी । वह गांव से शहर तो आ गया पर शहर में किराये के घर का भाव सुन कर उनके होश उड़ गये उपर से अनेक तरह के सवाल जातिवाद के नाम पर आदमियत का पोस्टमार्टम भी। नरेशबाबू के घर की तलाश महीने भर बाद तो पूरी हुई ,दो महीना का अग्रिम किराया और चालू महीना का किराया एक मुश्त देने पर । घर पहले माले पर था । नीचे खुली चैम्बर लाइन की तरफ नरेश का ध्यान ही नही गया किराये का घर लेने से पहले ।इस रहस्य का खुलासा तो दूसरे दिन सो कर उठने के बाद चला खुली चैम्बर लाइन से उठती संड़ाध और मानव मल से भरी लाइन को देखकर,दूसर तरफ पानी के लिये मारा–मारी,बहुमंजिले किराये के घर में शौचालय की लाइन में धक्का–मुक्की। बड़ी मुश्किल से कई परीक्षाये पास करने के बाद तो घर मिला था ।वह भी रास नही आ रहा था । इसके पहले कई मकान मालिकों ने जाति के नाम पर बाउण्ड्री से बाह कर दिया था कईयों ने तो साफ कह दिया था नरेशबाबू छोटी जातिवालों को हम घर नही देते आदि –आदि । यही एक मकान मालिक मिले थे जो बिना कुछ पूछे घर दिया था दो महीने का एडवांस किराया लेकर । अन्ततः नरेश ने मानव–मल से घिरे इस किराये के घर को छोड़ दिया । काफी खेाज–बिन के बाद वहां से आठ किलोमीटर दूर ठाकुर चाचा का किराये का घर सुखधाम नगर में मिला था ।ठाकुर

चाचा ने जाति के मुद्दे पर बात करने से पहले नरेशबाबू ने अपनी जाति का खुलासा कर दिया । ठाकुर चाचा खुश हुए और बोले अभी तक तो बहुत किरायेदार आये छोटी–बडी सभी जाति के पर छोटी जाति वाले खुद को बड़ी जाति का बताकर घर लिया था। बाद में पता भी लग गया पर बेटा तुम पहले व्यक्ति हो जो स्वाभिमानी लग रहे हो। अरे जातिपांति तो आदमी की खीचीं तलवार माफिक है । आदमी तो बस आदमी होता है । ठाकुर चाचा की बाते सुनकर नरेशबाबू गदगद हो गया । शहर से दूर होने के कारण यहां से आने जाने में काफी तकलीफ थी क्योंकि यहां सार्वजनिक साधनों का चलना शुरू नही हुआ था । खुद के साधन का सहारा था नही तो पदयात्रा । नरेश ठाकुर चाचा के मकान में अकेला रहने रहने लगा परिवार अभी गांव में रह रहा था । एक दिन ठाकुर चाचा की इकलौती बेटी सौदामिनी रात में बेहिचक कमरे में आ गयी । उसको देखकर डर गया । आखिरकार हिम्मत करके बोला सौदाामिनी रात में यह जानकर भी कि मैं अकेला रहता हूं ।
सौदामिनी– हां । घर मे कोई नही है । घण्टे दो घण्टे बाद कोई आ ससकता है ।
नरेश–माफ करना । तुम अभी चली जाओ ।
सौदाामिनी–मैं अपनी बात करके जाउंगी ।
नरेश–नरक में मत डालो बहन ।
सौदामिनी–अब तो बहन बना लिये कोई डर तो नही ।अब तो अपनी बात कहूं ।
नरेश–हां बहन कहो ।
सौदामिनी–मैं खूबसूरत हूं । कही मेरे साथ कोई ज्यादती न हो जाये इसी डर से पापा ने मेरी पढाई बन्द करवा दी । मेरे पापा से कह कर मेरी पढाई चालू करवा दो । यदि हो सके तो अपनी कम्पनी में नौकरी लगवा दो । मुझे यकीन है आपकी बात पापा टाल नही पायेगे ।
नरेश–कोशिश करूंगा ?
सौदामिनी–फूटी किस्मत आप संवार सके हो कहते हुए पिछले दरवाजे अपने कमरे में चली गयी । नरेश चिन्तन–मनन मे लग गया । सुबह सोकर उठा तो ठाकुर चाचा को दरवाजे के सामने कुर्सी पर बैठे धूप सेकते पाया । उसके देखकर ठाकुर चाचा बोले नरेश बेटा लो कुर्सी बैठो ।
नरेश–ठाकुरचाचा आप बैठो बस मैं दस मिनट में आता हूं ।आपसे कुछ काम है ।
ठाकुरचाचा– मुझे काम पर जाना है जल्दी करना ।
नरेश–ठाकुरचाचा बस पांच मिनट लूंगा । मुझे भी तो काम पर जाना है ।
ठाकुरचाचा–ठीक है । आ जाओ ।
नरेश–जल्दी–जल्दी दो कप चाय बनाया । एक खुद के लिये दूसरा ठाकुरचाचा के लिये लेकर बाहर आया । ठाकुर चाचा को थमाते हुए बोला –लो चाचा चाय पीओ ।

ठाकुरचाचा–चाय के लिये बिठो थे ।
नरेश–नही किसी और काम के लिये ।
ठाकुरचाचा–काम बताओ ।
नरेश–चाचा सौदामिनी पढना चाहती है ।
ठाकुरचाचा– बारहवी पास कर चुकी है । अब क्या करेगी पढकर । अब तो बस उसकी शादी की चिन्ता है । शादी हो जाये बस यही तमन्ना है ।
नरेश–अभी तो पढने की उम्र है । शादी जल्दी करने के बहुत जोखिम है ।
ठाकुरचाचा–पढाने में बहुत जोखिम है । उससे तो अच्छा है शादी कर दूं अपने घर–परिवार में रम जाये ।
नरेश–ठाकुरचाचा रेगुलर नही तो प्राइवेट पढने दो । पढाई के साथ पढा भी तो सकती है किसी स्कूल में । इससे अपना खर्च उठाने लगेगी । आपके उपर भार भी नही पड़ेगा ।
ठाकुरचाचा–मनचले लड़को से डर लगता है । कभी कोई अनहोनी हो गयी तो क्या मुंह दिखाउंगा ।
नरेश–ठाकुरचाचा इतना क्यो डर रहे है । सौदामिनी मुंह तोड़ जबाब दे सकती है । अपनी रक्षा कर सकती है । कब तक उसके सिर पर हाथ रखे रहोगे । ठाकुर चाचा मेरी बात मान लो । कल गांव जा रहा हूं परिवार लेने ।
ठाकुरचाचा–शादी–शुदा हो ।
नरेश–हां ठाकुरचाचा । मेरा ब्याह तो बचपन में हो गया था मुझे तो याद भी नही ।
इतने में सौदामिनी आ गयी और बोली –नरेश भाई भाभी को लेने जा रहे हो ।
नरेश–हां ।
नरेश पन्द्रह दिन के बाद पत्नी गीतारानी को लेकर आ गया । एक दिन सुबह बन संवरकर सौदामिनी गीतारानी के सामने खड़ी हाकरे गया । उसके कान के पास मुंह करके बोली भाभी आपका आना मेरे लिये लकी साबित हुआ है ।
गीतारानी–क्या दूल्हा मिल गया ।
सौदाामिनी–स्कूल जा रही हूं ।
गीतारानी–इतना बन–संवरकर ।
सौदामिनी–भाभी मजाक न करो । आज पहला दिन है आप और भइया से मिलकर जाउंगी तभी तो लाभकारी होगा । यह सब भईया की वजह से तो हो रहा है ।
सौदामिनी–क्या ?अरे सुनो जी ये देखो ननदजी बन संवर कर मिलने आयी है ।
नरेश–क्यों मजाक कर रही हो गीता ?
गीतारानी–मजाक नही सच है । इधर ता आओ देखो कोई परी उतर आयी हो जैसे हमारी ननद किसी परी से तो कम नही है ।

नरेश–अच्छा सौदामिनी है ।
सौदामिनी–हां भइया ।आपकी वजह से प्राइवेट फार्म भी भर गया । स्कूल में नौकरी भी लग गयी । पापा का पहरा भी हट गया कहते हुए सौदामिनी नरेश का पैर छूने को लटकी । नरेश उसके सिर पर हाथ फेरते हुए बोला जा बहन खाूब तरक्की कर । गीतारानी ने तरक्की के साथ सुन्दर घर–वर तथा गोद हरी होने तक का आर्शीवाद दे डाला ।
सौदामिनी बोली– भाभी इतना कुछ एक साथ ।
गीतारानी–ननद की खुशी में तो हमारी भी खुशी है ।
सोदामिनी–थैंक यू भइया भाभी कहते हुए वह स्कूल की ओर चल पड़ी।
समय अपनी गति से चल रहा था इसी बीच गीतारानी को कई बीमारियों ने घेर लिया । नरेश की नौकरी पर भी खतरा मड़राने लगा था जातिवाद की वजह से । पच्चास लोगे के दफतर में अकेले छोटी जाति का नरेश ही था । दफतर के कुछ खिसियाये लोग बाहर फेंकने पर तूले हुए थे ।नरेश दफतर में हो रहे दर्व्यवहार और पत्नी की बीमारी के भंवरजाल में फंसा बूढा होने लगा था । उधर ठाकुर चाचा के परिवार में कलह का तूफान रह–रहकर उठने लगा था । इसी कलह की वजह से ठाकुर चाची एक दिन जहर खा ली फिर सौदामिनी भी । बड़ी मुश्किल से नरेश और गीतरानी की भागदौड से दोनो मां –बेटी की जान बचा थी । एक दिन सुबह सामने वाले घर में रोना चिल्लाना शुरू हो गया । गीतारानी दौड़कर पूछी तो पता चला की सीता ने जहर खा लिया है । सीता की भी जान इन्ही दोनो –पति पत्नी की दौड़धूप से बची । इसी बीच नरेश के पास में जाति छिपाकर रहने वाले रामफिरलाल ने नरेशबाबू से रिश्ता जोड़ लिया जबकि दूर तक कोई रिश्ता तो था नही पर जातीय रिश्ता था । रामफिरलाल का रिश्ता खुलेआम तो नही था जातीय पोल खुलने की डर से । अन्दर ही अन्दर प्राढता हो गयी थी । वह गीतारानी के गिरते हुए स्वास्थ और मकान मालिक के घर और आसपास जहरखुमारी की वजह से किराये का घर बदलवाने की जिद पर अड़ गया । ठाकुरचाचा के न चाहने और सौदामिनी के आसूं बहाने के बाद भी रामफिरलाल ने किराये का घर खाली करवाकर पास के मि.ठिमलौतिया के मकान के दो कमरे किराये पर दिलवा दिया ठाकुरचाचा के दो कमरे के किराये के घर से सौ रूपया और अधिक किराया दिलवाकर । मि.ठिमलौतिया भी छोटी बिरादरी के ही थे,रिजर्वेशन के बदौलत स्कूल में अध्यापक हो गये तो थे पर खुद को नरेश की जाति से उंची जाति का मानते थे । रह –रह कर जातीय अभिमान उबल पड़ता था । ज्यो ज्यो समय बितने लगा मि.ठिमलौतिया रंग बदलने लगे । कभी पहले पानी भरने पर चिढ जाते तो कभी कोई दूसरी बात पर । नरेश लैटिन बाथरूम में बल्ब लगाते वे निकालकी फयूज लगा देते । पानी का नल बन्द कर देते । इसी बीच सन्तोष ने

पुराना स्कूटर खरीद लिया । स्कूटर को देखकर मि.ठिमलौतिया बोले नरेश साइकिल खड़ी करने की परमिशन थी तुम्हारे स्कूटर को खड़ा करने के लिये जगह कहां से आयेगी । बहुत सी सुविधाओ का उपभोग कर रहे हो पर किराया नही दे रहे हो । तुम्हारा बेटा गुलाब पानी बहाता रहता है,दीवाल गन्दी कर रहा है । लैट्रिन बाथरूम का उपयेाग बढ गया है पानी का उपयोग बढ गया है अब स्कूटर खड़ा करने के लिये जगह चाहिये इन सब के लिये किराया बढाना पड़ेगा । इसी बीच मि. ठिमालौतिया गरम पानी जासनबूझ कर या अनजाने में डाल दिया ये तो भगवान जाने पर नरेश को बीस हजार रूपयें रीनकर्ज कर गीतारानी के इलाज पर लगाना पड़ा । पुलिस केस बन रहा था पर नरेश ने कहां बाप समान मि.ठिमलौतिया है अनजाने में पानी उपर गिर गया होगा । जब तक गीतारानी अस्पताल में थी तब तक मि. ठिमलौतिया का व्यवहार थोड़ा ठीक थी पर एक टाइम की रोटी के लिये कभी नही पूछे जबकि गुलाब महज साल भर का था । यह वक्त बहुत बुरा था नरेश के लिये बीवी अस्पताल में नन्हे बच्चे की देखभाल उपर से दफतर वालों तनी भौहे तीसरे नौकरी पर लटकी तलवार । खैर भगवान ने सभी मुसीबतो से रक्षा किया । तीस प्रतिशत जली गीतारानी महीने भर के बाद रिाये के घर में वापस आयी । गीतारानी के घर वापस आते ही मि.ठिमलौतियां के तेवर तल्ख हो गये वे किराया बढाओ या जल्दी घर खाली करो की रट लगा बैठे ।

यह बात नरेश रामफिरलाल से बताया तो वह मि.ठिमलौतिया के दलाल की तरह बोला बढा दो किराया । मकान बानाने में पैसा लगता है जबकि बाजार भाव की तुलना में पहले से ही घर का किराया अधिक था । जितना किराया नरेश जनता क्वार्टर का दे रहा था उतने में अच्छी कालोनी में घर मिल सकता था जातिवाद का नरपिशाच आड़े आ जा रहा था वैसे यहां भी कम न था । गीतारानी और नरेश आपस में विचार मिर्श कर दूसरा किराये का घर लेने का निश्चय कर लिया । यह खबर लगते ही रामफिरलाल बौखला गया । वह भी मि.ठिमलौतिया के षणयन्त्र में शामिल हो गया । मकान न खाली करने और किराया जर्बदस्ती बढाने के लिये चारो ओर से घेराव करने लगा । नरेश ने किराये का घर खोजन शुरू कर दिया । नरेश जहां घर देखकर आता वहां रामफिरलाल की घरवाली काली बिल्ली की तरह पांव दबाये पहुंच जाती । घर न देने की मशविरा दे आती कभी छोटी जाति का बता कर तो कहीं पड़ोसी होने की कसम देकर तो कभी बहुत खराब लोग है यानि किसी ना किसी तरह से मकान मालिक का घेराव कर देती यदि नही होता तो पति रामफिरलाल के साथ मि.और मिसेज ठिमलौतिया को ले जाती । कुछ मिलाकर किराये का घर नही लेने देती । दूसरी तरफ किराया बढाने पर जोर बढता जा रहा था । घर न खाली कर पाये इसके लिये घेराव भी पूरी तरह से हो रहा था । मि.

ठिमलौतिया नेश की नेकी को भूल चुके थे उनकी बेटी अर्न्तधार्मिक लड़के के साथ शादी करने की जिद न पूरी होने के कारण जहर खा ली थी । ऐसे बुरे वक्त में नरेश ही काम आया था । दूसरे गीतारानी के उपर खौलता पानी डाल दिये । नरेश न जेल जाने से बचाया था । वही मि.ठिमलौतिया अपने से छोटी जाति का मानकर अधिक किराया वसूल करने के लिये दबाव बना रहे थे । मुंह पर तो घर खाली करने को बोल रहे थे पर पीछे से घेराव कर रहे थे कि ये घर न खाली कर पाये । ये सब षणयन्त्र अधिक किराया वसूलने के लिये किया जा रहा था । इस षणयन्त्र में रामफिर लाल और उसका परिवार भी शामिल था ।

आखिरकार नरेश ने जनता क्वार्टर से दूर की मीडिल क्लास–।। कालोनी में घर देख लिया । इसकी भनक रामफिरलाल को लगी गयी वह मि.ठिमलौतिया को साथ लेकर मकान मालिक लालाजी के पास गया । मि.ठिमलौतिया से पहले रामफिरलाल बोला लालाजी सुना है अपना घर नरेश को किराये पर दे रहे है ।

लालाजी–ठीक सुना है ।

रामफिरलाल–जानते है नरेश कौन है ।

लालाजी–हां । छोटी जाति का है। छोटे ओहेद पर काम कर रहा है ।जातिवाद ने उसका जीना दूभर कर दिया है। बहुत पढा लिखा है । तुम्हारे खानदान में वैसा पढा लिखा कोई नही तो होगा ।

रामफिरलाल–अछूत को घर दे रहे है ।

लालाजी– तुम ठाकुर हो या यादव या चमार कौन हो बताओ जरा मैं भी तो जानूं ।क्यों एक शिक्षित और नेक आदमी को चैन से जने नही दे रहे हो ।

लालाजी की बात सुनकर रामफिरलाल के पैर के नीचे की जमीन खिसक गयी। वह पोल खुलने की डर से चुप रहा । मि.ठिमलौतिया बोले लालाजी घर आपका है,भंगी को दो या चमार को हम कौन होते है रोकने वाले ।

लालाजी–क्यों अपने स्वार्थ के सपनो की बारात के लिये भलेमानुष के सपनों की बारात में आग लगा रहे हो । जाति नही आदमी को देखो । छोटे ओहदे पर काम करते हुए दुनिया को सीख दे रहा है अपने हुनर से । अरे छोटी जाति का है तो क्या । कितना बड़ा हैं आदमी है कभी सोचा है । रामफिरलाल और ठिमलौतिया तुम दोनो एक दिन नरेश के सामने सिर झुकाओगे । जाओ मैं बात का पक्का हूं घर नरेश को ही दूंगा । तुम किराये का घर एक भले मानुष को नही लेने दे रहे हो जानते हो ये तुम्हारा शरीर भी किराये का है । यह भी एक दिन खाली होगा पता नही एक मुट्ठी माटी पायेगा भी की नही ।

रिश्तेदारी के नाम पर कलंक रामफिरलाल और और आदमियत के दुश्मन ठिमलौतिया के घेराव के बाद भी नरेश किराये के घर को खाली कर लालाजी के किराये के घर

में शिफट हो गया । श्रम की मण्डी में सुकरात साबित हुआ नरेश कुछ बरसों के अन्दर रीन कर्ज कर एक छोटा सा घर बनाकर किराये के घर से फुर्सत तो पा गया पर बूढी रूढिवादी व्यवस्था से नही।

14–हत्यारिन

नरेशराव पारोबाई से ब्याह कर बहुत खुश था। उसका गृहस्त जीवन हंसी–खुशी बित रहा था । मुन्ना के जन्म से खुशी और अधिक बढ गयी। अचानक हुए एक्सीडेण्ट ने नरेश के सपनों की बारात को रौंद दिया । उसे मरणासन्न अवस्था में अस्पताल में भती करवाया गया। जान तो बच गयी पर एक पैर कमर के नीचे से कट गया । नरेश अस्पताल में था,इसी बीच चार साल तक करवा चौथ पर चांद देखकर जलग्रहण करने वाली पारोबाई पैसे वाले अधेड़ मि.हड़पचन्द के साथ भाग कर ब्याह कर ली । मुन्ना नाना–नानी के घर पलने बढने लगा । नरेश के उपर तो मुसीबत का पहाड़ पहले ही गिर चुका था । घरवाली के भाग कर दूसरा ब्याह कर लेने की खबर ने उसे तोड़ कर रख दिया ।

कई महीनों के बाद नरेशराव घर आया । जिस घर में खुशी के तराने गूंजा करते थे ,सपनों की बारात से सजा घर टांग कटते ही उसे डंसने लगा । डंसता भी क्यों ना इस घर में अब तो कोई पानी देने वाला भी तो न था । तीन भाई –बहन तीन जगह थे । भाईयों ने हाथ खींच लिये । नरेशराव को बस बहन का सहारा बचा था । आखिरकार अपाहिज भाई की तरफ कुमारीबाई ने हाथ बढाया ।

कुमारी बाई के पति पेटवन्तराव और उसके बच्चों ने नरेशराव का भरपूर सहारा दिया । बहन–बहनोई,भानजी–भानजे के असीम प्रेम से नरेशराव के शारीरिक और मानसिक दशा में चमत्कारिक परिवर्तन हुआ । वह विकलांग साइकिल के सहारे चलने –फिरने लगा पर पत्नी की बेवफाई से उसके मन में बैराग्य उत्पन्न हो गया । उसके बैराग्य को देखकर भाईयों ने उसकी दौलत पर कब्जा करने के प्रयास बढा दिये परन्तु उसकी परवरिश के लिये कोई तैयार न था। भाईयों की नियति को देखकर कुमारीबाई ने नरेशराव को सलाह दी गयी वह सम्पति दोनो भाईयों में बांट दे ताकि भाईयों से मनमुटाव न रहे । उसका मायका बना रहे, भाई–भाई बने रहे। वैसे भी उसे भाई की सम्पति से कोई सरोकार नही था । हां नरेश की जिन्दगी से सरोकार भरपूर था जबकि भाईयों को सिर्फ सम्पति से था । पत्नी तो पहले ही भाग गयी थी दो साल के मुन्ना को लेकर । सात जन्म तक साथ निभाने का वादा करने वाली पारोबाई बेचारे नरेशराव पर मुसीबत पड़ते ही दगा दे गयी। वही नरेश जो कुछ दिन पहले पारोबाई के लिये दुनिया का सबसे अच्छा पति था । वही पत्नी अपना दुश्मन मान बैठी । इतना ही नही वह नरेशराव से मुन्ना को बेटा कहने तक का हक छिन

ली थी । वह अपाहिज बाप की परछाई मुन्ना पर नही पड़ने देना चाहती थी । मुन्ना को नावल्द मां–बाप को सौंप कर खुद पैसे वाले व्यक्ति के साथ ऐश करने लगी ।

हारे हुए जुआरी की भांति नरेशराव अपनी सम्पति भाईयों में बांटकर बहन–बहनोई का आश्रित बन चुका था । बहन कुमारीबाई और उसका परिवार नरेश की खुशी के लिये हर प्रयास करते पर उसकी अन्तर्रात्मा रोती रहती । भानजा छिब्बरराव बेटा बनकर नरेश राव के चेहरे पर खुशी लाने के प्रयास करता । नरेशराव ने अपना फर्ज अदा किया वह गाड़ी चलाने की परमिट छिब्बरराव को हस्तान्तरित कर दिया । समय के बदलाव के साथ नरेश के घाव तनिक भरे तो वह छिब्बरराव के साथ गाड़ी पर चलने की जिद करने लगा । छिब्बरराव मामा की तकलीफ को देखते हुए घर पर रहकर आराम देने की जिद करता क्योंकि तनिक चलने के बाद नरेशराव के कटे पैंर में भयावह दर्द शुरू हो जाता जिससे पूरे घर का चैन छिन जाता था । बहन के घर में नरेशराव को भरपूर प्यार मिला पर इलाज के बाद भी दर्द कम न हुआ । दर्द के साथ नरेशराव का बेटा मुन्ना भी बढने लगा था । नरेशराव को अब बेटे की फिक्र सताने लगी थी । वह सभी से छिपकर बेटे से कभी कभी मिल भी लेता था जबकि पारोबाई और उसके नये पति की न मिलने की सख्त हिदायत मुन्ना को थी । मां और सौतेले बाप की बंदिशों के बाद भी बारह साल का मुन्ना सगे बाप से किसी मंदिर में बैठकर अपना दुख–सुख बांट लेता था ।

बारह साल के बाद एक दिन प्रातः सियारिन की तरह फोन कराहने लगा । फोन के बनजे की आवाज सुनकर भागकर कुमारीबाई ने रिसीवर उठाया ।

हेलो–कुमारीबाई बोल रही है ?

कुमारीबाई–हां ।

दूसरी तरफ से –नरेशराव आपके भाई है ।

कुमारीबाई– हां पर वह घर पर नही हैं रिश्तेदारी गये है तीन दिन हो गया ।

दूसरी तरफ– अब नही आएगे ।

कुमारीबाई–क्या हो गया भईया को ।

पुनः दूसरी तरफ से –मैं पुलिस स्टेशन से बोल रहा हूं । हाईवे पर एक लाश मिली है जिसका एक पैर लोहे का है । पास ही एक लाठी और पानी की बोतल पड़ी हुई है। लाश के सुसाइड नोट से मिले नम्बर से फोन कर रहा हूं। इतना सुनते ही कुमारीबाई को अटैक आ गया वह वही गिर पड़ी ।

छिब्बरराव– चिल्लाया अरे चूहे की मम्मी जल्दी पानी लेकर आ देख मां को क्या हो गया । फूलकुमारी ससुर जी को आवाज लगाते हुए बोली अरे बाबू जी कहां हो देखो अम्माजी को क्या हो गया जल्दी अस्पताल ले चलो ।

छिब्बरराव ढाढस बंधाते हुए बोला चिलाओ मत । पानी का छींटा मारो कहकर हेलो कहां से बोल रहे है फोन पर बोला मैं छिब्बर बोल रहा हूं ।
दूसरी तरफ से –जनाब मैं पुलिस स्टेशन से बोल रहा हूं । हाईवे पुलिया के पास एक लाश मिली है । सम्भवतः यह लाश नरेशराव की है आप तुरन्त पहुंचे ।
छिब्बरराव–मामा की लाश । ऐसा कैसे हो सकता है ।
पुलिस–क्या सही है क्या गलत यह तो शिनाख्त के बाद पता चलेगा । मेहरबानी कर आ तो जाईये ।
छिब्बर पडोसियों के दरवाजे खटखटाया कुछ देर में काफी लोग इक्ट्ठा हो गये कुछ लोग कुमारीबाई को अस्पताल की ओर लेकर भागे । छिब्बरराव दो चार लोगों को लेकर हाईवे की ओर जहां पुलिस को लाश मिली थी ।
छिब्बरराव–पुलिस कांस्टेबल को सलाम ठोंका ।
पुलिस–क्या आप छिब्बर है लाश की शिनाख्त करने आये है ?
छिब्बरराव–जी ।
पुलिस जवान ने लाश के मुंह पर से कपड़ा हटाया ।
छिब्बरराव लाश का देखकर मामा... तुमने ऐसा क्यो कर लिया । किस जुर्म के सजा दे गये मामा... कहकर फूट–फूट कर रोने लगा । तनिक भर में हाईवे पर जाम लग गया । पुलिस को नरेशराव का सुसाइड नोट पहले ही उसके कमीज के पैकेट से मिल चुका था । सुसाइड नोट में लिखे नम्बर से ही तो पुलिस ने फोन किया था । सुसाइड नोट में नरेशराव ने लिखा था –
मैं खुद अपनी मौत का जिम्मेदार हूं । मेरे किसी भी परिजन को परेशान किया जाये । मै अपनी तकलीफ से हार चुका था । हमेशा–हमेशा के लिये दर्द से छुटकारा पाने के लिये मैने यह कदम उठाया है। पुलिस की सुविधा के लिये बहन–बहनोई के घर का टेलीफोन नम्बर लिख दिया हूं ।
लाश की शिनाख्त हो गयी । पुलिस ने लाश को पोस्टमार्टम के लिये सरकारी अस्पताल भेजने का बन्दोबस्त कर दिया पर कोई आदमी लाश को हाथ लगाने को तैयार ने था । जहर का इतना विस्फोटककारी असर था कि नरेशराव के छः फूट लम्बे और भारी शरीर से ही नही खोपड़ी से भी बदबूदारी खून के फब्बारे निकल रहे थे । बड़ी मुश्किल से लाश पोस्टमार्टम के लिये रवाना हो पायी । पोस्टमार्टम के बाद नरेशराव की लाश गठरी की शक्ल में बहन कुमारी बाई के दरवाजे पर आयी । बेचारी कुमारीबाई अस्पताल में जीवन मौत से संघर्ष कर रही थी । कालोनी के हर शख्स के जबान पर बस एक ही सवाल था दिन में जितनी बार मिलो उतनी बार राम राम करने वाले कालोनी के मामा ने आत्महत्या क्यों किया ? नरेशराव मामा कई सवाल छोड़कर अनजाने लोक को प्रस्थान तो तीन दिन पहले कर चुके थे ।

आखिरकार नरेशराव की शव जनाजा बहन कुमारीबाई की चौखट से निकला । इस जनाजे में कालोनी के लोग और नातहित शामिल हुए । मामा की लाश मालवा मिल के मुक्तिधाम पर पंचतत्व में विलीन हो गयी । भाई लोग कमाई में हिस्सा लेकर कर दूर जा चुके थे । । सारा क्रिया–कर्म बहन के घर से विधि–विधान पूर्वक सम्पन्न हो रहा था । कुमारीबाई का अस्पताल में इलाज चल रहा था । तनिक होश में आती। आंसू बहाते हुए कहती हत्यारिन पारोबाई निरापद नरेश भईया को खा गयी और फिर बेहोश हो जाती । काफी लम्बे इलाज के बाद कुमारीबाई परिवार में वापस तो आ गयी पर वह अर्धविक्षिप्त की तरह बस यही रट लगाये रहती –हत्यारिन पारोबाई भईया को खा गयी। हत्यारिन पारोबाई भईया को खा गयी..... । महिलायें खुद के आंसू पोछते हुए समझाती–अरे सात जन्मों तक साथ निभाने के लिये सात कसमें खाकर उन्ही कसमो को तोड़ने के जुर्म की सजा हत्यारिन को जरूर मिलेगी ।भगवान के घर देर है अंधेर नही ।

कुमारीबाई कहती जब तक भगवान हत्यारिन को सजा देगा तब तक तो आंखे पथरा जायेगी और बेहोशी के आगोश में चली जाती । सारे इलाज के फेल हो जाने के बाद चूहेनुमा पोते के स्पर्श ने दादी की खोई यादाश्त को वापस ला दिया । बेटा मुन्ना के होश सम्भालते ही पारोबाई की करतूते सामने आ गयी । पारोबाई मुन्ना के लिये मर गयी । वह अपनी अलग दुनिय बसा लिया खुद को नरेशराव का बेटा साबित कर । पारोबाई अर्धविक्षिप्त हो गयी । मि.हड़पचन्द पागल पत्नी को घर से लाकर सड़क पर पटक दिया ।बच्चे पारोबाई के मुंह पर थूकते बड़े कहते ना थकते थे देखो–हत्यारिन को सजा मिल गयी । सगे–सम्बन्धियों की गवाही में मांग में सिधूर भरने वाले पति के सपनों की बारात में आग लगाने वाली परोबाई कब तक भगवान की आंख में धूल झोंक सकती थी। भगवान ने न्याय कर दिया ।

नन्दलाल भारती

15– आदमी ।

आदमी की ख्वाहिशें होती है कि वह सपनों की बारात को कुसुमित करे । योग्यता को पर्याप्त मौका मिले,मान–सम्मान की रोटी के साथ समानता का हक पाये परन्तु विष की खेती करने वाले सपनों की बारात को रौदने के लिये कमर कस लेते है जिससे कमजोर आदमी के सपने चकनाचूर हो जाते है । कमजोर आदमी आज के इस युग में भी योग्य होकर भी अयोग्य हो जा रहा है मानवता पर दाग साबित हो चुकी जातीयता के कारण ।दबंगों द्वारा कमजोर के राह में कांटे बिछाये जाते रहते है ताकि वह विपन्नता के दलदल में फंसा जी हजूरी करता रहे । बस सांस भरने की स्थिति में कमजोर रहे इससे ज्यादा कुछ हुआ तो तरक्की के ख्वाब देखने लगेगा ।

कभी तो कमजोर की तरक्की के ख्वाब ऐसे रौद दिये जाते है कि वह सपने देखना छोड़ देता है । यही कारण है कि आज भी कमजोर आम आदमी तरक्की नही कर पाया है । वह हाड़फोड की बदौलत रोटी का इन्तजाम कर ले रहा है परन्तु उसे सामाजिक स्तर पर मानव होने का हक आज के इस भूमण्डलीयकरण के युग में भी नही मिल पाया है,इस सच्चाई की ज्वलन्त उदाहरण है जातिवाद और जातिवाद के नाम पर हो रहा वंचितों का संहार ।

सामाजिक बंदिशों में कैद कमजोर आदमी लाख शैक्षणिक योग्यता के बाद श्रम की मण्डी में फेल हो जाता है, उसके अवसर छिन लिये जाते है,उसे तरक्की से दूर फेंक दिया जाता है। जिसकी वजह से कमजोर/ शोषित व्यक्ति असमय बूढा हो जाता है। ऐसे लोग के लिये तरक्की बस स्वप्नमात्र होकर रह जाती है । शोषित व्यक्ति की अवन्नति का कारण विषमतावादी और विध्वन्स मानसिकता ही है आज के इस दौर में भी । शैक्षणिक और विद्वता की दृष्टि से उच्च व्यक्ति को भी सामाजिक मान्यता प्राप्त भारतीय जातीय निम्नता दोयम दर्जे का आदमी बना देती है । आइये हम आपको ऐसे ही एक जातीय विपन्न शैक्षणिक और विद्वता की दृष्टि से सम्पन्न दीनदयाल नामक व्यक्ति की किस्सा सुनाते है ।

गोवर्धन– भूमिका में समय न गंवाओं वक्तनरायन कहानी सुनाओं । देखो सब तुम्हारा मुंह ताक रहे है ।

वक्तनरायन – हां सुनिये दीनदयाल की कहानी । दीनदयाल का जन्म शोषित परिवार में हुआ था । नतीजन आंख खुलते ही उसे सामाजिक आर्थिक यानि हर तरह की मुश्किलों का सामना करना पड़ा। मां बाप की तकलीफे उसे चैन से सोने नही देती थी । मां–बाप को सुख देने की चाह में रात दिन एक कर पेट में भूख खुली आंखों में सपने बसाये पढ लिख गया । घर की आर्थिक तंगी और जातीय उत्पीड़न से परेशान होकर वह शहर की ओर चल पड़ा । शहर में उसे तनिक समानता की छांव मिली परन्तु मौके–बेमौके जातीय विषघर डंस भी जाता । खैर, शहर ने फांके से मरने कि स्थिति से उबार लिया । उसे लाखों अग्नि परीक्षायें पास कर एक कम्पनी में मामूली से ओहदे की नौकरी मिल गयी । दर–दर भटकने से बेहतर था कि वह परिस्थितियों से समझौता कर नौकरी थाम ले । वह यही किया और मेहनत,लगन और ईमानदारी के डयूटी बजाने लगा । उसे कम्पनी में उसे अपने उज्जवल भविष्य की सम्भावना थी। दुर्भाग्यबस जातीयता की संड़ाध कमजोर वर्ग के व्यक्ति को कही भी चैन से जीने नही देती दीनदयाल कहां बंच सकता था । रह–रहकर तूफान उठ जाता था जिससे सम्भावनाये कुचल जाती थी परन्तु दीनदयाल योग्यता के धागे से टूटी सम्भावनाओं की मरम्मत कर अपनी राह पर चल पड़ता था । खैर गहरे घाव के निशाने तो अमिट होते है चाहे वे घाव समाज से मिल हो या श्रम की मण्डी से ।

भले ही ऐसे घाव बाह्य रूप से न भी दिखे पर आन्तरिक रूप से तो रिसते जख्म साबित होते है । भेदभाव का तूफान अव्वल दर्जे के कमजोर वर्ग के आदमी को दोयम दर्जे का आदमी बना देता है और सपनों की बारात को तहस नहस भी कर नौकरी से बाहर कर देने तक का षणन्त्र रच दिया था,कहते है ना लाख मुदई चाहे तो क्या होता है,वही होता है जो मंजूरे खुदा होता है । दीनदयाल हर हादशे से बार–बार बच जाता । हां उसे कोई तरक्की तो नही मिल पायी, हां मानवता के दुश्मनों ने आंसू जरूर दिये हाई क्वालीफिकेशन्श का जनाजा निकालकर जातिवाद के भाले की नोंक पर । दीनदयाल की नौकरी चल रही थी हां तरक्की की उम्मीद मर रही थी पर उसे सम्भावना बलवन्ती थी कि उसकी शैक्षणिक योग्यताये भले ही पद और दौलत की चाहत न पूरी कर पाये विद्वत समाज के बीच निशान तो छोड़ ही देगी । इसी सम्भावना की आक्सीजन पर सारी बाधाओं को नजरअंदाज कर आंसू के घूट पी–पी कर हर कदम फूंक–फूंक कर रखते हुए अपने मकसद को अंजाम देने में जुट गया था । दबंग लोगो को दीनदयाल का यह उपलब्धि भी रास नही आ रही थी । केवलनरायन ने तो खुलेआम दबंगो की मण्डली बनाकर दीनदयाल के विरोध पर उतर गया था । दीनदयाल का काम के प्रति समर्पण उसे मुश्किले के भंवर में जूझने के बाद भी सफल कर देता था । इससे मानवता के विद्रोही और जल–भुन जाते थे ।

गोवर्धनबाबू –तुम कहानी सुना रहे हो या आपबीती ?

वक्तनरायन–आपबीती लग रही है तो वही मान ले । यह सिसकती हुई सच्चाई आज भी आपको मिल जायेगी चाहे आधुनिक युग की श्रम मण्डी हो या पुरातन रूढिवादी समाज ।

गोवर्धनबाबू –कहानी कह रहे हो पर सच्ची घटना लग रही है ।

वक्तनरायन–कहानी में आपको सच्चाई नजर आ रही है । ऐसी सच्चाई का सामना किसी वंचित वर्ग को न करनी पड़े यही मेरा उद्देश्य है गोवर्धन बाबू ।

गोवर्धनबाबू –आगे कहानी सुनाओ.....

वक्तनरायन–हां कहानी आगे बढाता हूं । जैसाकि पहले ही दीनदयाल की शैक्षणिक योग्यता का उल्लेख कर चुका हूं ।

समयकुमार–हां कह चुके हो । आगे क्यो हुआ ? दीनदयाल को तरक्की मिली की नही ?

वक्तनरायन–परत–परत दर सब कुछ सामने आ जायेगा ।

गोवर्धनबाबू–कमजोर की तरक्की कहां किसको भाती है ।दीनदयाल की भी कहानी मन को सकून तो ननही दे रही है पर आगे की कहानी सुनाओ ।

वक्तनरायन–कहते है कमजोर जानवर को कीलनी बहुम पकड़ती है वैसे ही कमजोर आदमी को दंबग आदमी भी बहुत सताते है । वैसे तो दीनदयाल की उपस्थिति विभाग में किसी को भाती नही थी क्याकिें वही तो इकलौता कमजोर वर्ग से था परन्तु यहां फर्जी डिग्री से प्रशासनिक मैनेजर का पद हड़पने वाले वसन्तफर्जी की जिक्र करना जरूरी लगता है ।
चक्रनरायन–ये वसन्तफर्जी नया खलनायक कहां से बीच में आ गया ।
वक्तनरायन–वसन्तफर्जी के पास चपरासी के योग्यता की पढाई थी पर जातीय श्रेष्ठता जोड़तोड़ और फर्जी डिग्री के बल वह प्रशासनिक मैनेजर विभाग में बन गया था । दीनदयाल के पास कई डिग्रियां थी क्योंकि वह दफतर के घाव को भुलाने के लिये रात का कालेज ज्वाइन कर लिया था छः साल से । वह मानव विकास संसाधन की परीक्षा पास करने के बाद विभाग में कैडर चेंज की अर्जी दे दिया ।बड़े साहब ने अर्जी बसन्त को फावर्ड कर दिया । अर्जी देखते ही वसन्त दीनदयाल को फोन लगया ।
समयकुमार– फोन पर वसन्त ने मुबारकवाद दी ।
वक्तनरायन–घाव ।
चक्रकुमार–वो कैसे ?
वक्तनरायन–वसन्त बोला दीनदयाल तुमने मुख्यालय के परिपत्र का उलंघन किया है कैडर चेन्ज के लिये आवेदन कर । तुम कार्यालय के आदेश के उलंघन के बदले दण्ड मिल सकता है पर तुम्हारी अर्जी आगे नही बढायी जा सकती । मुख्यालय के परिपत्र की प्रति ,तुम्हारा आवेदन और बड़े साहब के हस्ताक्षर से जारी नोटिस तुम्हे भेजी जा रही है परन्तु ये कभी न मिले । हां अर्जी कचरे के हवाले जरूर हो गयी होगी । इसके बाद दीनदयाल ने अर्जी न देने की कसम खा लिया क्योंकि वह अब विभाग में भी दोयम दर्जे का आदमी घोषित हो चुका था समाज ने तो पहले ही बना दिया था ।
चक्रकुमार–दुनिया में भले ही आदमी आदमी हो परन्तु अपने देश में आदमी जाति के नाम से पहचाना जाता है । सचमुच यह तो दुर्भाग्य ही है इस देश का । इसी भेदभाव के चक्र में जातीय दंगे फसाद,शोषण,उत्पीड़न और भी अमानवीय घटनाये होती रहती है । यही भेदभाव की आग दीनदयाल जैसे लोगेां के सपनों की बारात को भी भस्म कर दे रही है ।
वक्तनरायन–दीनदयाल के साथ तो सचमुच में बहुत बुरा हुआ । बड़े से बड़े पद की योग्यता होते हुए भी उसे आगे नही बढने दिया गया । दीनदयाल को उचे ओहदे पर नही जाने देने की कई सामन्तवादी अफसरो ने कसमे तक खा ली थी । आखिरकार

वही हुआ जातीय श्रेष्ठता के नाम पर योग्यता को कैदी बना दिया गया । अयोग्य परन्तु जातीय श्रेष्ठ लोगों को धड़ाघड़ उपर पहुंचाया जाता रहा ।
समयकुमार–गांव–समाज मे जैसा भेदभाव होता है वैसा दफतरों में भी होता है क्या ?
चक्रकुमार–इसका ज्वलन्त उदाहरण दीनदयाल का सुलगता भविष्य है ।
वक्तनरायन–ठीक कह रहे हो । आज भी जातिवाद की जड़ों को कमजोर वर्ग के सपनों का दहन कर पोषित किया जा रहा है । दीनदयाल को हर तरह से दबाकर रखा जाता था । उसके काम को लटका कर रखा जाता था । उसके स्कूटर के लोन को मैनेजर, मि.सुरेन्द साहब ने साल भर लटकाये रखा । दीनदयल के बार–बार की खोजबीन के बाद मैनेजर महोदय बोले तुम्हारा कोई आवेदन नही मिला है दूसरा भेजो । दूसरे पर भी कार्रवाई होने में छः माह लग गये। इस बीच कीमत भी बढ गयी। मतलब कोई कोर कसर नही छोडी जाती थी दीनदयाल के सपनो के दहन के लिये अभिमानियों द्वारा ।
गोर्वधन–दीनदयाल की खुशी तो बीमार की हंसी होकर रह गयी ।
वक्तनरायन–ठीक कह रहे है । दीनदयाल की सपनों को सामन्तवाद का जंग खा गया । आसमान छूने वाली योग्यतायें फेल कर दी गयी हर परीक्षा में । दीन दयाल मामूली से कलर्क की नौकरी से रिटायर हो गया जबकि योग्तयाधारी कलर्क भी कई कई विभागों में बड़े–बड़े पदो पर पहुंच जाते है जहां पर योग्यता को वरीयता दी जाती है । दीनदयाल बड़े पद पर तो नहीं पहुंच पाया परन्तु दोयम दर्जे के आदमी की उपाधि जरूर मिल गयी वह भी अपने ही देश में।
समयकुमार–आदमी दोयम दर्जे का कैसे हो सकते है,आदमी तो आदमी ही होता है ।
गोवर्धन–बात तो सही है परन्तु यहां तो जातिवाद के नरपिशाच ने कमजोरवर्ग को दोयम दर्जे का ही बनाकर छोड़ा है । काश यह अमानवीय दम्भ टूट जाता तो हाशिये के आदमी की खुशी शदियों के गम को पछाड़ देती । वक्तनरायन अभी किस्सा कितने देर की है ।
वक्तनरायन–किस्सा तो खत्म हो गया दीनदयाल के रिटायर होते परन्तु असली किस्सा तो तब खत्म होगी जब देश से जातिवाद खत्म हो जाये ।

16–रिश्ते का धागा ।

सुधा–मम्मी फोन लो ।
ज्योति–किसका है ।
सुधा–मामा है ।
ज्योति कौन से मामा ।

सुधा–बात तो करो ।
ज्योति– कानूनीतौर पर मारी गयी बहन से क्या बलिदान चाहते हो ? अब क्या बचा है ?
कब्र के मुर्दे की याद कैसे आयी ?
जगप्रकाश– गलती का एहसास हो गया है । दीदी तुम भूली ही कब थी ।
ज्योति–मां–बाप के मरने के बाद भला मेरी याद क्यों आयेगी । बाप की छोड़ी दौलत पर कब्जा करने के लिये मेरी मौत का हलफनामा कौन से रिश्ते की गवाही करता है ।मेरे कानूनी कत्ल से तुम भाईयों और सौतेली मां की हवश पूरी नही हुई तो अब कैसे होगी ।
जगप्रकाश–दीदी तुम्हारे कानूनी कत्ल के अपराधी सौतेली मां सहित हम तीनो भाई भी है ।
ज्योति–तुम सबका मा–बाप की दौलत पर कब्जा तो हो गया ना । अब तो मुझे चैन से जी लेने दो तुम लोग । बाप की जमीदारी में हिस्सा तो मुझे नही चाहिये था । इसके बाद भी तुम लोगो ने साजिश रचकर कानून की नजरों में मुझे मरी हुई साबित कर दिया । क्या यह काली करतूत भाई–बहन के रिश्ते को खत्म करने के लिये कम है? जिस बहन को भाईयों ने कागजी मौत दे दी हो उस बहन के मायके कसाईखाना के सिवाय और क्या हो सकता है ?
जगप्रकाश–दीदी ऐसा न कहो । रिश्ते ऐसे तो खत्म नही होते । गलती हुई है लालच में आकर । दीदी रिश्ते का धागा न टूटा है और ना कभी टूट सकता है ।
ज्योति–तुम लोग चाहते तो मै लिखकर दे दी कि मुझे मां–बाप की दौलत में हिस्सा नही चाहिये । कानूनीतौर पर मैं निरापद मरती नही और न खून का रिश्ता खत्म होता ।
जगप्रकाश–रिश्ते के धागे को बड़े भाई साहब और छोटी मां ने तोड़ा है । उन्हे डर था कि तुम बाप की छोड़ी पन्द्रह लाख की रकम और अचल सम्पति में हिस्सादार बनोगी । इसलिये तुम्हारी मौत का हलफनामा पेश हुआ । बाप की चल–अचल सम्पति चार बराबर हिस्सों में बंट गयी ।
ज्योति–तुम हो या छोटी मां या बाकी दोनों भाई सब मेरी नजरों में अपराधी हो । अरे पूछ कर तो देखते । एक लड़की को मायके का कुत्ता भी प्यारा लगता है,भाई और उनके परिवार के लोग कितने प्यारे होगे । खैर तुम लालची लोग कहां सोच सकते हो ।
जगप्रकाश–बाप के मरने के पहले और बाद मे भी घर का मालिकाना तो भाई हठप्रकाश के हाथों में था । दीदी ये सब हठप्रकाश भईया और छोटी मां का सब किया कराया है ।

ज्योति–किसका किया कराया है हमें जानकर क्या करना है । मै तो अब अपने सगे मां–बाप की नाजायज औलाद हो गयी हूं । खैर छोड़ो फोन क्यों किया है ?
जगप्रकाश–तुम्हारे चरणों की धूल माथे चढाना चाहता हूं एक मौका दे दो दीदी ।
ज्योति–मुझ अभागिन के ऐसे कहां भाग्य होगे ।
जगप्रकाश–दीदी इतना कठोर ना बनो ।
ज्योति– अब न तो कोई हक तुम लोगो पर बचा है और न कोई रिश्ता ।
जगप्रकाश–बाप के मरने के बाद परिवार में कलह शुरू हो गया है । कुछ जमीन पर छोटी मां का कब्जा हो गया है । बाप की आधी से अधिक दौलत पर कब्जा हो गया है थोड़ी बहुत जो रकम बैंक में थी उसमे चार बराबर के हिस्से हुए । छोटी मां अपने भतीजो को मोटर साइकिल गिफट कर रही है । अनाज का गाड़िया छोटी मां अपने मायके और बहन के घर भेज रही है। छोटी मां बाबूजी के मरने के बाद रिश्ते के सारे धागे तोड़कर स्वार्थ पर उतर गयी है । सब कुछ बिखर चुका है,दीदी तुम टूटे रिश्ते को जोड़ सकती हो ।
ज्योति–टूटे रिश्ते जुड़ते नही अगर जुड़ भी जाये तो गांठ पड़ जाती है ।
जगप्रकाश–ऐसा ना कहो । दीदी खून के रिश्ते ऐसे नही चटकते ।
ज्योति–जानती हूं पर मेरा कत्ल जिस तरीके से हिस्सेदारी खत्म करने के लिये हुआ है वह तो अक्षम्य अपराध है ।
जगप्रकाश–दीदी हम तुम्हारी चौखट पर माथा पटकन आ रहे है ।
ज्योति–मेरी चौखट से कुत्ते भी भूखे नही जाते । मेरे मायके वाले कैसे जा सकते है भले ही जीते जी वे मुझे मार डाले हो ।
जगप्रकाश–धन्यवाद दीदी । तुम्हारा उपकार नही भूलूंगा ।
ज्योति–औरत लाख जख्म खाकर उपकार करने के लिये पैदा हुई है ।
जगप्रकाश– अगस्त माह में नौ तारीख को तुम्हारी चौखट पर माथा पटकने हम तीनो भाई आ रहे है । फोन रखता हूं दीदी ।
ज्योति–ठीक है रख दो ।
नौ अगस्त का दिन महीने भर बाद आ गया । कलेण्डर को देखकर ज्योति बोली बीटिया सुधा आज नौ तारीख है ना ?
सुधा –हां मम्मी आज नौ तारीख है और रक्षा–बंधन भी ।
ज्योति–अब समझी वो जगप्रकाश नौ तारीख को क्यों आने की जिद कर रहा था ।
सुधा– बांध देना फिर से रिश्ते का धागा । मैं मिठाई लेकर आती हूं ।
अभिनन्दन–ला दूंगी । पापा के पैसे तो खर्च करने है ।
अभिनन्दन और वन्दन एक स्वर में बोले बड़े होकर सब भरपाई कर देगे दीदी ।
सुधा–कोई नही कर पाया है तो तुम कैसे कर सकते हो ।

वन्दन–दीदी इमोशनल ना करो ।
सुधा–सच तो कह रही हूं मां–बाप का कर्ज आज तक कोई भरपाई नही कर पाया है तो तुम कैसे कर पाओगे ।
अभिनन्दन–दीदी हम लोगों का मतलब कुछ और था । अब आप जाओ हम दोनो नन्हे आपसे हारे दीदी। बस मिठाई अच्छी लाना ।
सुधा घण्टे भर में मिठाई श्रीफल और पूजा सामग्री लेकर आ गयी । दोनो भाईयों अभिनन्दन और वन्दन को शुभ मुहर्त में राखी बांधकर उठी ही थी कि काल–बेल घनघना उठी ।
सुधा–मां दरवाजा खोलो कोई आया है आज नौ तारीख है ।
ज्योति–तुम खोलो जी । तुम्हारे कोई लेखक मित्र होगे । तुम्हारे हाथ में बंधी राखी देखकर उन्हे अच्छा लगेगा ।
अभिजीत–मजाक ना उड़ाओं जाकर दरवाजा खोलो ।
ज्योति–ठीक है । वह दरवाजा खोली बाहर झांककर जोर से बोली अरे बाप रे । दरवाजे पर बड़ी सी कार खड़ी है ।
जगप्रकाश,रत्नप्रकाश और हठप्रकाश हम आये है आज नौ तारीख है ।
चम्पा,चमेली और चांदनी ननद जी और रक्षा बंधन है ना ।
जगप्रकाश–दीदी अन्दर आने को नही कहोगी । इतना सुनते ही ज्योति की आंखे से गंगा–जमुना का धारा बह गयी । वह काष्ठ की मूर्ति की तरह खड़ी टकटकी लगाये हुए भाई–भौजाइयो और भतीजों को निहार रही थी।ज्योति को चुप देखकर अभिजीत बाहर निकले तीनो सालो और उनके परिवार को देखकर बोले आप लोग बाहर क्यों खड़े है अन्दर तो आइये
ज्योति–सुधा बीटिया पानी पीलाओ ।
सुधा–मम्मी अभी शुभ मुहुर्त चल रहा है पानी बाद में । थामो थाली ।
ज्योति–अपने कानूनी हत्यारों को कैसे रिश्ते का कच्चा सूत बांधूगी । ये कच्चे सूत की महिमा क्या समझेगे ? फिर मतलब आते ही लतिया देगे ।
जगप्रकाश,रत्नप्रकाश और हठप्रकाश, चम्पा,चमेली और चांदनी एक साथ बोली अब ऐसी गलती नही होगी । क्षमा करो ।
अभिजीत–भागवान आज नौ अगस्त है । बहुत शु भ दिन है । बरसों के बिछुड़े भाई मिले है । अशुभ बाते ना करो लपेट दो कच्चे सूत भाईयों की कलाई पर अपना पुर्नजन्म समझकर । रिश्ते का धागा इतना कमजोर नही होता की एक झटके में हमेशा के लिये टूट जाये ।
सुधा–हां मम्मी पापाजी ठीक कह रहे है । जोड़ दो टूटे रिश्ते के धागे को कच्चे सूत तीनों मामा की कलाईयो पर बांधकर ।

अभिजीत–भागवान देर ना करो मुहुर्त निकला जा रहा है ।
ज्योति– लाओ सुधा बीटिया पूजा की थाली । औरत तो सदा से बलिदान करते आ रही है । एकबार और बलिदान कर देती हूं खून के रिश्ते के लिये ।
अभिजीत–कसकर बांधना ताकि रिश्ता का धागा ढीला न पड़े ।
जगप्रकाश,रत्नप्रकाश और हठप्रकाश, चम्पा,चमेली और चांदनी एक स्वर में बोले हम कसम खाते है अब कभी रिश्ते का धागा ढीला नही होगा बहनोई चाहे कोई भी कुर्बानी देनी पड़े । इतना सुनते ही ज्योति की आखों में सावन भादो उमड़ पड़े ।

17–तीमारदारी

अरे मोंटी सोंटी तुम सारे मर गये क्या । कोई तो मेरी बात सुन लो । तुम्हारी मां चली गयी चामुण्डादेवी की शरण में अपनी खुशहाली का वरदान मांगने । तुम लोग हो कि सुन ही नही रहे हो । हमारे लडके एकदम अपनी मां के नक्शेकदम चल रहे है । कब से बुला रहा हूं कोई मेरी बात नही सुन रहा है । मिल जाते तो खाली बोतल सिर पर फोड़ देता । विसना नशे में धुत एक हाथ में खाली बोतल लिये और दूसरे से किवाड़ पकड़े बड़बडा रहा था । सोण्टी बाप की चिल्लाचोट को सुनकर दौड़ा–दौड़ा और बोला पाजा क्यों तमाशा कर रहे हो । चढ गयी है तो दरवाजा बन्द करके सो जाओ ।
विसना–कब से बुला रहा हूं । तुमको अभी सुनाई पड़ा है । बुलाते –बुलाते गला छिल गया पर तुम दोनो सुने नही । क्या तुम्हारी मां मना करके गयी है ? रूक तेरी खाबर लेता हूं कहकर विसना खाला बोतल एक ओर रखते हुए हाथ भर का ड़डा उठाया और दनादन सोण्टी को पीटने लगा । सोण्टी जोर –जोर से बचाओ बचाओ चिल्लाने लगा । विसना ड़ण्डे का एक सिरा सोण्टी के मुंह में डालते हुए बोला हरामजादे चुप हो जा नही तो मार डालूंगा । खाने को तो भैंस के बरोबर चाहिये करने को कुछ नही ।
सोण्टी सिसकते हुए बोला–पापा तुम हम दोनो नन्हे –नन्हे भाईयेां और मां की कमाई को दारू में उड़ाने के अलावा और क्या काम करते हो ।
विसना–मुंह बन्द कर नही तो ये खाली बोतल तेरे मुंह में घुसेड़कर मार डालूंगा । रोने की नौटंकी तू अब बन्द कर और दौड़कर जा एक अधा ला ।
सोण्टी–पापा मुझे मार डालो पर मैं दारू लेने नही जाउंगा । आपकी दारू की लत ने घर तबाह कर दिया है ,मम्मी को दूसरों के जूठे बर्तन और झाड़ू पोंछा का काम करने को मजबूर कर दिया है । हमारी पढाई छूट की नज़ैबत आ गयह है । स्कूल की फीस नही जमा हो पा रही है ।पापा अब तो बस करो। क्या आपको कोई फर्क नही पड़ता परिवार की बर्बादी से ?

विसना–नही पड़ता । जाता है कि लात दूं । लात उठाते ही वह लड़खड़ा कर गिर पड़ा ।वह बेटे सोण्टी,मोण्टी और अपनी घरवाली को फूहड़–फूहड़ गालियां दिये जा रहा था । उसके हंगामें को देखकर घर के सामने भीड़ इक्ट्ठा हो गयी ।बाप का ताण्डव देखकर मोण्टी भी दौड़ा–दौड़ा आ गया ।
मोण्टी–पापा तमाशा क्यों मचा रहे हो ।क्यों घर की इज्जत का जनाजा निकाल रहे हो । चढ़ गयी है तो अन्दर जाओ ।
विसना–कैसी इज्जत । यहां बेटा बाप से सवाल कर रहे है । अरे हरामजादो पैदा हमने किया है । बडे मां के पक्षधर बने है तेरी मां अकेले तो नही पैदा की है । तू है कि मेरा बाप बन रहा है । सोण्टी है कि ठेके तक नही जा रहा है ।
मोण्टी–ठीक कर रहा है । पापा तुम्हारे दारू की लत ने हमारी हालत भीखारियों जैसी बना दी है । मां पेट–पर्दा चलाने के लिये झाड़ू पोंछा कर रही है । पापा तुम हो कि तुम्हे मां के आंसू और हमारे उजड़ते हुए भविष्य पर तनिक भी तरस नही आ रहा है ।
विसना मोण्टी का हाथ मड़ोरते हुए बोला अब तू मेरा बाप बनना कर नही तो हाथ तोड़कर हाथ पर रख दूंगा । अरे हरामजादे सब अपनी किस्मत का खाते–पीते है । हमे भी किस्मत का मिल रहा है । बकवास बन्द कर और कलाली की ओर दौड़ लगा ।
मोण्टी–पापा मैं भी नही जाउूंगा ।
विसना–दनादन मोण्टी के गाल पर झापड़ जड़ने लगे । मोण्टी सोण्टी दोनो भाई विलख विलख कर रो रहे थे दरोड़िया गिरता फिर सम्भल कर खड़ा होता और मारने दौड़ पड़ता फिर लड़खड़ाकर गिर जाता । बस्ती के लोग तमाशा देख रहे थे । इसी बीच रीतिका चामुण्डा मां का दर्शन करके आ गयी ।
रीतिका–बच्चों को लहूलुहान देखकर बौखला गयी पर सम्भल कर बोली सोण्टी के पापा तुमको तनिक लाज–शरम है कि नही । अरे बच्चों को जान से मार दोगे क्या ?
विसना–तू बकबक करेगी तो यही हाल तुम्हारा भी करूंगा । हरामजादे बाप की तनिक तीमारदारी नही कर सकते ।
रीतिका–क्यों अब क्या बचा है सारी लाज शरम तो बेचकर पी गये । अब बच्चों की जान लेने पर उतारू हो गये है । क्या सपनों की बारात सजाये थी पर दरोड़िया मर्द अपने हाथों से अपने ही औलादों के सपनों में आग लगा दिया है । कैसा कसाई आदमी है घरवाली के झाड़ू पोछें से की कमाई पर गलछर्रे उड़ा रहा है । घर–परिवार का जीवन नरक बना दिया है ।

विसना–चामुण्डा मांता का दर्शन कर जीवन को स्वर्ग बनाने गयी थी ना । क्या मुराद पूरी नही हुई । हरामजादी अपने जैसे औलादों को बना दी है तनिक कहना तक नही सुनते ।
रीतिका–कुछ तो शरम करो चामुण्डा मांता तो जग की मांता है। तुम नशाखोर क्या समझोगे । तुम्हे तो दारू पीकर भेड़िया बनना भाता है । बच्चों को आंसू देना आता है । अरे बच्चों कके स्कूल की फीस नही दे सकता । बच्चों को दो वक्त की रोटी नही दे सकता । कपड़े लते नही दे सकता तू नशाखोर तो चैन से रह तो सकता है घरवाली की कमाई की रोटी तोड़कर । इतना से भी ही पेट भरा तो घोड़े का मूत पीकर जग हंसाई करने लगा ।
विसना–हराजादी तेरी जबान छुरी जैसी चलने लगी है कहते हुए डण्डा उठाया और दनादना रीतिका को घास जैसे पीटने लगा ।
कसाई बाप के हाथों मां को पीटता देखकर मोण्टी सोण्टी रीतिका को अंकवारों में कस लिये पर कसाई विसना नही माना पीटे जा रहा था । विसना के घर के सामने लोगो का तांता लगा हुआ था पर कोई विसना की गाली की डर से छुड़ाने की हिम्मत नही कर रहा था । आखिरकार विसना थक गया डण्डा उसके हाथ दूर जा गिरा तब वह चबूतरे पर बैठकर गालिया देने लगा । मोण्टी ,सोण्टी और उनकी मां रीतिका आसू बहा रहे थे अपनी नसीब पर । रीतिका हिम्मत करके बोली तुमको दारू चाहिये ना ।
विसना– तेरी औलादे तो नही लाने की कसम खा लिये है अब तू तीमारदारी कर दे ।
रीतिका–ऐसी तीमारदारी करूंगी की जीवन भर याद रखोगे ।
विसना–चल तू कर दे तीमारदारी कहते हुए लम्बी–लम्बी हिचकियां लेने लगा ।
रीतिका–सोण्टी मोण्टी को कमरे में बन्द कर कालिका का रूप धारण कर विसना के सामने वही डण्डा लेकर खड़ी हो गयी । रीतिका का यह रूप देखकर विसना का शरीर कांप उठा । वह मां चामुण्डा का स्मरण कर विसना पर टूट पड़ी । रीतिका विसना को इतनी मार मारी की वह खड़ा होने लायक नही बचा ।हाथ पैर की हड्डी टूट गयी । वह भारी मन से बच्चों के पास जाकर लेट गयी ।नींद तो कोसो दूर थी वह रात भर बच्चों से आंखे चुराकर आंसू बहाती रही । धीरे–धीरे विसना का नशा चकनाचूर हो गया वह रेंगते–रेंगते रीतिका के पास जाकर बोला सोण्टी की मम्मी बहुत दर्द हो रहा है । हाथ और पैर की हड्डी टूट गयी है । कान पकड़ता हूं अब दारू नही पीउंगा । तुम्हारी तीमारदारी जीवन भर नही भूलंगा ।चल बड़े अस्पताल ले चल ।
रीतिका बोली–अस्पताल क्यों कलाली क्यों नही ?

विसना– जीने की अभी तमन्ना है भागवान ।
रीतिका उठी जल्दी–जल्दी स्नान की चामुण्डा मां की पूजा–अर्चना की फिर तीनो मां बेटे विसना को बड़े अस्पताल आटो में डालकर ले गये । जहां विसना के हाथ पैर पर प्लास्टर चढा । दोपहर बाद रीतिका विसना को अस्पताल से घर लेकर आयी । विसना के हाथ पैर के प्लास्टर की खबर तनिक भर में पूरी बस्ती में फैल गयी । बस्ती की भीड़ विसना के दरवाजे पर इक्ट्ठा हो गयी । बस्ती के चौधरी सवाशेर पूछे विसना कल तो ठीक था रात में कैसे चैम्बर में गिर पड़ा ।
विसना–चैम्बर में नही घर में ।
रीतिका–पतिदेव की तीमारदारी मेरे हाथों हुई है ।
सवाशेर–बाप रे ऐसी तीमारदारी ?
रीतिका–काश पहले हो गयी होती । खैर देर आये दुरूस्त आये अब तो तौबा कर लिये ।
सवाशेर–क्या विसना दारू नही पीयेगा ?
विसना–नही भईया अब समझ में आ गया है दारू आदमी को हैवान बना देता है ।
सवाशेर–अब इंसान बन गया घरवाली के हाथ से हाथ पैर तुड़वाकर ।
विसना–सच भईया बुरे काम का नतीजा सुना था बुरा होता है पर हमारे साथ तो उल्टा हो गया ।
सवाशेर–चल खुश रह । रीतिका खूब करना तीमारदारी पर साबूत हाथ पांव का ध्यान रखना ।
रीतिका–भाई साहब पति की तीमारदारी पत्नी का कर्तव्य होता है पर पति भी समझे तब ना
विसना बस्ती वालों की तरफ इशारा करते हुए बोला– भाईयों मैं तो समझ गया हूं । लगता है आप लोग भी समझ गये होगे । काश पहले समझ गया होता तो ये नौबत ना आती।

18–डर

आखें लाल सुर्ख हो रही है ।चेहरा सूजा हुआ लग रहा है । डरी–सहमा सी लग रहा हो क्या हो गया दीदी बताओ ना ।
सावित्री–सुमन सचमुच दिल में डर बैठ गया है ।
सुमन–कैसा डर दी ।
सावित्री–चौदह नम्बर के व्यभिचारी पड़ोसी का । हमारे तो सपनो की बारात उजड़ गयी । रीन कर्ज लेकर घर बनाये थे कि सकून से रहेगे । सकून छिन गया पड़ोस

में व्यभिचारी छबीला बस गया । अब तो डर–डर कर जीना तकदीर बन गयी सुमन ।
सुमन और सावित्रि की चर्चारत् थी इसी बीच मोहित बाबू आ गये और बोले क्या बाते चल रही है ।
सावित्रि– दिल का डर निकल जाये प्रभु की बड़ी कृपा होगी ।
माहितबाबू–तुम्हारे डर ने तो हमारी नींद हराम कर दी है ।
सुमन–सचमुच अमानुष की गिद्धदृष्टि स्त्री के लिये डर की बात है । अमानुष ये भूल जाते है कि उनकी भी मां है,बहन है,बेटी है । यदि दूसरा उनकी तरफ गिद्धदृष्टि से देखेगा तो उनके दिल पर क्या गूजरेगी । चौदह नम्बर वाला छबीला कमीना तो दिन में ही छत पर कूद गया था । एक दिन रात में बीच सड़क पर यही छबीला कमीना विधवा तनोंबेबी को छेड़ रहा था भला हो एक गाड़ी वाले का जिसके बीच बचाव से बेचारी की इज्जत बच पायी । बेचारी बेबी तो शहर छोड़कर भाग गयी ।
सावित्रि–मेरे साथ क्या अच्छा सलूक किया कमीना छबीला । मेरे जवान बेटी बेटे हैं उसकी बेटी से बड़ी मेरी बेटी है। इस चौदह नम्बर वाले कमीना छबीला को तनिक भी शरम नही आई । मैं सुबह सुबह कपड़े धो रही थी बच्चे टी.वी.देख रहे थे छबीला उसकी आंख फूट जाये तन में कीड़े पड़े मेरी छत पर कूद का आ गया । घूम –घूम कर मुझे गन्दी निगाहों से देख रहा था उसकी परछाई मेरे उपर आयी तो मेरी निगाह उपर गयी । मेरे तो जान निकल गयी अचानक जोर से चिल्ला पड़ी । ना जाने कौन सी रेड लाइट एरिया से रण्डीबाज छबीला और उसका आकर पड़ोस में बस गया । अब तो इस कमीने से डर–डर कर जीना होगा ।
सुमन–ये लोग तो पड़ोसी के नाम पर हैवान है जबकि पड़ोसी तो भगवान के समान होता है।
सावित्री–ठग बिल्डर ना जाने कहां से रेडलाइट वाले परिवार को खोज लाया अधिक पैसे की लालच में । जबकि तुमने भी तो इस मकान को खरीदने की कोशि की थी पर तुमको नही दिया । ज्यादा पैसा लेकर गलत आदमी को मकान दे दिया ।भगवान ऐसे लोगो का नाश क्यो नही करता बढावा क्यो देता है ।
सुमन–होगा पर कहते है ना भगवान के घर देर है अंधेर नही । छबीला और उसके परिवार के लोग तो समाज के लिये सड़ी मछली के समान है ।
सावित्री–सचमुच सड़ी हुई मछली है जो पड़ोस की मां बहनो पर नजर डाल रहा है । कमीने को देखकर जोर से चिल्लायी रूक कमीने मैं आ रही हूं आगे –आगे मैं पीछे –पीछे बच्चे छत पर पहुंचे कमीने आंधी की तरह भाग कर दरवाजा लगा लिया। मैं छत पर जोर–जोर से चिल्ला रही थी ।मेरा बदन थर्र–थर्र कांप रहा था । आसपास

दो–चार घर जो है वे लोग बहुत मतलबी है बस अपने काम के लिये मतलब रखते है काम पूरा होते पहचानते भी नही ।
सुमन–आसपास वालो को मिलकर साले को घर में से खींच कर सड़क पर लाकर जूते देना था सावित्री– होता तो यही पर पुष्पा के पापा दफतर चले गये थे । आसपास के दो चार घरो में जो लोग थे मुंह छिपाकर अन्दर चले गये जैसे वे औरत के पेट से ही नही पैदा हुए हो । कोई नही आया । पीछे वाली गली से दिलीप भइया मेरी पुकार सुनकर दौड़कर आये ।मैं आप बीत सुनायी तो वे ललकारते हुए उसके घर में घुस गये । छबीला कमीना छटपट कपड़ा बदलकर पूजा करने का ढोग करने लगा ।
मोहित–काश उस दिन मैं घर पर होता तो तुरन्त पुलिस को फोन करके बुला लेता । मेरे घर पर न होने की वजह से कमीना बच गया । मेरे आने पर उसकी पांचाली भौजाई माफी मांगने आ गयी ।छबीला तो पड़ोसी के नाम पर कलंक है ।
सुमन–हां भाई साहब ठीक कह रहे है । आपकी लाइन को नजर लग गयी है । आपके पड़ोस में सुनील सड़नीस एक नम्बर का मतलबी तो पहले से था जरूरत पड़ने पर थूक चाट लेने को तैयार रहता । वही काम निकलने पर पहचानता तक नही । सुनील सड़नीस से बढकर अब व्यभिचारी परिवार चौदह नम्बर में आ गया है। छबीला खानदानी व्यभिचारी लगता है तभी तो छत पर कूदने की हिम्मत किया । दूसरा आदमी गेट के अन्दर आने की हिम्मत नही कर सकता है।
सावित्री–सुमन ये कमीना घर में घुस गया होता तो उसकी लाश ही बाहर आती ।
मोहित–शाबास रे हिन्दुस्तानी नारी ।
सुमन–हां भाई साहब दीदी ठीक कह रही है,जब औरत इज्जत की रक्षा के लिये खड़ी हो जाती है तब वह जान देने और जान लेने से नही डरती ।
मोहित–छबीले के भूत का डर श्रीमती जी को सता रहा है । छबीला जिन्दगी में अब आंख उठाकर अपने घर की तरफ नही देखेगा । यदि देख लिया तो उसकी आंख फोड़ दूंगा । मेरे खानदान की इज्जत पर कैसे कोई नजर डाल सकता है । हम शरीफ लोग शराफत से जीना चाहते है । ऐसे गिद्धो से कब तक डरेगे? अच्छा तुम लोग बातें करो मैं दफतर जा रहा हूं । पड़ोसी गिद्धों से सावधान रहने की जरूरत है । ये तनिक भी भरोसे के काबिल नही है । मौका मिले तो अपनी बहन के साथ घाट कर सकते है ।
सावित्री–आप तो दफतर जाओ शाम को जल्दी आ जाना । आप चिन्ता ना करना । जरूरत पड़ी तो खून पी जाउंगी । हां सावधान रहने की जरूरत तो है पर डरने की नही। डराना तो छबीले को है । मन तो कर रहा है कि कमीने की आंख निकाल लूं पर मर्यादा से बंधी हूं।

सुमन–दीदी मेरा भी मन ऐसा ही कह रहा है । इस बार तो छोड़ दिये अगर फिर कभी आंख उठाकर देखे तो पुलिस में मामला दर्ज करवा देना ।
सावित्रि–ठीक कह रही हो दुष्टो का इलाज तो होना ही चाहिये अफसोस नही कर पायी। व्यभिचारी अपनी मां बहनों जैसे दूसरो की मां बहनो को क्यो नही समझते ? आंखो में आंसू आंचल में दूध रखने वाली नारी को पापी असहाय ना जाने क्यो समझते है । नारी प्रलयकारी भी बन सकती है अपनी इज्जत की रक्षा के लिये ।
सावित्री और सुमन बाते कर रही थी इसी बीच पुष्पा आ गयी ।
सावित्री–बेटी तू तो दुकान गयी थी ना । लूना और सामान कहां छोड़ आयी ।
पुष्पा– आंसू पोछते हुए बोली बाहर है ।
सावित्री– बाहर क्यो छोड़ दी ।
सावित्री–तू रो क्यो रही है । लूना टकरा तो नही गयी ।
सुमन–पुष्पा को गोद में बैइा कर सिर सहलाते हुए बोली बेटी रोओ मत । क्या हुआ ये तो बताओ ।
पुष्पा की आंखो से आंसू बहे जा रहे थे ।
सावित्री–पुष्पा क्या हुआ एक्सीडेण्ट तो नही हो गया । गाड़ी से गिर गयी थी क्या ?सावित्री पानी का गिलास थमाते हुए बोली लो पानी पीओ और चित को ठौरीक करके बताओ क्या हुआ । मेरा सिर चकराने लगा है ।
सुमन–हां बेटी मुझे भी टेंशन होने लगा है । बताओ क्या हुआ तुम्हारे साथ ?
पुष्पा–छबीला अंकल मेरी लूना के सामने आकर अश्लील बाते कर रहे थे
सावित्री–क्या ?
पुष्पा– हां मम्मी । बहतु गन्दी गन्दी बाते कर रहे थे ।
सुमन–ये छबीला तो अपनी बेटी को भी नही बख्शता होगा जब अपनी बेटी की उम्र से छोटी पुष्पा के साथ गन्दी हरकत कर रहा है ।
सावित्री–राक्षस की इतनी हिम्मत बढ गयी । मेरे छत पर कूद मुझे कपड़ा धोते हुए गन्दी नजर से देखकर छिप गया । वही छबीला राक्षस आज फिर मेरी बेटी को देखकर अश्लील बाते कर रहा था । राक्षस का वध कर दूंगी ।
सुमन–दीदी रूको ।
सावित्री–सुमन राक्षस का वध करना होगा अपनी इज्जत बचाने के लिये कहते हुए सावित्री दौड़ पडी पडोस के चौदह नम्बर के मकान की ओर । सावित्री अरे वो छबीला अपनी मां–बेटी बहन के साथ क्यों नही करता पराई मां बहन बेटियों पर कुदृष्टि डालता है । कहां छुपा है निकल बाहर । तेरा खून पीउंगी आज । सावित्री की ललकार के बाद आसपास की औरते बाहर निकल आयी पर छबीला घर में दुबक गया । सावित्री छबीला का मेन गेट खोलकर अन्दर घुसी घर के दरवाजे पर जोरदार

लात मारी । लात लगते ही दरवाजा खुल गया ।सिर्फ चड्डी पहनकर टी.वी.देख रहा छबीला खिस निपोरते हुए बोला तुम ।
सावित्री–हां शैतान मैं कहते हुए उसके कनपटी का बाल पकड़ी और खीचते हुए बाहर लाकर बीच सडक पटकर छाती पर चढ गयी। दे दनादन चप्पल उसके गाल बजाने लगी । उसकी घरवाली और जवान बेटी देखती रही गयी इतने में आसपास के लोग इक्ट्ठा हो गये । छबीला बचाओ बचाओ चिल्ला रहा था ।
छबीला की घरवाली रसीला बोली – क्यो औरत होकर पराये मर्द की छाती पर चढकर मार रही हो ।
सावित्री–क्या तुम नही जानती हो इस शैतान के बारे में ।
रसीली–क्या हुआ ।
सावित्री–क्या तुम नही जानती हो ये शैतान मेरी छत पर कूदा था । क्या तुम नही जानती हो ये शैतान विधवा बेबी मैडम को अंधेरे में छेड़रहा था बेचारे कोई गाड़ी वाला आकर इज्जत बचाया आज मेरी बेटी पर छींटाकशी कर रहा था । तुम कब जानोगी अपने शैतान पति के बारे में जब अपने ही तन से पैदा हुई बेटी के बच्चे का बाप बनेगा तब ? कहते हुए जोरदार लात छबीला के छाती पर जड़ दी। छबीला की नाक से खून निकल गया ।
छबीला की जवान बेटी पिन्सा सावित्री के पांव पकडकर रोते हुए बोली अब मत मारो आण्टी । पापा को माफ कर दो । मेरी कसम आण्टी छोड़ दो पापा को ।
रसीली–माफ कर दो बहन अब ऐसी गलती नही करेंगे ।
पुष्पा–मम्मी नही छोड़ना मैं पुलिस को फोन करने जा रही हूं ।
रसीली–पुष्पा का पैर पकड़कर गिड़गिडाते हुए बोली बख्श दो बेटी । दोबारा ऐसी गलती नही करेंगे ।
सावित्री–रूक जा बीटिया कहते हुए दे दनादन गिनकर दस चप्पल मारी फिर कनपटी का बाल पकड़कर छबीला को खड़ा करते हुए बोली बोल कर दूं पुलिस के सामने । मेरी छत पर उस दिन कूद कर मेरा तन निहार रहा था । आज मेरी पुष्पा के साथ हरकत करने की कोशि कर रहा था । क्या अपनी मां बेटी के साथ भी ऐसा करेगा । अरे पिन्सा इधर आ आपे बाप के सामने ।
पिन्सा छबीला के सामने खडी हो गयी ।
सावित्री –मेरी बेटी से बड़ी तेरी बेटी है क्या तू इसके साथ मुंह काला करेगा ?
छबीला–गिड़गिडाते हुए बोला मेरी इज्जत नीलाम न करो । ऐसी गलती नही होगी बहन कहो तो थूककर चाट लूं ।
सावित्री–तुम थूकर चाटो चाहे टट्टी करके चाटो तुम पर विश्वास नही कोई कर सकता । तुम्हारे में भले ही दूसरों की मां बहन बेटी को अपनी मां बहन बेटी समझने

के संस्कार न हो पर हमारे खानदान में तो है । ये पिन्सा अपनी कसम ना देती तो तूझे पुलिस के हवाले कर देती जा पिन्सा को शुक्रिया अदा कर । जा माफ किया अब हर पराई मां बहन को अपनी मां बहन समझना । आइन्दा बुरी नजर से मेरे घर की ओर भी देखूंगी तो खून पी जाउंगा
छबीला–हां बहन ऐसी गलती अब दोबारा नही होगी ।
सुमन बोली–देखो ये भेड़िया शराफत की बाते करने लगा। अब ये पराई मां–बहनों को अपनी मां–बहन कहेगा सावित्री दीदी के चप्पल खाकर।
छबीला–हां बहन ऐसा ही होगा ।
सुमन – देखो डराने वाला शैतान का डरने लगा । बोलो सावित्री दीदी की जय ।
इतने में सावित्रीदेवी और नारी शक्ति के गगनभेदी जयजयकार की वीणा घनघना उठी ।

19–मजदूर का बेटा ।

भूमिहीन खेतिहर मजदूर बलवीर काका सात बेटे –बेटियों और अंधी मां का पालन –पोषण अपनी हाड़फोड मेहनत के भरोसे कर रहे थे । इस महायज्ञ में उनकी घरवाली सम्पतिदेवी की पसीना घृत का काम कर रहा था । इसके अलावा बलवीर काका की कोई आढत नही थी । बाप लौटन को गांव के दंबगों ने उनकी जमीन जायदा हड़पकर उन्हे गांव निकाला दे दिया था क्योंकि वे तनिक समझदार थे । मजदूरो /गरीबों का खून पीकर पलने वालों को समझदारी कहा भाती है । बेचारे लौटन दादा ऐसे गये कि फिर कभी ना लौटे। बलवीर काका का परिवार अभावग्रस्त जीवन जीने को मजबूर था । खेती के लिये क्या रहने के लिये दबंगनो ने बीसा भर जमीन नही छोडा था । लाचार को विचार क्या बलवीर दबंगों के खेत में मेहनता मजदूरी कर परिवार पाल रहा था । अंग्रेजो के जामने में जब दबंगो ने गांव निकाला दिया तब गांव छोड़ते समय लौटन दादा ने बलवीर से कहा बेटा मैं जा रहा हूं सदा के लिये पर मेरी एक बात गांठ बांध ले ।
बलवीर–रोते हुए बोला कौन सी बात पिताजी ।
लौटन–हमे–तुम्हे तो रूढिवादी समाज पढने नही दिया यदि मौंका मिले तो हमारे पोते–पोतियो को स्कूल जरूर भेजना । बेटा यह तो हमारा दुर्भाग्य है कि तुम नन्ही सी जान को मुझे छोडकर गांव से जाना पड़ रहा है कौशल्या बलवीर का ख्याल रखना । कौशल्या काठ की मूर्ति जैसे खड़ी रही । दबंगो का प्रहार शुरू हो गया बेचारे लौटन दादा जान बचाकर भागने में कामयाब तो हो गये पर जीवित नही लौटे । बाप लौटन की बात बलवीर खूटें गठियाये रखा । देश आजाद हुआ उसके घर भी किलकारियां गूजने लगी पहली बेटी दूसरा बेटा साल दर साल सात बेटे बेटियां की

फौज खड़ी हो गया । विपदा ने कौशल्या को अंधी बना दिया । बलवीर ने बाप की बात को सदैव याद रखे बच्चों को स्कूल भेजने के लिये प्रयास किया बड़ी मुश्किल को बेटा नरेश का दाखिला करवा पाया । घर में खाने के लाले पड़े थे बच्चों की पढाई लिखाई का खर्च उठाना तो उसके लिये चांद पर चढने जैसा था । बालपन की धुधली यादों में बाप को दिये वचन को पूरा करने के लिये नरेश को स्कूल भेजने के लिये कमर कस लिया । नरेश स्कूल जाने लगा । उसका मन पढाई में खूब लगता । मुंशीजी भी उसकी खूब तारीफ करते । बच्चों के तनिक होश सम्भालते ही भैंस बकरियां भी पालना शुरू कर दिया । अभावग्रस्त जिन्दगी में भी तनिक सकून की बयार चलने लगी थी इसी बीच सम्पति देवी की हालत खराब हो गयी । अस्पताल में भर्ती करना पड़ा बड़े आपरेशन के बाद आटवी सन्तान के रूप में मुन्ना पैदा हुआ । बाप का हाथ बंटाने के लिये छोटे भाई बहनों के साथ मजदूरी करना पड रहा था । एक दिन नरेश गांव के बड़े जमींदार का धान ढो रहा था । इसी दौरान सेना में कर्नल की नौकरी कर रहे बड़े जमीदार के चचेरे भाई खुशीबाबू आ गये । नरेश ने उनका पांव छुआ ।

खुशीबाबू मेड़ पर बैठते हुए पूछे– नरेश स्कूल बन्द तो नही किया ना ?

नरेश– नही चाचा जी । स्कूल से आकर धान ढो रहा हूं ।

खुशीबाबू–कौन सी क्लास में गया ।

नरेश–दसवी में ।

खुशीबाबू– हमारे मजदूर का बेटा दसवीं में पढ रहा है । बलवीर तेरी तकदीर बदलने वाली है । तू तो राजा बनने वाला है । शाबास नरेश .....पढाई जारी रखना । पढ–लिखकर कलेटर बन जायेगा तो तेरे बाप के साथ मेरा भी नाम होगा । लोग कहेगे देखो फलां मजदूर का बेटा है । नरेश धान ढोने के बाद या जब भी समय मिल मुझसे मिलना ।

नरेश– हां चाचा मिल कर जाउंगा ।

दूसरे दिन शाम को नरेश स्कूल से आया और बस्ता रखकर जमींदार के खेत में गन्ना छिलने गया । गन्ना छिलकर गन्ना मशीन पर ढो–ढो कर रखने में रात हो गयी । गन्ना मशीन पर रखकर नरेश खुशीबाबू के सामने हाजिर हुआ ।

खुशीबाबू–इतनी रात को टाइम मिला है नरेश मुझसे मुलाकात का ।

नरेश–चाचा मजदूर का बेटा हूं ना । चाचा गांव के भूमिहीन खेतिहर मजदूरों की दयनीय दशा से अनभिज्ञ तो नही है। गांव का हर भूमिहीन खेतिहर मजदूर पेट में भूख आंखों में सपनों की बारात लिये जा रहा पर ना जाने हम दरिद्रों का उध्दार होगा । चाचा माफ करना मैं अपना रोना रोने लगा । बताइये मेरे लायक काम ।

खुशीबाबू–नरेश मेरे दोनो बेटो और बेटी को देख रहे हो । बेटी तो तनिक होशियार है पर बेटों बिल्कुल गदहे सरीखे है । कहने को छठवी सातवी में पढते हैं पर आता जाता कुछ भी नही है । इन्हें टयूशन पढा दो शाम को एक घण्टा समय निकाल कर ।
नरेश–हवेली में आकर मैं कैसे पढाउंगा । आपके परिवार के लोग कहेगे अछूत लड़का हवेली में घुस आया । चाचा मेरे लिये परेशानी खड़ी हो सकती है ।
खुशीनाथ–तुमको सब जानते है । तुम पढाई में कितने होशियार हो । ज्ञान की पूजा तो हर जगह होती है । घबराओ नही मैं अभी कुछ दिन तक हूं ना । तुमको पढाने की फीस दूंगा । फोकट में नही पढवाउंगा अपने बच्चों को तुमसे कहते हुए खुशीबाबू अपने बेटो–रींकू और टींकू को बुलाने लगे ।
रींकू और टींकू दौड़ते हुए आये और पूछे क्यों बुलाये है पापाजी ।
खुशीबाबू– परिचय करवाने के लिये ।
रींकू और टींकू–किससे ?
खुशीबाबू–इनसे ।
टींकू–पापाजी इनसे क्या परिचय करवाओगे । हम जानते है अपने मजदूर का बेटा है ।
खुशीनाथ–इतना ही नही अब तुम दोनों का गुरू होगा नरेश ।
रींकू और टींकू–क्या.....?
खुशीबाबू–हां तुम दोनो को ज्ञानवान बनायेगा यही मजदूर का बेटा ।अच्छा अब जाओ नरेश । कल से शुरू कर दो अपना काम ।
नरेश–ठीक है चाचाजी ।
दूसरे दिन शाम को सात बजे नरेश हवेली पहुंचा । वहां एक कोने में कुर्सी मेज खुशीबाबू ने लगवा दिया था ।नरेश अपने काम में लग गया । मजदूर का बेटा नरेश हवेली में रींकू और टींकू को टयूशन पढा रहा है यह खबर बड़े जमींदार देवबाबू के बड़े बेटे उखाड़बाबू को जो कई सालों से दसवीं पास नही कर पा रहे थे बेचैन कर दी । वे मन ही मन नरेश को मार भगाने की योजना बना लिये ।खुशीबाबू शहर चले गये थे और टयूशन पढाते सप्ताह भर ही हुए थे कि एक दिन हवेली से कुछ दूर नरेश को पढाकर रात साढे आठ बजे के आसपास जाते समय बड़े बाप के बेटे उखाड़बाबू अपने दो साथियों रोक लिये ।
नरेश–इस तरह से सुनसान जगह में दो लोगों को हाथ में लाठी थामें खड़ा देखकर घबरा गया । दबी आवाज में बोला उखाड़बाबू बोलो क्यों रोक रहे है । मुझे जल्दी घर जाना होगा क्योकि अभी मेरे पिताजी आपके खेत की सिचाई कर रहे है । भैंस बकरी सब चिल्ला रहे होगे ।

उखाड़बाबू– देखो बाप हवेली में माथा पटक रहा है बेटवा पढा रहा है ।अरे बन्द कर दे टयूशनखोरी नही तो लूला होकर बैठ जायेगा । कौन तुमको टयूशन पढाने को बोला है गदहों को । क्या तुम्हारे पढाने से दोनों गदहे कलेटर कमिश्नर बन जायेगे।

नरेश–उखाड़बाबू मैं तो ये नही बता सकता कि क्या बन पायेग पर मै टयूशन जर्बदस्ती नही पढाने आ रहा हूं ।

उखाड़बाबू–कौन बेवकूफ तुम जैसे मजदूर के बेटे से टयूशन पढवायेगा । किसने बुलाया है तुमको ।

नरेश– कर्नल चाचा ।

उखाड़बाबू– कर्नल चाचा क्या समझदार है । अरे समझदार होते तो जिसे बेटे का बाप हवेली में गोबर फेंक रहा है उससे टयूशन पढवाते ।

नरेश–साहस करके बोला उखाड़बाबू हर आदमी किसी ना किसी रूप में मजदूर होता है । हां कोई दफतर में काम करते है कोई आप जैसे जमीदारों के खेत में । दुर्भाग्यवस मुझ जैसे को अछूत कहा जाता है । सलाम ठोकने पर मजबूर किया जाता है । खून को पसीना के बाद मजदूरी में मिलावट कर दी जाती है और उपर से उपकार जताया जाता है । उखाड़बाबू हम भी इंसान है । जाति आदमी ने बनाया है भगवान ने नही। जाति के नाम पर अन्याय क्यों ।

उखाड़बाबू–अभी तो अन्याय नही हुआ है जब हाथ पैर टूटेगे तब असली अन्याय होगा । कान खोलकर सुन लो ये टयूशन बन्द कर दो वरना खाक में मिल जाओगे ।आज तो बस समझा रहा हूं । यदि नही माने तो लट्ठ बजेगी तुम्हारे सिर पर याद रखना । अब भागो कल से तुम्हारी पढाई का प्रर्दशन मेरी हवेली में नही होना चाहिये बस । तुम जैसा अछूत मजदूर का बेटा हवेली में आकर पढाये यह तो हमारी शान के खिलाफ है ।

नरेश–उखाड़बाबू मैं विद्यादान करने आते हूं कमाई करने नही । पांच–दस रूपया से जातिवाद के पोषको का दिया दरिद्रता का अभिशाप नही कट जायेगा । उखाड़बाबू हमार समाज तो सदियो से शोषण का शिकार है पर आज के युग में आप जैसों के हाथों मुझ जैसों का शोषण उत्पीड़न तो आदमियत का कत्ल है ।

उखाड़बाबू–आदमियत के कत्ल को लेकर रोयेगा या खुद के कत्ल से बचकर भागेगा ।

नरेश–उखाड़बाबू मजदूर का बेटा हूं । मेरी भी सूखी हाड़ मांस की काया में आत्मा बसती है । मुझे स्वाभिमान पसन्द है आपको अभिमान का ताण्डव तो कर लीजिये अपने मन वाली ।

उखाडबाबू– देखो मैं तुम जैसे के मुंह नही लगना चाहता हूं । मेरी आखिरी बात कान खोलकर सुन लो कल से टयूशन पढाने के नाम पर हवेली में कदम रखे तो अपने पैरो पर नही जाओगे बस अब जाओ तुम्हारी भैस बकरियां तुमको बुला रही होगी ।

नरेश–उखाड़बाबू कभी नही आउंगा पढाने मैं पढकर दिखाउंगा कि अभावग्रस्त एक मजदूर का बेटा भी सर्वसविधा सम्पन्न बड़े जमीदार के बेटे से भी पढाई के मामले में बहुत आगे निकल सकता है । नरेश अपनी प्रतिज्ञा में सफल हो गया कई बड़ी–बड़ी डिग्रियां हासिल कर लिया। उखाड़बाबू गिर–गिर कर बी.ए. की डिग्री कई सालों में हासिल तो कर लिये । बेचारे रींकू और टींकू बूढे हो गये पर दसवीं की परीक्षा नही पास कर पाये । इस मलाल से मजदूर का बेटा नरेश कभी भी नही उबर पाया ।

20–खादी का कुर्ता

इंस्पेक्टर क्रान्तिलाल गरजते हुए बोले अरे कौशल्ये कहां हो ।

कौशल्या–रसोई से डयोढी पर खड़ी होकर बोली क्योंजी डराते है। इतनी रोबीली आवाज में ये घर है थाना नही । घर के बाहर से आवाज देने लगते हो ।

क्रान्तिलाल–अच्छा नही लगता घर के बाहर से आवाज देना ।

कौशल्या– नही । ऐसे तो जेठ / भसुर आवाज लगाते है ।

क्रान्तिलाल–मतलब मुझमें बदलाव की गुंजाइस है ।

कौशल्या–घर में आ गये हो अब बैठ जाओ । मैं चाय पानी लेकर आती हूं ।

क्रान्तिलाल–पानी का गिलास थामते हुए बोले कौशल्ये कोई आया है क्या ?

कौशल्या–देखो जासूसी करना बन्द करो । चाय–पानी करो नहाओ धोओ । थके मांदे हो । थाने में नही अपने घर में आ गये हो । सामने कोई कैदी नही तुम्हारी अर्धांगिनी जो तीस साल से तुम्हारे साथ है ।

क्रान्तिलाल–हां याद है वह छुईमुई सा तुम्हारा रूप और हमारे बुरे दिन । पद दौलत,सोहरत सब कुछ तो है तुम्हारी तपस्या के बल पर ।

कौशल्या–मैं तो तुम्हारी परछाई भर हूं । परिश्रम तुमने किया है फल तो मिलना ही था देर सबेर ।

क्रान्तिलाल–पद दौलत सोहरत तो है पर औलादों की ओर देखता हूं तो सब ब्यर्थ लगता है । तीन बेटो में से कोई बाप की मेहनत को संवारने वाली नही दिखाई पड़ रहा है ।

कौशल्या–एक बीटिया वह भी अनपढ जैसी रह गयी ।दमाद अच्छा पढा लिखा तो मिल गया पर वह शहर में धक्के खा रहा है । नौकरी कोसों दूर भागी जा रही है दमाद से । दमाद तो हीरा है पर उसकी किस्मत धोखा दिये जा रही है ।

क्रान्तिलाल– मेरे पाकेट में नौकरी तो नही है कि निकालकर दहेज में दे दूं ।
कौशल्या–दहेज में भी कुछ नही दिये हो । कम से कम नौकरी के लिये कोई सिफारिश कर देते । बीटिया आराम से नहाने खाने लगती । अब तो गोद भी हरी हे गयी है ।
क्रान्तिलाल–दमाद की नौकरी के लिये हाथ फेलाने जाउ लोग क्या कहेगे ।
कौशल्या–साहब सुबा हो किसी से भी बोल सकते हो ।दमाद दर–दर की ठोकरे खा रहा है कि अपनी उंची नाक लेकर बैठे हो । बेटी दमाद सुख चैन से रहने लगेगे तो इससे नाक और उंची हो जायेगी । इंस्पेकटर साहब का दमाद दर–दर धक्के खा रहा है यह बात नाक नीची करने की है ।
क्रान्तिलाल–बेटों के लिये तो किसी के आगे हाथ नही फैलाया तो दमाद के लिये कैसे फैला सकता हूं ।
कौशल्या–कौन से बेटे को उंची पढाई करवाये हो कि हाथ फैलाओगे । दमाद लायक है उसके लिये सोच नही रहे हो । अरे इसमें तो अपनी बीटिया का सुख भी तो निहित है । रही बेटो की बात तो उनके लिये तो तुमने इतना जोड़ दिया है कि नौकरी करने की जरूरत ही नही पड़ेगी । लाखों में एक पढा लिखा दमाद स्टील फैक्टरी में तो कभी मण्डी में तो कहीं कहां काम कर रहा है उसकी तनिक फिक्र नही है । चौबीसो घण्टे बेटों के बारे में गुनते –धुनते रहे है ।
क्रान्तिलाल–देखो मैं दमाद के लिये नौकरी की भीख मांगने से रहा । रही बात नौकरी की तो ईश्वर को मिलेगी ।
कौशल्या–कैसे ?
क्रान्तिलाल– तकदीर के भरोसे । यदि तकदीर में नौकरी नही लिखी होगी तो ईश्वर भी अपने बाप की तरह से हरवाही–चरवाही करके गुजारा तो कर ही लेगा । मुझे मालूम है वह बीटिया को कोई तकलीफ नही पड़ने देगा । मुसीबते उठाकर भी वह बीटिया को सुख देगा ऐसा मेरा विश्वास है ।
कौशल्या–कैसे बेटी के बाप हो । लोग बेटी दमाद को जीवन भर की कमाई देने को तैयार है । तुम हो नौकरी के लिये सिफारिश को तौहीनी मान रहे हो ।
क्रान्तिलाल–कौशल्या बेकार कर फिक्र ना करो । बीटिया की किस्मत में सुख लिखा होगा तो जरूर मिलेगा हमारे देने से कुछ नही होगया ।
कौशल्या–कौशल्या आप दमादजी की मदद नही करना चाहते हो ना ।ठीक है जैसे मेरी तपस्या तुम्हारे काम आयी वैसे ही बीटिया की तपस्या दमादजी की तकदीर बदल देगी ।इंस्पेकटर साहब लो पैग लगाओ खाना तैयार है । खाकर सो जाओ बेटी दमाद को आंसू बहाने दो अपनी किस्मत पर ।

क्रान्तिलाल– कौल्या नाराज ना हो । मेरे हाथ में कुछ नही है सब भगवान के हाथ में है । दमाद की मेहनत और बीटिया की पूजा का प्रतिफल जरूर मिलेगा । हमे फिक्र करने की जरूरत नही ।
कौशल्या– मैं नाराज होकर भी क्या बिगाड़ सकती हूं । बेटी–दमाद की चिन्ता भले ही तुमको नही है हमे तो बहुत है रात की नींद गायब हो जाती है जब दमादजी के संघर्ष के बारे में सोचती हूं । कितना दुख उठा कर पढाई किये । उनके बाप की कमाई भी तो कुछ नही थी खेती किसानी में कितनी कमाई होती है दमाद जी अपने गांव से दस कोस दूर साइकिल से कालेज जाकर पढाई पूरी किये क्योंकि उनके बाप में तुम्हारे इतना सामर्थ्य था कि बेटे को शहर भेजकर पढा पाते । तुम तो नही पढा पाये ईश्वर के बाप ने हरवाही चरवाही ही सही करके के इतना पढा दिया कि तुम्हारे सात पीढी तक कोई इतना पढा लिखा नही है ।
क्रान्तिलाल–ताना क्यों मार रही हो मुझे । अरे ईश्वर का हरवाह–चरवाह बाप नौकरी लगवा देगा । बहुत ऐठन में था न ईश्वर की पढाई को देखकर । नौकरी लगवा कर दिखा दे तब ना जाने उसके ऐठन का दम ।
कौशल्या–अच्छा तो ये अफसर समधी की हरवाह समधी को नीचा दिखाने की कार्रवाई है ।अरे इतना ही नागवार थी रिश्तेदारी तो बीटिया का ब्याह क्यों किये ।
क्रान्तिलाल–बड़े भाई साहब की जिद के आगे मेरी एक ना चली । मैं तो बीटिया का ब्याह किसी रईस खानदान में करता हरवाह –चरवाह के घर में कभी नही करता । भईया ने पानी फेर दिया मेरी सोच पर ।
कौशल्या–तुम भले ही रईस परिवार ढूंढ लेते पर ऐसा दमाद तुम्हे कभी नही मिलता । क्यों भूल जाते हो । यही दमाद बेटो से अधिक तुम्हारी सेवा–सुश्रुषा करता है । उसी दमाद के बारे में तुम ऐसा सोच रहे हो ।बेटों को राजा–महाराजा बनाने की सोच रहे हो बीटिया के बारे में तनिक भी नही ।वाह रे बेटी के बाप ।
क्रान्तिलाल–बेटी के प्रति जो अपना फर्ज था पूरा कर दिया । उसका ब्याह –गौना करके गंगा नहा लिया । अब तो बस बेटों की चिन्ता बची है ।
कौशल्या–व्याह गौना के अलावा बाप का बेटी के प्रति कोई फर्ज नही बचता ।
क्रान्तिलाल–नहीं.....बीटिया की किस्मत ईश्वर दमाद के साथ जुड़ गयी है । बीटिया की चिन्ता अब हमारी नही उसके परिवार की है । उसके पति ईश्वर की है । मैं अपना फर्ज निभा चुका हूं । बस अब बहस ना करना ।
कौशल्या–भला मैं इंस्पेक्टर साहब से कैसे बहस कर सकती हूं ।
क्रान्तिलाल–भइया की वजह से फूल जैसी बेटी दरिद्र के घर में ब्याहना पड़ा । भइया जिद पर अड़े थे कि ईश्वर कालेज से निकलते ही कलेक्टर बन जायेगा ।

देखो अब नन्ही सी नौकरी नही मिल रही है । अच्छे खाते–पीते खानदान में बेटी का ब्याह होता तो ये दिन नही देखने पड़ते ना ।
कौशल्या–देखो जेठ जी ने जो किया अच्छा किया है । बीटिया जरूर राज करेगी । कहते है ना घुरे के दिन भी फिरते है दमाद पढा लिखा है नौकरी जरूर मिलेगी । आप भी दमाद के गुण गाओगे । करोड़ो में एक हमारा दमाद है ।
क्रान्तिलाल और कौशल्या की बातचीत चल रही थी । इसी बीच ईश्वर आ गया । गठरी रखते हुए बोला अम्माजी सब समान ला दिया हूं । मै अब अपने क्वार्टर जा रहा हूं ।
कौशल्या–दमादजी खाना खा लो ।
ईश्वर–नही अम्माजी । मुझे जाना है ।
कौशल्या–कहां दमादजी ।
ईश्वर–शहर छोडकर जा रहा हूं ।
क्रान्तिलाल–हमेशा के लिये क्या .....?
ईश्वर– हां बाबूजी ।
क्रान्तिलाल–हलवाह पुत्र के लिये न तो शहर में और नही अपनों के दिल में जगह बची है ।
ईश्वर–अम्मा मेरा कुर्ता खूंटी पर टंगा है दे दीजिये ।
क्रान्तिलाल–खादी का कुर्ता ।
ईश्वर–हां बाबूजी ।
कौशल्या खादी का कुर्ता लेकर आयी । कुर्ता लेकर ईश्वर सास ससुर का पांव छुकर शहर को अलविदा कह दिया ।
ईश्वर के जाने के बाद कौशल्या बोली इसी कुर्ते को देखकर पूछ रहे थे कोई आया है क्या अब समझी ।
क्रान्तिलाल–अरे ईश्वर के पास कपड़े लते नही थे तो मुझसे कहा होता । कल ही की तो बात है कुछ पुराने कपड़े किसी को दिये थे ना ।ईश्वर को दे देता ।
कौशल्या–तुम्हारा चिथड़ा दमादजी पहनने को है क्या ? तुम्हारे पुराने कपड़े से कई गुना अच्छा उनकी खुद की कमाई का खादी का कुर्ता है ।
कहते है परिश्रम का फल मीठा होता है । वही हुआ समय ने करवट बदला और ईश्वर की तकदीर ने भी । वही इंस्पेकटर क्रान्तिलाल दमाद ईश्वर की खूबिया और बेटों की कमियां गिनाने में अपनी शान समझने लगे । लोगो से कहते भगवान सबको दमाद दे हमारे ईश्वर जैसा ।
कौशल्या–खादी के कुर्ते वाला दमाद ।
क्रान्तिलाल–हां वही ।

कौशल्या–खादी के कुर्ते वाले दमाद के मान–सम्मान और बीटिया का सुख देखकर देखकर जेठ जी की जौहरी आंखों का मोल समझ में आया की नही ।
क्रान्तिलाल–हां आ गया । ईश्वर ने पत्थर पर निशान गढ दिया । खादी के कुर्ते वाला दमाद खुद को हीरा साबित कर दिया । यही तो मेरे सपनों की बारात थी । द्वारपूजा भी हो गयी। चैन से मर सकूंगा कौशल्ये ।
कौशल्या –क्या ?
क्रान्तिलाल–हां । खादी का कुर्ता बस कुर्ता नही जनून है और स्वामिभान भी है समझ गया ।

21–पड़ोसवाले भाई साहब।

भूमिहीनखेतिहर मजदूर रामकर मालिक के खेत में दिन भर पसीना बहाने के बाद सूरज डूबने के बाद घर पहुंचा । टोकरी और फावड़ा एक ओर रखकर नीम के चबूतरे पर बैठ कर घरवाली शान्तिदेवी को आवाज देते हुए बोला भागवान एक लोटा पानी दे जा ।
शान्तिदेवी– लोटा में पानी और कटोरी में गुड़ लेकर आयी । रामकरन को थमाते हुए बोली लो पानी पीओ मै चिलम चढाकर लाती हूं ।
रामकरन–हां थोड़ा जल्दी कर देह अकड़ गयी । दिन भर फावड़ा चलाना पडा है ।
शान्तिदेवी– भूमिहीनखेतिहर मजदूर का जीवन नरक हो गया है । अपने तो बच्चों अभी छोटे है। सोची थी कि विजय तनिके का सहारा साबित होगा पर वो तो गौना आते ही बेगाना हो गया ।
रामकरन–हां अब वो सब कुछ भूल चुका है । मां फेंक गयी जन्मते ही ,कितना दुख उठाकर हमने उसे पाला है । आज सब नेकी भूल गया । अब बस उसकी घरवाली विभा ही सब कुछ उसके लिये है । हम तो दुश्मन हो गये है जैसे । वह यह भूल गया है कि जिसकी बदौलत वह शहर में बड़ा मिस्त्री कहा वह हम और तुम है । हमारी अगुंली पकड़कर चलना सीखा । हमारे खून पसीने की कमाई से पढा लिखा अपने पैरों पर खड़ा हुआ वही चिढा रहा है ।
शान्तिदेवी–विभा बहू कह बोयी आग है । वह तो कहती है वे शहर से पैसा कौड़ी न दे तो कपड़े लते को पूरा परिवार मोहताज हो जाये ।
रामकरन–पहली बार अपने गौने पर अपने चचेरे भाई बहनों के लिये कपड़ा लाया था । उसका इतना बड़ा ताना ।वह भी विभा किशोर बेटवा के तन से उतरवा ली थी गौना के महीने भर बाद । हे भगवान मेरी नेकी मे कोई खोट तो नही थी ।
शान्तिदेवी–विभा दो चूल्हे करवाने की पूरी फिराक में है जब से डयोढी पर पांव रखी है।

रामकरन–मै मान–मर्यादा के लिये मर रहा हूं । विभा दूध की मक्खी की तरह फेंक रही है । उसी के इशारों पर विजय भी नाच रहा है ।
शान्तिदेवी–मेरे दूध का मोल भी बिसार रहा है । भले ही उसगी सगी मां नही हूं पर सगी मां से ज्यादा जतन की हूं । छाती से लगाकर पाली हूं । सगी मां तो फेंक गयी थी कुत्ते–बिल्लियों के आगे । आज विजय हमारी नेकी पर मूत रहा है । मेरे सपनो की बारात में विजय और विभा डाका डाल रहे है । ये कैसा प्रतिफल है नेकी का भगवन...
रामकरन–अरे पहले ही कौन हमारी मदद करता था । जब देखो तब बीमार की ही तो चिट्ठी आती थी । कमाई दबा कर रखता जा रहा था । पालन–पोषण से लेकर ब्याह गौना सब कुछ तो हमने ही ने किया है यही सोचकर की विजय बेटवा एक दिन सहारा बनेगा पर वह तो डूबो रहा है ।उसकी घरवाली के लिये हम और हमारा परिवार दुश्मन लग रहे है । भगवान भी न जाने मुझ गरीब से क्यो रूठा हुआ है जिसे सहारा समझा था वही अरमानो को लतिया रहा है।
शान्तिदेवी–विभा गौने के पहले दिन से ही हमें पराया समझ रही है । बहू के मां बाप चाहते है कि विजय इसे जल्दी से जल्दी शहर ले जाये । गांव की धूल मांटी में कैसे रहेगी । बच्चे बहू के उपर जान छिड़कते है पर विभा है कि बिच्छू की तरंह डंक मारने को तैयार रहती है । हमारे बच्चों को तनिक भी अपना नही समझता है । किशोर ने एक दिन विजय की पुरानी कमीज पहन लिया था । विभा ने किशोर को खूब डांटी और विजय के कपड़ों को हाथ लगाने तक को मना कर दी । तुम्हारी हाड़फोड मेहनत से खड़े गांव समाज की जमीन पर खड़े घर में आधे की हिस्सेदारी भी जताने लगी है । यह बात बस्ती के घर –घर में पहुंच चुकी है । किशोर के बाबू यदि विजय घर हड़प लिया तो हम कहां जायेगे । विजय की परवरिश करके हमने अपने दुर्दिन के बीज बो दिये क्या ?
रामकरन–नही रे नेकी की जड़ आसमान तक जाती है । हमने कोई अपराध तो नही किया है । विभा धीरे–धीरे सब समझ जायेगी । देखना उसके इस परायेपन के व्यवहार में अपनापन छा जायेगा । तुम अपनी तरफ से कोई गलती मत करना । ठीक है काकी सास हो पर सगी सास जैसी बनी रहना । हम चार बेटियों के मां बाप है पराये घर से आयी बहू को बेटी जैसा ही मान देगे । यदि हमारे प्रति उसके मन में नफरत कहीं से भर गयी है तो हम अपनेपन से खत्म कर देगे । विजय समझदार है पढा लिखा है । भले ही अपनी कमाई हमे नही दे रहा है तो क्या वह हमारे परिवार का आशियाना कैसे छिन सकता है । गांव के लोग जो शहर में है वे जब आते है तो बताते है कि विजय पास इतनी दौलत है कि वह दस–बीस बीघा जमीन खरीद सकता है । वह नेकी के बदले घाव देगा क्या ?

शान्तिदेवी–किशोर के बाबू आसार तो ऐसे ही लग रहे है ।
रामकरन–नेकी अभिशप बनेगी क्या ?अपनी नेकी में खोट कैसे हो सकती है । हमने तो अपना और अपनी औलादों का पेट काटकर विजय का पालन पोषण किया है ।
शान्तिदेवी–मैं भी बहुत असमजंस में हूं । गांव में उड़ रही बातों को लेकर । सुना है विजय ने शहर में कोठी भी बनवा लिया है । यदि ऐसा है तो वह अपनी कोठी में विलास करेगा विभा को लेकर । हमारी खपरैल के घर को क्यो हडपेगा ।
रामकरन–जितने मुंह उतनी बातें ।कौआ कान लेकर गया कौआ के पीछे भागने से पहले अपना कान देखो । यदि विजय के मन में पाप समा ही गया तो उसमें कोई कर भी क्या सकता है । उसके पास अपरम्पार दौलत है,थाना पुलिस में तहसील कलेटर आफिस में खर्च करेगा। कहते है ना मांता बड़ी ना भइया कलयुग में तो सबसे बड़ा रूपइया । हम छुछे को कौन पूछेगा । हमें तो बस भगवान का सहारा है ।
शान्तिदेवी–ठीक कह रहे हो जिसका कोई नही उसका तो भगवान होता है ।
रामकरन–देखो किशोर की मां हौंशला मत पस्त होने दो । हमारे पास है भी क्या पांच बीसा आवण्टन की जमीन बीसा भर जमीन पर खड़ा घर । अगर विजय और विभा के मन में चोर बैठ गया।ये हमारी जमीन छिन भी लिये तो क्या हमारे बच्चों की तकदीर तो नही छिन लेगे ?
शान्तिदेवी–खबर लगी है कि विजय विभा को शहर बुलाया है ।
रामकरन–बात यहां तक पहुंच गयी अपने को खबर तक नही लगी ।
शान्तिदेवी–हां विभा का कोई दूर का भाई विजय के पास रहता है उसी के साथ जाने वाली है । अरे जा रही है अपने पति के पास तो हंसीखुसी से जाती हम कोई उसके दुश्मन तो न थे । पालन पोषण, पढाई लिखाई ब्याह गौना सब हमने ही तो किया है विजय का तो हमसे इतनी चोरी क्यो ?
रामकरन–अरे विजय को विभा को शहर में ही रखना है तो कायदे से खुद आकर ले जाता दूर के रिश्तेदार के साथ क्यों बुलवा रहा है । हम विभा को शहर जाने से क्यों रोकेगे। विजय और विभा दोनों खुश रहे यही तो हमारी ख्वाहिश है।
शान्तिदेवी– किशोर के बाबू रात काफी हो चुकी है सो जाओ । किस्मत में जो होगा होकर रहेगा । सुबह जमीदार के खेत में खून पसीना करने जाना है कि नही ।
रामकरन–क्यों नही । रोटी कैसे मिलेगी ? ठीक है मुंह ढंककर सो जाता हूं । तनिक देर में रामकरन खर्राटा माारने लगी ।शान्ति देवी को भी करवटे बदलते–बदलते नींद आ गयी ।
शान्ति सबेरे सबेरे उठकर भैंस बैल की हौंद धोकर पानी डाली। गोबर उठाई इतने में उजाला हो गया । उजाला होने पर भैंस बैल को हौंदी लगाकर विभा को आवाज देने

लगी । विभा.... विभा सुनकर रामकरन चिल्ला उठा अरे भागवान तनिक सो लेने देती ।
शान्तिदेवी –काम पर नही जाना है क्या ?
रामकरन–काम पर नही जाऊंगा तो रोटी आसमान पर से गिरेगी क्या ?
शान्तिदेवी–अरे कभी गिरी है कि आज ही गिरेगी ?उठो तनिक भर में एकदम से उजाला हो जायेगा मैंदान कहा जाओगे ।
रामकरन–ठीक है मैदान होकर आता हूं ।
राामकरन मैंदान होने गया । मैदान होकर सड़क के किनारे से बबूल की दातौन तोड़ा करता हुआ घर आया । हैण्डपाइप चलाकर मुंह धोने लगा । इतने में शान्तिदेवी दाना–चबैना और लोटा में पानी लेकर आयी । रामकरन को थमाते हुए बोली लो जी पानी पीओ मैं हुक्का चढा लाती हूं । शान्तिदेवी हुक्का चढाने मड़ई में गयी । हुक्का चढाकर बाहर निकली इतनी में चौंककर बोली देखो किशोर के बाबू वो समधीजी आ रहे है क्या ?
रामकरन–कौन समधी ?
शान्तिदेवी–अरे विभा के पिताजी ?
रामकरन–झलफलाहे समधीजी आ रहे है ।
शान्तिदेवी–देखो महुआ तक आ गये ।
रामकरन–हां वही है ।
इतने में सकलू आ गये और बोले भईया समधन जी दूर से पहचान लेती है तुम पास से भी नही पहचान पाते ।
रामकरन–समधीजी आंख का दोष है । खैर बताओ इतना सबेरे कहां से आ रहे है ?
सकलू–घर से आ रहा हूं । विभा के मां क तबियत खराब है । विभा को विदा कर दो ।
रामकरन–क्या ?
सकलू–हां
रामकरन–बहुयें ।
सकलू–दोनो शहर चली गयी । हम दोनो बूढा–बूढी घर में हैं ।
रामकरन–ठीक है भइया । मुसीबत में रिश्तेदार काम नही आयेगे तो कौन आयेगे । कुछ बन जाता है खा लीजिये । इसके बाद जाइये ।
सकलू–तुरन्त जाना होगा ।
दोनों समधी आपस में बाते कर ही रहे थे कि विभा पेटी लेकर बाहर निकल आयी और अपने पिताजी से बोली चलो बाबू....

रामकरन यह देखकर हैरान रह गया । वह माथा ठोंकते हुए बोला बहू जल्दी आ जाना ।तुम्हारे बिना ये घर सूना हो जायेगा ।
शान्तिदेवी–हां बहू विजय के काका ठीक कह रहे है । तुम्ही तो इस घर की लक्षमी हो । अपनी मां की सेवा सुश्रुषा अच्छी तरह से करना । ये समधनजी का हालचाल लेने जल्दी जायेगा । उनकी तबियत ठीक हो जाये तो आ जाना ।
विभा–ठीक है अम्मा ।
सकलू विभा को विदा करा ले गये बीमारी तो बस बहाना बनाकर । उन्हे तो विभा को दमाद विजय के पास शहर भेजना था भेज दिये । विजय और विभा पन्द्रह साल की बेटी बारह और पांच साल के बेटों को लेकर गांव लौटे । रामकरन शान्तिदेवी और उसके बच्चों ने बड़ी आवभगत की पर वह सांप की तरह फन फड़फडाता रहा । उसके व्यवहार को देख्कर रामकरन और शान्तिदेवी पूछे विजय बेटा मेरे पास तो शहर जैसी खाने रहने की व्यवस्था नहीं । तुम चिन्ता मत करो बच्चों को कोई तकलीफ नही होगी । ये बच्चे हमारे घर आंगन के गहना है ।
विजय–काका मुझे अलग रहना है । तुम्हारे परिवार के साथ मैं और मेरा परिवार नही रह पायेगा । मैं तो आना भी नही चाह रहाथा पर विभा की जिद के आगे मेरी एक ना चली । काका एक कमरा दे दो जब तक रहेगे बना खा लिया करे ।गरमी की छुट्टी खत्म होते ही बच्चे शहर चले जायेगा । निश्छल रामकरन विजय के षणयन्त्र को नही समझ पाया । ठीक है हमारे साथ तकलीफ है तो एक क्या तुम दो कमरा में रहो । हमें तो पोता –पोती खेलाने को चाहिये तू जैसे चाहे वैसे रह ।
विजय–पोती–पोती तो तुम्हारे है खूब कंधे चढाओ । मुझे कहां यहा रहना है। मैं तो बेटी का ब्याह कर शहर चला जाउंगा । काका तुम्हारा घर हड़पूंगा नही ।
रामकरन–ठीक है जब तक इच्छा हो रहो कहां पराये हो जैसा मेरे लिये किशोर है वैसे तुम हो । किशोर की मां की छाती चूसकर तुम भी पले हो । किशोर और तुम्हारे बच्चे साथ खेलेगे तो मुझे और तुम्हारी काकी को तो धरती पर स्वर्ग का सुख मिल जायेगा ।
विजय दस दिन के बाद फिर शहर चला गया । पहली जुलाई को फिर गांव वापस आ गया । बेटा बेटी का नाम स्कूल में लिखा फिर फुर्र से उड़ गया ।
धीरे –धीरे कई साल बित गये । अब रामकरन को दाल में कुछ काला दिखने लगा । रामकरन का शंका सही साबित हुई । विजय का परिवार रामकरन के घर में रहने लगा । दो साल के बाद विजय ने रामकरन के घर पर कब्जा करने के लिए कोर्ट में मुकदमा दायर कर दिया । रामकरन की आर्थिक दशा दयनीय थी ।कोर्ट कचहरी के खर्चे से टूटकर हथियार डाल दिया अब क्या विजय आधे का मालिक बन बैठा । समय ने करवट बदला रामकरन के घर खुशियों का आना शुरू हो गया । किशोर

बी.ए. पास कर शहर चला गया । शहर में सालों भटकने के बाद नौकरी मिल गयी । अब क्या रामकरन के घर में खुशहाली की जड़े जमने लगी । इसी बीच विजय के बीटिया रानी का ब्याह पड़ गया । किशोर भतीजी के ब्याह में सोने की अंगूठी कपड़ा लता जो बना पुरानी सारी रंजिशें भुलाकर सगे भाई की तरह ब्याह में सपरिवार शामिल हुआ । बारात विदा होते विभा किशोर की शिकायत में जुट गयी जो आता उससे कहती । अरे किशोर ने तो अंगूठी नाम करने के लिये दिया । चार ग्राम की अंगूठी मेरी रानी पहनेगी क्या ? वो तो ले ही नही जा रही थी । मैं जर्बदस्ती दी हूं । अरे नही देते कौन मांगने गया था कि मेरी रानी के ब्याह में सोने की अंगूठी देना । साड़ी तो रस छनना सरीखे थी चूड़िहारन को जैसे तैसे दी हूं ।
भतीजी के ब्याह को अपनी बेटी का ब्याह समझने वाला किशोर आंखों में आसूं भरे मां शान्तिदेवी के सामने खड़ा हुआ । उसे देखकर वह बोली बेटवा क्यों परेशान हो ।
किशोर–मां पड़ोस वाले भाई साहब के घर से उठी शिकायत की लपट चेहरा जला रही है ।
शान्तिदेवी–बेटा विजय और विभा हमारी नेकी को लतिया दिये तो तुमको कहां छोड़ेगे । तुमसे जो अच्छा हो सका किये । बेईमान के घर से उठे इल्जाम का धुआ हमारा चेहरा कभी नही काला कर सकता । बस्ती वाले तो उल्टा उसके मुंह पर थूक रहे है। बस्ती वालों से छिपा तो कुछ नही है ।सब तुम्हारी वाहवााही कर रहे है । विभा और विजय कुछ भी कहे कहने दो क्या होता है ।हमने भलाई किया है ।बुराई तो हमारे साथ विजय और विभा ने किये है ।इसके बाद भी हम दुआ करते है कि वे खुश रहे ।
किशोर–मां पड़ोस वाले भाई साहब है कि हमारी राहों में काटे बो रहे है ।
शान्तिदेवी–बेटा नफरत के बीज तो दुष्ट लोग बोते है । तुम तो नेकी करो और भूल जाओ । सच्चे आदमी के सपनों की बारात को भगवान संवारता है । भगवान तुम्हारी मदद जरूर करेगा बेटा। उस पर हमेशा विश्वास रखना ।
किशोर–हां मां तुम्हारी सीख को कभी नही भूलूंगा भले ही पड़ोसवाले विजया भाई साहब और उनकी घरवाली हमारी राह में कांटे क्यों ना बिछाये। उनके रंगों में भी तो इसी खानदान का रक्त दौड़ रहा है ।
शान्तिदेवी–शाबास मेरे लाल ।
किशोर–तुम्हारे पास हाड़फोड़ मेहनत की सेर भर कमाई थी । मां मेरे पास तो सरकारी नौकरी की तनख्वाह है । वादा करता हूं तुम्हारी तरह नेकी की राह पर चलूंगा मां ।

22–मौत के सौदागर।

अरे बाप रे आदमी मौत का सौदागर हो गया है । कितनी भयावह खबर छपी है । पढ़कर रोगटे खड़े हो गये जिन लोगों ने अपनी आंखों से देखा होगा उनकी क्या हाल हुई होगी । क्यों चीख पुकार कर रहे हो कहते हुए नन्दिनी सामने खड़ी हो गयी ।

सन्तोष–लो खुद की आंख से देख लो अखबार में छपी दिल दहला देने वाली खबर ।आज आदमी मौत का सौदागर हो गया है ।

नंन्दिनी मेरे हाथ में आटा लगा है आप ही सुनो दो ।

सन्तोष–आदमी आदमी की हत्या बाद शिनाख्त मिटाकर कमाई करने लगे है । बेचारे मृतको के घर परिवार के सपनों की बारात में हैवान किस्म के लोग आग लगा दे रहे है । आदमी कितना दरिन्दा हो गया है ।मौत का सौदागर बन गया है । अमानुष लोग कैसे–कैसे भयावह धंधा करने लगे है । आदमी के रूप में आदमी,आदमी की मौत बनकर घूम रहे है । कैसे कमजोर,सीधे–साधे लोग दरिन्दों से बच पायेगे ?

नन्दिनी–ठीक कह रहे हो स्वार्थ के इस युग में आदमी को पहचानना बहुत कठिन हो गया है । कहते है सोना परखे घरी–घरी आदमी परखे एक घरी वाली कहावत आज के आदमी पर लागू नही हो रही है क्योकि वह चेहरा बदलने में इतना माहिर हो गया है । अदमी के पल–पल मुखौटे बदलने का ही तो नतीजा है कि आदमी नरकंकाल तक का भयावह धंधा करने लगे है । कुछ साल पहले ताबूत काण्ड आम आदमी को हिलाकर रख दिया था । स्वार्थ में आज का आदमी इतना पागल हो गया है कि अपने स्वार्थ के अलावा कुछ सूझ ही नही रहा है । क्या जमाना आ गया है आदमी मौत का सौदागर बन गया है ।

सन्तोष–सच आज के इस युग में आदमी स्वार्थ के जाल में ऐसा उलझ गया है कि वह अच्छे–बुरे में अन्तर नही कर पा रहा है । पागलपन में मदहोश का कत्ल कर अपनी खुशियों की नींव रख रहा है ।

नन्दिनी–अखबार वाली खबरों को तनिक छोटी करके बताओगे क्या ?

सन्तोष– सुनो भोले बाबा की नगरी में पुलिस ने एक ऐसे खूनी गिरोह का भण्डाफोड़ किया है जो फर्जी नाम से आदमी का बीमा करवाता था और बाद में किसी मासूम गरीब को अपने जाल में फंसाकर मौत के घाट उतार देता था । इस गिरोह के दरिन्दे बीमा कम्पनी से कई क्लेम भी ले चुके है । ये मौत के सौदागर अपने काले कारनामें को सफेद कर बीमा कम्पनी की आंखों में धूल झोंक कर करोड़ों का चूना लगा चुके है ।

नन्दिनी–बाप रे आदमी इतने बड़े कसाई हो गये है कि आदमी को बकरा–मुर्गी की तरह काटकर लाश को कमाई का जरिया बना रहे है । हे भगवान तुम्हारे आदमी

को ये क्या हो गया कि आदमी से हैवान हो गया । अच्छा ये बताओ इन दरिन्दों के खूनी खेल का पर्दाफाश कैसे हुआ ?
सन्तोष–छपी खबर के अनुसार ये दरिन्दें मासूल गरीब को अपने जाल में फंसाकर उसकी हत्या करने के बाद चेहरा ऐसे कुचल देते थे कि शिनाख्त ही नही हो पाती थी । ये दरिन्दें फर्जी नाम से करवायें बीमे के आदमी को मृतक बताकर क्लेम ले उड़ते थे ।
नन्दिनी–अब ये बात मत दोहराना डर लगने लगा है । आप तो बस ये बताओ कि हैवानों का भण्डा कैसे पुलिस फोड़ी ।
सन्तोष–भागवान मैं कोई जांच अधिकारी तो नही । अखबार में सब छपा है ।
नन्दिनी–मैं कहां कह रही हूं कि तुम जांच अधिकारी हो। जांच अधिकारी से बड़ा अधिकारी बनने की काबिलियत तुममें तो है । आदमी द्वारा रचा चक्रव्यूह की देन कहे या नसीब का खेल लाख काबिलियत होते हुए भी तुम्हे तरक्की से पीछे ढकेला गया । खैर वो सब छोड़ो तुम तो मासूम कमजोर के सपनों को डंसने वाले मौत के सौदागरों की करतूत बताओ ।
सन्तोष–सुनाने में मेरे पैर कांपने लगे है । खैर सुनो– पुलिस द्वारा एक बीमा कम्पनी के आववेदन पर जांचकी जा रही थी । बीमा कम्पनी सड़क दुर्घटना मे मारे गये मासूमेन्द्र जो वास्तवम में मौजेन्द्र जो एक मजदूर था की मौत पर बीमा कम्पनी को शंका हुई उसने मामला पुलिस को जांच के लिये सौप दिया।
नन्दिनी–बीमा कम्पनी को शंका इसीलिये हुई होगी कि ये मौत के सौदागर मासूमो को मारकर चेहरा ऐसे कुचल देते होगे कि शिनाख्त न हो पाये । मजबूरन में कम्पनी को दरिन्दों के हलफनामें को मानना पड़े । भोले बाबा ने बीमा कम्पनी का तीसरा नेत्र खोल दिया तभी तो मामला पुलिस के पास पहुंचा ।
सन्तोष–कम्पनी जांच तो पहले भी अपने स्तर पर करती होगी पर ये दरिन्दे ऐसे सबूत पेश कर देते होगे कि बीमा अधिकारी झूठ को सच मान बैठते होगे ।
नन्दिनी–भोले बाबा की कृपा से कितने मासूमो की जान बच गयी । बीमा अधिकारियों को क्लू दिखा दिया होगा दरिन्दों में के अपराध का बाबा ने । कहते है ना चोर की दाढी में तिनका ।
सन्तोष–फरेब पर खड़ी इमारत तो ढहेगी जरूर वही हुआ । वही हुआ जांच से पता चला कि मरने वाला मासूमेन्द्र न होकर मौजेन्द्र था जिसकी शिनाख्त मौसूमेन्द्र के रूप में हुई थी । मौजूमेन्द्र सीधा–साधा मजदूर था जिसे दरिन्द्रों ने कुचल कर मासूमेन्द्र के रूप पहचान की थी यानि जिस नाम से फर्जी बीमा हुआ था ।
नन्दिनी–दरिन्दों के जाल में बेचारा गरीब फंस कैसे गया ।

सन्तोष–खबर के मुताविक मौत के सौदागरों ने गरीब मौजेन्द्र को अपना बनाया । बेचारा झांसे में आ गया । कहते है ना गरीब हर आदमी पर विश्वास कर लेता है । यही विश्वास उसकी दुर्दशा का कारण होता है । बेचारा गरीब दरिन्दों पर विश्वास कर बैठा और यही विश्वास मौत का कारण बन गया । दरिन्दें मौजेन्द्र को मुर्गा दारू खिलाये पीलाये । जब वह नसे मे हो गया तब मौत के सौदागरो ने उसकी हत्या कर दी इसके बाद कार से ऐसा कुचला की उसकी असली पहचान ही खत्म हो गयी ।आखिरकार कार का ड्राइवर पुलिस के हत्थे चढ गया और पुलिस ने सब कुछ उगलवा लिया ।

नन्दिनी– ड्राइवर के बयान के बाद तो कातिल दरिन्दें भी पुलिस की गिरफत में आ गयो हो । दरिन्दों को भी वैसे ही कुचल कर मारे जाने की सजा मिलनी चाहिये । तभी दरिन्दों में डर पैदा होगी और कमजोर गरीब मासूम आदमी भी षणयन्त्र के शिकार से भी बच सकेगा ।

सन्तोष–देश का कानून तनिक लचीला है । इसी का फायदा बदमाश किस्म के लोग और पहुंच वाले उठाते है ,जिसके परिणामस्वरूप अपराध की प्रवृति बढती है । दरिन्दें सलाखों के पीछे आ गये है पर देखो इनको फांसी की सजा कब मिलती है ?

नन्दिनी– है तो इसी के हकदार ये मौत के सौदागर । अगर ये मौत के सौदागर रूपये के लिये मासूम गरीबों को कुचल–कुचल कर मारते रहे तो गरीब आदमी का बसर कैसे होगा ?

सन्तोष–एस.पी.साहब का बयान भी छपा है ।

नन्दिनी–क्या कह रहे है एस.पी.साहब ?

सन्तोष– बयान के अनुसार तो इन मौत के सौदागरो का प्लान काफी खतरनाक और सही साबित करने में कोई कोर कसर नही छोड़ा था । पुलिस कार्रवाई का चमत्कार ही कहो कि ये दरिन्दें सलाखों के पीछे आ गये वरना इनके हत्या के तरीके से मामला उजागर ही नही हो पाता । मौत के सौदागर मासूमों का कत्ल कर फर्जी नाम से किये गये बीमा के रूपये के पहाड़ पर बैठे मौज मनाते और मौंका मिलते ही किसी मासूम की बलि चढाकर बीमा कम्पनी से रूपया ऐंठते रहते ।

नन्दिनी–क्या जमाना आ गया है आदमी आदमी को मुर्गी बकरे की तरह काटने लगा है ।

सन्तोष–देवीजी इस खूनी खेल में औरतें भी शामिल है ।

नन्दिनी–क्या ?

सन्तोष–हां । कुकर्मेश, खूनवीर,कत्लवीर और जोरवीर के साथ ममता,समता और जोरवीर की बीबी खुसुम भी शामिल है खूनी खेल की काली कमाई में । दिखाने को तो ये जोरवीर की घरवाली घरों में वर्तन,झाड़ू का काम करती थी पर असली चेहरा

तो खूनी है । ये पापिने ना जाने कितने मासूमों को खून पी चुकी होगी । ऐ सब बराबर के भागीदार है खूनी खेल में ।
नन्दिनी–हे भगवान इन मौत कं सौदागरों का कब संहार होगा ।
सन्तोष–चढ गये है पुलिस के हत्थे हत्यारे तो फांसी के फन्दे तक पहुंच ही जायेगे ।
नन्दिनी–फर्जी क्लेम लेने के लिये हत्यारे फर्जी आश्रित भी खड़ा कर देते होगे ।
सन्तोष–हत्यारे मासूम की हत्या कर लाश का चेहरा विकृत कर के उसकी जेब में अपना पता डाल देते थे । पुलिस इसी पते के आधार पर इन दरिन्दों से सम्पर्क करती थी । ये बीबी,बच्चे मां बाप सब फर्जी बन जाते थे । पोस्टमार्टम के बाद पुलिस लाश इनहे सौप देती थी । ये आनन–फानन में जला–जुलाकर बीमा कम्पनी में क्लेम ठोंक देते थे । ये दरिन्दें मासूमों की हत्या का पांच–पांच लाख तक के क्लेम ले चुके थे ।
नन्दिनी–देखों रूपये की लालच में ये मौत के सौदागर मासूमों गरीब,बेरोजगारो को काम दिलाने के बहाने अपने जाल में फांसकर कुचल–कुचल कर मार देते थे । कितने हैवान कुकर्मेश, खूनवीर,कत्लवीर ममता,समता, खुसुम उसके नकली आश्रित बनकर क्लेम लेने वाले लोग होगे ।ाला हो उस जांच अधिकारी का जिसकी तीसरा नेत्र खुल गया और हत्यारे दरिन्दे गिरोह का पर्दाफाश हो गया ।
सन्तोष–दरिन्दे सलाखों के पीछे तो आ गये है । काश इनहे जल्दी फांसी लग जाती ।
नन्दिनी–देखो ये काम कचहरी का है । अब इस केस के बारे में कोई बात न करो मुझे चक्कर जैसा लग रहा है । तुम जाओ नहा,धोकर पुजा पाठ करो।मुझे खौफ सतसने लगा है ।
सन्तोष–डरो नही। देश की पुलिस तो है ना दरिन्दों के दमन के लिये ।
नन्दिनी–काश ऐसा हो जाता ।
सन्तोष और नन्दिनी अपने–अपने काम में लग गये । सप्ताह भर बाद फिर अखबार में छपी खबर को पढकर सन्तोष चौक कर चिल्ला पड़ा ।
नन्दिनी–आज क्या हुआ ?
सन्तोष–मौत के सौदागरों को फांसी हो गयी । फर्जी तरीके से कमाई रकम और प्रापर्टी सब राजसात् हो गयी ।
नन्दिनी–अच्छा हुआ हमारी न्याय व्यवस्था और पुलिस पर अंगुली नही उठेगी ।
सन्तोष–न्याय प्रक्रिया में ढिलाई अपराध बढाती है ।
नन्दिनी–पुराने ढर्रे से हटकर अच्छा फैसला हुआ है । बेचारो गरीब,मासूम और बेरोजगार मृतकों की आत्माओं को जरूर शान्ति मिली होगी । मौत के सौदागर सिर उठाने में भी अब थर्र–थर्र कांपेगे यदि ऐसे न्याय होता रहा तो ।

सन्तोष– सत्यमेव जयते का नारा भी बलन्द हुआ है ।
23–लक्ष्मण रेखा
बहन काकी फर्ज की लक्ष्मण रेखा लांघ कर हमें दुख के सागर में डूब मरने को छोड़ गयी मां–पिताजी के सपनों की बारात को हम छोटे–छोटे भाई बहन किनारे तक ले जा पायेगे ।
नन्दू–काकी हमे मुसीबत के भंवर में छोड़ भागी है । चिन्ता ना कर कोई ना तिनके का सहारा तो मिल जायेगा । मां अस्पताल में मौत से जूझ रही है हम हम अपने पेट की आग से जूझते हुए गाभिन भैंस का पेट भरने के लिये संघर्ष कर रहे है । घर में ना हमें खाने के लिये अन्न है ना भैंस के खाने के लिये भूसा उपर से दरवाजे तक बाढ का पानी भरा है । ऐसे मुसीबत के वक्त में काकी हमें और अंधी दादी को बिलखता कैकेयी काकी छोड़कर शहर चली गयी
दुर्गा–भइया हिम्मत ना हार दादी कहती कहते है मुसीबत आदमी को मजबूत बनाने के लिये आती है ।
नन्दू–क्या खाक मजबूत बनेगे ना खाने को अन्न ना रहने को घर । बरसात में कही बैठने का ठिकाना नही ।
दुर्गा–क्यो नही है । इतना बड़ा घर नही है । मालूम है इसी घर की माटी ढोने में मां के सिर के बाल उड़े है । ठीक है चू रहा है । मां ठीक होकर आ जायेगी तो सब ठीक हो जायेगा । कहां फांका कर रहे है एक टाइम का मिल तो रहा है ना अगर घर में इतना भी अनाज नही होता तो क्या होता ? देख खाने की तकलीफ दो चार दिन में कम हो जायेगी ।
नन्दू–वो कैसे ?
दुर्गा–हलवाही वाले खेत में जो पाच बीसा धान रोपा है ,पकने लगा है ।इससे भैंस के चारे का इन्तजाम भी हो जायेगा ।
नन्दू–दीदी बाढ का पानी उतरने में ना जाने अभी कितने दिन लगने वाले है । पता नही धान बचेगा कि बह जायेगा बाढ में । दीदी कल से मैं गन्ना थोड़ा काट लाउंगी । इससे भैंस को चारा मिल जायेगा हमें खाने को गन्ना ।
दुर्गा–गन्ना जूठवन के बाद खाते है ।
नन्दू–दीदी रस्म के चक्कर में पड़कर भूखों नही मरेगे । देखो मै गन्ना खाकर पेट भर लूंगा तो मुझे रोटी कम लगेगी ।दो रोटी बच जायेगी तो नन्हकी बहन के काम आ जायेगी ।
दुर्गा–नन्दू चिन्ता ना कर मां के आराम होते ही बाबू आकर अनाज का इन्तजाम कर जायेगे । अरे पगले काकी मुसीबत में छोड़कर भाग गयी तो क्या बस्ती वाले अपनी मदद नही करेगे क्या ? किसी के घर से सवाई पर अनाज ले आउंगी ।

नन्दू–दीदी धीरे–धीरे बोले दादी सुनेगी तो रोयेगी । आखों से तो वैसे ही नही दिखता बेचारी का सिर उपर से दर्द करने लगेगा । चलो हम गेहूं पीस लेते है ।
दुर्गा– मैं पीस लूंगी । पहले सूख तो जाने दो ।
नन्दू–सूख गया होगा सबेरे का चूल्हे में डाली हो ना ।
दुर्गा–एक बार कह दी ना मैं पीस लूंगी । तुमको खाने से मतलब है ना ।
नन्दू–नही पीसने से भी । अकेले इतनी जांता कैसे रोज खीचती हो । मैं थोड़ी मदद कर देता हूं ।
दुर्गा–तुम्हारी मदद की जरूरत नही है । जैसे रोज पीसती हूं वैसे आज और रोज–रोज पीस लूंगी ।
नन्दू–ठीक है । मै भैंस के चारा का इन्तजाम करके आता हूं । भूसा भी खत्म होने वाला है।
दुर्गा–सब ओर पानी भरा है कहां घास मिलेगी ?
नन्दू–दीदी सड़क के किनारे से बरसाती घास और पोखरी में से करेमुवां काट लाता हूं ।
दुर्गा–नही पोखरी में मत जा हाथी के डूबने भर को पानी है ।
नन्दू–दीदी मुझे तैरने आता है । तू चिन्ता ना कर । हमारे और तुम्हारे उपर दो छोटी बहनो दादी और भैंस की जिम्मेदारी है । देखो भूख से भैंस कैसे चिल्ला रही है ?
दुर्गा–हां वो तो है पर करोगे क्या इस बाढ में ? कहां से घास काटकर लाओगे?खेतो में कमर तक पानी भरा है ।
नन्दू–बांस की पत्तियो तोड़ लाता हूं । वही काट कर भैंस को खिलाता हूं ।
दुर्गा–बरसात में बांसों पर सांप होते है ।
नन्दू–दीदी डराओ नही ।मैं बांस की पत्तियां तोड़ लाता हूं ।
दुर्गा–इतनी तेज बरसात में मत जा । थोड़ा थमने दो ।
नन्दू–पन्द्रह दिन से नही थमी तो आज थम जायेगी ।
दुर्गा–रूक मै फिर टोटका करती हूं ।
नन्दू–वही तवा और मुसर अंगना में फेकोगी । रहने दो मुसर सड़ जायेगा चार दिन के बाद धान कैसे कूटोगी ?
दुर्गा– जा मैं हारी ।
नन्दू–जा रहा हूं भैंस के पेट की पूजा का इन्तजाम करने के लिये ।
दुर्गा–भईया ध्यान से बांस पर चढना । बरसात में बांस फिसलेगा । पानी से बचने के लिये कोटियां से सांप भी बांस पर चढते हैं । चौंकन्ना रहना ।
नन्दू–दीदी डराओ नही । मैं रख लूंगा ध्यान । तुम आराम करो जब तक मैं आता हूं । चारा काटकर गेहूं पीसवा दूंगा ।

दुर्गा– जा गेहूं पीसने की चिन्ता न कर । मै पीस लूंगी ।
नन्दू–नही अकेले मत पीसना । हम दोनो पीस लेगे मिलकर ।
दुर्गा–ठीक है तू आ तो सही ।
नन्दू भैंस के चारे के लिये बांस की पत्ती तोड़ने चला गया । बहन के बताये अनुसार वह सम्भल–सम्भल कर ढेर सारी पत्तियां तोड़कर उतरने लगा इसी दौरान उसका पैर फिसल गया और एक बांस से दूसरे बांस पर जा गिरा । नन्दू की जांघ में छ' इंच उपर से कटी कटी कैन की ठूठ घूस गयी । बेचारा आधे घण्टे तक बेहोश बांस पर लहूलुहान लटका रहा । होश आने पर पोखरी में खून से सन्ने कपड़े को धोया खुद नहाया । इसके बाद बांस की पत्तियों का बोझ लेकर घर पहुंचा । बोझ चारा काटने वाली मशीन के पास पटक कर दीदी दी आवाज देने लगा । दुर्गा दौड़कर आयी । दुर्गा के बाहर आते ही नन्दू बोला दीदी ये पत्तियो मशीन में लगा दो मैं मशीन खींच लेता हूं । नन्दू मशीन खींचने लगा दुर्गा लगाने लगी । थोड़ी देर में चारा कट गया । नन्दू पत्तियों का हरा चारा और तनिक भूसा मिलाकर छिंटा भरा और भैंस की हौद की ओर लपका । नन्दू की जांघ से तर–तर चू रहे खून को देखकर दुर्गा जोर से चिल्लायी अरे बाप रे रूक नन्दू ये क्यो हो गया ?
नन्दू–कहां क्या हो गया दीदी?
दुर्गा–तेरे पैर खून से लथपथ है तुमको पता नही ?
नन्दू–बांस की कैन धंस गयी थी । ठीक हो जायेगा ।
दुर्गा–रख छिंटा मैं चारा डालती हूं तू खटिया पर लेट जा ।दुर्गा नन्दू से छिंटा छिनकर भैंस को चारा डालकर भैंस को हौदी लगायी । इसके बाद नीम से पत्तियां तोड़ा उबाली जख्म साफ करके फिटकर पीसकर घाव में भरी । ये सब करने के बाद नन्दू को डांटकर बोली तू सुबह तक खटिया से नही उठेगा ।
नन्दू–गेहू अभी पीसना है ।
दुर्गा–पीस गया है । तू चिन्ता ना कर तुमको खटिया पर रोटी दूंगी । इतना गहर जख्म है तुमने मुझे बताया तक नही । कितना खून बहा होगा । छिपने के लिये तू पोखरी में नहा–धोकर आया है ना । कितनी देर तक बांस पर लटका था । पत्ती–सत्ती छोड़कर नही आ सकता था । कुछ हो जाता तो हम कैसे जीते । बापू मां को लेकर कोसो दूर शहर के अस्पताल में पड़े है ।तुम्हारी ये हालत ।
नन्दू–दीदी ठीक हो जायेगा तनिक सी तो चोट है ।
दुर्गा–पूरी अंगूरी चली जा रही है घाव में । भईया फिटकरी तो मैं ही भरी हूं ना मुझे पता है कितनी गहरी घाव है । तू इतनी गहरी घाव के साथ इतना काम कैसे किया है । मुझे तो खून देखकर चक्कर आने लगा था । मां बापू को याद कर–कर तो सम्भली हूं ।खटिया पर पड़े रहो उठना नही मेरी कसम है तुमको । मैं सब कर लूंगी

। बहुत खून तुम्हारे शरीर से बह गया है ।काश काकी होती भले ही कुछ ना करती पर सहारा तो रहती ।
नन्दू–वो क्या सहारा बनेगी । मुसीबत के दलदल में ढकेलकर भाग गयी । थी तो कौन सहारा बनती थी जो अब कर रहे तब भी यही करते थे । एक आदमी की और टहल बजानी पड़ती थी । हम भाई–बहन एक दूसरे के सहारे है ,दादी का आर्शीवाद है क्या यह कम है ?
दुर्गा–तू लेटा रहा मैं रोटी बनाती हूं ।
नन्दू–दीदी मेरी वजह से तुमको कितनी तकलीफें उठानी पड़ रही है । बाबूजी मां को लेकर महीनों अस्पताल पड़े है । मां की बीमारी ने तुम्हारे ब्याह की हंसुली की बलि भी ले ली पर अभी मां ठीक भी नही हुई । दीदी मुझे तो डर लग रहा है मां को कुछ हो गया तो हमारा क्या होगा ?
दुर्गा–अशुभ बाते जबान पर मत ला । भगवान अपने भगवान होने की लक्ष्मण रेखा नही लांघेगे । मां ठीक होकर जल्दी ही आ जायेगी । भगवान कोई अपने काका–काकी जैसे थोड़े ही है कि अपने मतलब के लिये लक्ष्मण रेखा तोड़ देगे । भगवान भगवान होते है उन्हें सब की चिन्ता बराबर होती है । कोई गलता हो गयी होगी,उसकी सजा पूरी होते ही मां देखना बिल्कुल ठीक होकर आ जायेगी । अभी तो खुद दर्दमें कराह रहा है । मां कि चिन्ता घर की चिन्ता सब भगवान के उपर डालकर आराम से लेटा रहा ।तुम्हार घाव में जो फिटकरी भरकर बांधी हूं गिरने मत देना। तुमको खटिया से उठने की जरूरत नही है ।
नन्दू–दीदी तू तो मां की तरह समझा रही हो ।
दुर्गा–तुम्हारे भले के लिये कह रही हूं । खटिया पर पड़ा रह । मैं रोटी बनाकर तुम्हारे लिये खाना लेकर आती हूं कह कर दुर्गा खाना बनाने में जुट गयी । खाना बनाकर सबसे पहले दादी को दी फिर नन्दू को देकर भैंस और बकरी को मड़ई में बांधकर हाथ पांव धोकर तीनो नन्ही बहनों गंगा,जमुना और सरस्वती को खाना परोसकर खुद खाना खाने बैठ गयी । खाने के बाद बर्तन धोकर घर की सफाई की फिर वही भी थकी–मांदी सो गयी । ऐसे ही इन पांचो भाई–बहनों का दिन बूढी दादी के साथ कभी खाकर तो कभी फांके में बित रहा था ।
दो महिनों के बाद अचानक गांव की पगडण्डी पर शाम के वक्त ईक्का खड़ा हुआ । ईक्का के खड़ा होने के आहट पाकर नन्दू दौड़ पड़ा । ईक्का के पास पहुंचते ही वह उछल पड़ा और जोर से चिल्लाया दीदी बाबूजी मां को लेकर आ गये । हरिचरन और चन्द्रकला ने नन्दू को गले लगा लिया इतने में दुर्गा और तीनो नन्हकी भी पगडण्डी की ओर दौड़ बूढी दादी दम्यन्ती आंखे फाड़–फाडकर पगडण्डी की ओर देखने लगी । हरिचरन और चन्द्रकला पांचों बच्चों के साथ घर पहुंचे दोनो

पति–पत्नी बूढी मां दम्यन्ती के पांव छूये । बूढी दम्यन्ती ने आर्शीवाद की गंगा बहा दी । काफी देर के इन्तजार के बाद चन्द्रकला पूछी नन्दू कैकेयी कहां है ।
नन्दू– मां काकी तो तुम्हारे अस्पताल जाने के पांच दिन बाद शहर चली गयी ।
हरिचरन–क्या ?
दुर्गा–हां बाबू ?
चन्द्रकला–मुसीबत के दिनों में अपनों ने साथ छोड़ दिया ।
हरिचरन–भगवान ने हमारे बच्चों की रक्षा की है । देखो घर–द्वार जैसा तुम छोड़कर गयी थी वैसा ही दमक रहा है । देखो तुम चिन्ता छोड़ो दवाई खाओ आराम करो । तुम सकुशल आ गयी हो कल से मै सब काम सम्भाल लूंगा। कालीचरन को अपनी घरवाली को शहर बुलाना ही था तो मेरे घर आने तक इन्तजार कर लेता । अरे मैं मना करता क्या ? मुसीबत में भाई ने रिश्ता खत्म कर दिया ।
चन्द्रकला–देवरानी कैकेयी तो एक मां थी मेरे बच्चों को अनाथ सरीखे छोड़करचली गयी मुसीबत के समय में जबकि ऐसे समय में तो पराये मदद करते है।वाह रे कैकेयी तू भी फर्ज की लक्ष्मण रेखा लांघ गयी ।
हरिचन–लांघ गयी तो लांघ गयी । हमारे बच्चों के सिर पर उनकी दादी मां का हाथ था और अब उनकी मां भी आ गयी । देखना सारी बलायें छूमन्तर हो जायेगी ।
चन्द्रकला–भगवान ऐसा ही करे तब ना ?
हरिचरन–विश्वास रखों मौत के मुंह से निकल कर आयी हो।भगवान का चमत्कार नही तो और क्या है ?
चन्द्रकला–विश्वास पर तो जी रहे है कल हमारा भी होगा ।
हरिचरन–जरूर होगा ।
धीरे–धीरे समय बितने लगा ।दुर्गा का गौना गंगा,जमुना और नन्दू का ब्याह भी हो गया ।नन्दू साल दर साल एक–एक कक्षा आगे बढते–बढते बी.ए. तक की परीक्षा पास कर गया । बी.ए.पास कर वह नौकरी की तलाश में शहर सालों भटकने के बाद नौकरी भी मिल गयी ।बेटे के नौकरी मिलते ही हरिचरन के घर भी खुशहाली बरसने लगी । खुशहाली की पूरी बयार चलती इसके पहले ही चन्द्रकला ने हमेशा के लिये आंखे मूंद ली । हरिचरन भी बूढे हो गये अब दरवाजे पर बैठे रहते थे । इसी बीच रात के अंधेरे में कालीचरन आ धमका और पालगी भईया कहकर हरिचरन के सामने खटिया पर बैठ गया । हरिचरन चुपचाप पहचानने की कोशिश कर रहे थे । इतने में कालीचरन बोला पहचाने नही क्या ?
हरिचरन–नहीं कौन हो भाई ?
मैं कालीचरन .....
हरिचरन–कौन कालीचरन ?

तुम्हारी–भाई ।
हरिचरन–चालीस साल के बाद अचानक भाई की याद कैसे ?
कालीचरन–हक हिस्सा छोड़ तो नही सकता ना ।
हरिचरन–कैसा हक हिस्सा ।
कालीचरन–महलनुमा घर में हमारा भी तो हिस्सा बनता है कि नही ।
हरिचरन–बाप दादा की कमाई तो यह घर है नही । नन्दू की कमाई का घर है इसमें कैसा हिस्सा ? हिस्सा लायक तुमने कुछ किया भी तो नही है । मेरे बच्चों को मुसीबत की दरिया में ढकेल कर अपनी घरवाली को बुला लिये । चालीस साल के बाद अब आये हो वह भी छाती में खंजर भोकने ।
कालीचरन–हक हिस्सा लेना खंजर भोगना है क्या ?
हरिचरन–किसी के खून पसीने की कमाई पर कब्जा और क्या है ।
कालीचरन–फैसला कल की पंचायत में हो जायेगा ।
हरिचरन–कैसी पंचायत ?
कालीचरन–हिस्सा लेने के लिये पंचायत बुलाउगा की नही । गांव के प्रधान और कुछ मानिन्दों की पंचायत कल सबेरे बुलाया हूं ।घर पर रहना कही जाना नही ।
हरिचरन–अरे हमारे घर पंच परमेश्वर आयेगे तो भला मै घर छोड़कर कहीं जाउंगा क्या ?
कालीचरन–ठीक है सुबह आता हूं पंचों को लेकर तब तक स्वर्ग का सुख भोग लो ।
हरिचरन–ये सुख मेरे बेटवा का दिया हुआ है । भगवान के अलावा कोई नही छिन सकता । तुम जाओ कल पंचो के सामने अपनी बात रखना ।
कालीचरन–तुम हिस्सा नही दे रहे हो तो पंचायत का दरवाजा तो खटखटाना ही पड़ेगा ।
हरिचरन–पंच परमेश्वर का फैसला मुझे मान्य होगा । अब तो यहां से जा ।
कालीचरन–ठीक है जा रहा हूं । कल पंचायत में मिलूंगा कहकर कालीचरन चला गया और सबेरे गांव के कुछ मानिन्दों और प्रधान को लेकर हरिचरन के दरवाजे पर आ धमका । हरिचरन पहले से ही पंचों के लिये हुक्का तम्बाकू का इन्तजाम कर बाट जोह रहा था । पंचायत बैठ गयी ।
प्रधान–हरिचरन काका ये सफेद बाल वाले तुम्हारे सगे भाई है ।
हरिचरन– हां ।
प्रधान–कुम्भ के मेले में खो गये थे क्या ?
हरिचरन–नही चालीस साल के बाद शहर से गांव आया है वह भी इस रूप में ।जब ये शहर गया था तो प्रधानजी तुम स्कूल जाना शुरू ही किये होगे ।

प्रधान–खैर पुरानी बाते छोडें ये तो बताओ कि काका तुमको मालूम है ये पंचायत क्यों बुलायी है ये चालीस साल के बाद मिलने वाले कालीचरन काका ने ।
हरिचरन–हां । नन्दू की कमाई में हिस्सा लेने के लिये ।
प्रधान–काका आपका क्या विचार है ।
हरिचरन–भतीजे की कमाई में काका का हिस्सा तो बनता नही । असली फैसला तो आप पंचों का करना है । पंचों का कोई भी फैसला हमे मान्य होगा ।
प्रधान–नन्दू को भी ।
हरिचरन–बाप के आदेश की लक्ष्मण रेखा नही पार कर सकता ऐसा मेरा विश्वास है ।
प्रधान–ठीक है कालीचरन काका से भी कुछ बात कर लेते है । हां कालीचरन काका चालीस साल के बाद गांव आये है सही है क्या ?
कालीचरन– हां ।
प्रधान–बाप दादा की कोई छोड़ी चल अचल सम्पति है क्या ?
कालीचरन–पता नही । चालीस साल से तो मैं परदेस कर रहा हूं ।
प्रधान– क्यों हरिचरन काका कोई दौलत है क्या पुरखों की ?
हरिचरन–जमीन तो जमींदारो ने अपनी आंख खुलने के पहले ही जमींदारों की भेट चढ । बाप आजादी के युध्द के दिनों में गायब हो । पंचों आप सभी तो जानते ही है कैसे–कैसे मेरे मुसीबत के दिन कटे है ? नन्दू की कमाई से तनिक खुशी मिलने लगी है तो उस पर भी गिध्द नजर लग रही है । अरे कभी गट्टा भी हमारे बच्चों को नही दिया होगा ये कालीचरन आज वही मेरे बच्चे की कमाई में हिस्सा लेने के लिये पंचासत बुला दिया ।
प्रधान–मतलब बाप दादा की कोई दौलत नही है। क्यों कालीचरन काका हरिचरन काका ठीक कह रहे है ?
कालीचरन–ठीक कह रहे होगे पर मै कहां जाउं ।
प्रधान– अरे काका शहर के बंगले में और कहां ?इतने बड़े आसामी होकर आदमियत की लक्ष्मण रेखा क्यों पार कर रहे हो । हरिचरन काका जीवन भर दुख दुख उठाये है पूरा गांव जानता हूं उनकी खुशी पर क्यों ग्रहण बन रहे हो । अच्छा कालीचरण काका ये बताओ कि तुम अपने शहर के बंगले में हरिचरन काका को हिस्सा दे रहे हो क्या ?
कालीचरन–नही
प्रधान–भाई की कमाई में भाई का हिस्सा नही बनता तो क्या भतीजे की कमाई में काका का हिस्सा बनेगा ।तुम्हारा हिस्सा नही बनता कालीचरन काका ।
कालीचरन–जन्मभूमि छोड़ दूं?

प्रधान–जन्म भूमि से इतना मोह है तो खरीद लो दस–पांच बीघा जमीन और बना शहर जैस बंगला । कालीचरन काका तुम तो हरिचरन काका के कर्जदार हो बेचारे हरिचरन काका ने अपनी मेहनत मजदूरी से तुमको पाला–पोसा,ब्याह गौना किया और तुम सहारे लायक हुए तो नजरे फेर लिये । भला ही मै अबोध था पर पूरा गांव तुम्हारे बारे में जानता है तुमने कैसा भैय्पन निभाया है हरिचरन काका के साथ । अरे ऐसा तो दुश्मन भी नही करेगा जैसा तुम कर रहे हो ।कालीचरन काका पंच अन्याय नही करेगें ।

कालीचरन–प्रधान ठीक है मेरा हिस्सा नही बनता है तो देखना कैसे बनाता हूं ।

प्रधान–काका लक्ष्मण रेखा मत तोड़ना । पंचो के न्याय के आगे कालीचरन की गिध्द नजरे फिर कभी नही टिकी ।

24–अंधे की लाठी

पालगी भईया कहते हुए धूलीचन्द पांव छूआ और सामने खड़ा होकर भीखनरायन की दीन–दशा को चकित होकर निहारने लगा ।

खुश रह धूलीचन्द । कैसे हो ? घर में सब ठीक है । खटिया पर बैठ दूर क्यों खड़ा है ।

तू भी बूढा हो गया । तूझे मैंने गोद में खेलाया है ।

हां– भईया वक्त कहां किसको बख्शा है रियासतें मिट गयी । राजा–महाराजाओं के नाम मिट गये । मैं तो अदना सा इंसान हूं । परमात्मा की कृपा है । तुम बताओ भीखनरायन भईया कैसे आना हुआ मुद्तो बाद। रिटायरमेण्ट कैसा कट रहा है दमादो के साथ । भईया तुम तो स्वर्ग का सुख भोग रहे होगे ?

धूलीचन्द की बाते सुनकर भीखनरायन की आंखे भर आयी । वह गमछा से आंखों की बाढ रोकते हुए बोला भईया नरक भोग रहा हूं ।

धूलीचन्द–स्वर्ग के सुख की चाह में भाई –भतीजो का कागजी कत्ल करवाकर । हक–हिस्सा तक हड़पकर । सगे–बेटी –दमाद और सौतेली बेटी दमाद को वारिस बना दिये । आज खुद के रचे चक्रव्यूह में फंस गये । आंसू से रोटी गीली कर रहे हो । भईया उधार की ममता में बर्बादी के बीज क्यो बो दिये । आज दर–दर की ठोकरें खा रहे हो । मुझे मालूम हो गया है जिस भाई अधीरनरायन की चौखट को उखाड़ फेंकने की सौगन्ध खा कर गये थे उस चौखट की छांव में तुम खुशी से तो नही आये होगे ।

भीखनरायन–हां धूलीचन्द अब यही दरवाजा खुला है बाकी तो बन्द हो चुके है । सौतेले दमाद प्रभु ने तो मेरे रिटायरमेण्ट की रकम अंगूठा लगवाकर हड़प लिया ।

थाने में गुहार लगाया पर कोई सुनवाई अभी तक नही हुई । सगे–बेटी दमाद के लिये भी छूछा हो गया हूं । कहते है न छूछा को कौन पूछा ।
धूलीचन्द–सबसे ज्यादा प्रिय तो तुम्हारा प्रभुवा दमाद था । वही धोखेबाज निकला । सदर तहसील में सी.आर.ओ. होकर भी ऐसी नीचता कर गया । दगाबाज प्रभु तो अंधे की लाठी ही तोड़ दिया। भईया दुनिया में सब तुम्हारे बेटी दमाद जैसे ही लोग नही होते । लोग छूछे को भी पूछते है तभी तो यहां बैठे हो । सब माया के पीछे नही भागते । सन्तोष बहुत बड़ा सुख है । उसी सन्तोष का फल अधीरनरायन भईया को मिल रहा है । तुम तो जानते हो तुम्हारे फेंक देने के बाद कितनी मुसीबते अधीरनरायन भईया के उपर आयी । बच्चो को पेट भर रोटी नही मिलती थी । गरीबी और तुम्हारे दगाबाजी से आहत बुढिया दम तोड़ दी । गरीबी की नईया में डूबते उतिरियाते अधीरनरायन भईया के दोनों बेटो ने कामयाबी तो पा लिया है । देखो दरिद्र अधीरनरायन भईया आज सचमुच स्वर्ग का सुख भोग रहे है । तुम हक –हिस्सा हड़प कर बने धनवान नरक भोग रहे हो ।
भीखनरायन–बुढिया की जिद के आगे मेरी एक ना चली धूलीचन्द। वह तो स्वर्ग सिधार गयी । मैं नरक का जीवन जी रहा हूं । सन्तोष के फल की महिमा समझ में आ गयी है। जमीन–जायदाद सबसे अधीरनरायन को बेदखल कर दिया । देखो वही भाई चैन की रोटी खा रहा है और मैं दर–दर की ठोकरें ।
धूलीचन्द–भईया सच कहा गया है बोया बीज बबूल का तो आम कहां से खाय ।
भीखनरायन–मुझे पछतावा है धूलीचन्द । काश भाई –भतीजों के सपनो की बारात में आग नही लगाता तो मेरी ये दुर्गति नही होती ।
धूलीचन्द–भईया अपना हिस्सा लेकर बेटी दमाद को देते तो किसी को तकलीफ नही होती । अब तो यह कानूनन अधिकार हो गया है पर भाई का हक हड़पकर अच्छा नही किया ।
भीखनरायन–तभी तो नरक का दुख भोग रहा हूं । काश बुढिया की जिद के आगे नही झुकता तो ये दुर्दिन नही देखना पड़ता ।
धूलचन्द–भईया तुमने गरीब जानकर अधीरनरायन भईया का हक खुली आंखो से लूटा था । दूसरी ओर देखो तुम्हारे सौतेले दमाद ने जिसपर अधिका विश्वास था कि तुम्हे स्वर्ग का सुख देगा । वही तुम्हारा अंगूठा काट कर चल–अचल सम्पति का मालिक बन बैठा । तुम दीन–दरिद्र जैसे भटक रहे हो । भईया पराया खून सगे का मुकाबला नही कर सकता ।
भीखनरायन–समझ में आ गया है धूलीचन्द।
धूलीचन्द–क्या करेगा समझ में आकर । जब सहारा बनना था तब तो गरीब सगे भाई को मुसीबतों की खाई में ढकेल दिये । अब तो तुम खुद लाचार हो । सहारे की

लाठी तुम्हारे अपने दमाद प्रभु,सी.आर.ओ तहसील सदर ने छिन कर तुम्हे लखपति से सड़कपति बना दिया है।
भीखनरायन–अंधे की लाठी तो छिन गयी है। जीवन के इस सांध्य काल में खून का रिश्ता ही मेरे लाठी बनेगे । मुझे यकीन है ।
धूलीचन्द–यकीन नही टूटा होता तो तुम्हारी लाठी में बहुत जोर होता भईया । खैर देर तो बहुत हो गयी है पर मुझे भी यकीन है तुम्हारे दोनो भतीजे तुम्हारे दुख को समझेगे । भले ही तुम्हारे धोखेबाज दमाद सी.आर.ओ.सदर,प्रभु ने करोड़ो की चल–अचल सम्पति क्यों न छिन ली हो ?
भीखनरायन की आंखो से तर–तर आंसू टपक रहे थे । धूलीचन्द समझा जा रहा था । इसी बीच श्रीबाबू आ गया । बूढे ताउश्री की आंखो में आंसू देखकर उनके पैर के नीचे से जैसे जमीन खिसक गयी। वह ताउश्री के आंसू पोछते हुए बोला दादा कौन सी मुसीबत आ गयी ।
भीखनरायन–बेटा मुझ अंधे की लाठी टूट गयी ।
श्रीबाबू–दादा तुम्हारी लाठी कैसे टूट सकती है ?
भीखनरायन–बेटा जिसके लिये तुम लोगो के साथ बेईमानी किया वही जीवन भर की कमाई छिन कर धकिया दिये। अब तो मेरी हालत कुत्ते–बिल्ली जैसी हो गयी है । रो–रोकर भीखनरायन आप बीती बताने लगे ।
श्रीबाबू–दादा हम तुम्हारी लाठी है । ऐसा नही है कि जो बेईमानी तुमने बेटी दमाद के मोह में पड़कर किया है भूल गये है । याद है दादा हम दोनों भाई पानी पीकर स्कूल जाते थे । मेरे मां–बाप का श्रम हमारी ताकत रहा है । उन्ही के श्रम का नतीजा है कि हम दोनो भाई दो जुन की रोटी इज्जत से कमा खा रहे है । हमारे बाप जो झोपड़ी में दिन काटा करते थे । देखो पक्की बैठक में बैठे है । तुम हक छिन कर ससुराल जा बसे । दादा तुम आज अपनी हाल और हमारे बाप की तुलना तो करो । देखो जो लोग गरीब जानकर दुत्कार दिया करते थे । वही सलाम ठोंकते है । हम तो कभी भी तुम्हारे धन के भूखे नही थे । सब समय का दोष है तुम्हारा नही ।
भीखनरायन–बेटा मैं शर्मिन्दा हूं तो उसकी वजह है तुम्हारी बड़ी ताई,हमारी घरवाली जो बेटी दमाद के मोह में मुझसे अनर्थ करवायी और खुद मुझसे पहले उपर पहुंच गयी मै रह गया नरक भोगने को ।
श्रीबाबू–दादा खुद को ना कोसो । बड़े–बड़े राजाओं ने भी सन्तान के मोह में ऐसा किया है ।
श्रीबाबू दादा भीखनरायन से चर्चारत् था । इसी बीच श्रीधर भी सप्ताह भर बाद आ गया । 25 साल की लम्बी अवधि के बाद दादा भीखनरायन को अपने दरवाजे बैठा

देखकर चकित रह गया । वह गाड़ी खड़ी कर भागते हुए आया और भीखनरायन का चरण स्पर्श करते हुए बोला दादा सब ठीक तो है ना । इतना सुनते ही भीखनरायन आंसू पोछते हुये बोले बेटा कुछ भी ठीक नही है । ठीक होता तो यहां आता ?

श्रीधर–दादा क्या कह रहे हो ?

धूलीचन्द–अंधे की लाठी टूट गयी ।

श्रीधर–मतलब ?

धूलीचन्द–धोखा ।

श्रीधर–कौन है धोखेबाज ।

धूलीचन्द– पहले तो तुम्हारे दादाजी ने तुम्हारे बाप के साथ धोखा किया अब भीखनरायन भईया के साथ दमाद प्रभु ने ।

श्रीधर–क्या हुआ दादा ?

भीखनरायन–कमाई और बेईमान की सब दौलत लूट गयी ।

श्रीबाबू –दादा ये तो होना ही था किसी की लूट जाती है किसी की छूट जाती है पर तुम्हारे लुटेरे को सजा दिलवा कर रहूंगा ।

श्रीधर–भाईश्रीबाबू सजा देना कचहरी का काम है । हां न्याय के लिये गुहार तो करना होगा ।

भीखनरायन–बेटा बिन्द्राबाजार थाने में अर्जी दे चुका हूं प्रभु के हेराफरी की। थानेदार ने कहा था जालसाज प्रभु कानून से नही बच पायेगा । रकम भी वापस मिल जायेगी। बाबा चिन्ता ना करो पर कई महीने हो गये कोई कार्रवाई नही हुई । प्रभु धमकी देता है कहता है जो करना चाहो कर लो । मेरा कुछ नही बिगाड़ पाओगे। मुझे डर है कि कभी मेरा गला दबा कर भईया की तरह मुझे भी पेड़ पर लटकाकर आत्महत्या का इल्जाम मेरे ही माथे न मढ दे।

श्रीबाबू–दादा फिर से पुलिस में शिकायत दर्ज करवायेगे ।

श्रीधर–दादा तुम्हारी सम्पति से हमें मोह नही है । मोह है तो बस तुमसे क्योंकि तुम हमारे बाप के सगे भाई हो और हमारे बड़े बाप हो। सगे खून के रिश्तेदार हो । तुम्हारी परवरिश करना हमारा फर्ज है । हम खून के रिश्तेदार है कानूनी रिश्तेदार नही ।

दादा विश्वास करो हम लोग तुम्हारी सेवा करने में तनिक भी कोतहाई नही बरतेगे ।

भीखनरायन–विश्वास है बेटा तुम लोगो पर । गलती तुम लोगों की नही गलती तो हमारी है । धोखा तो मैने किया है । होशो–हवास मे घरवाली की जिद और बेटी –दमाद के मोह की वजह से । कागजी कत्ल करवाकर चल–अचल सम्पति पर कब्जा किया था । अपनी बेईमानी पर आज मैं शमिन्दा हूं । मैं जिस बेटी दमाद के

बहकावे में आकर भाई–भतीजों का हक हड़प लिया वही भतीजे मुझे आज भी बाप का सम्मान दे रहे है ।
धूलीचन्द–भईया ये तुम्हारे दोनो भतीजे श्रीधर और श्रीबाबू लोभी नही है तुम्हारे दमाद जैसे । दूसरों की मदद करने को तैयार रहते है । इनकी मां–बाप से इन्हे ये गुण मिले हैं विरासत में । तुम्हारी धन–दौलत से इन्हे तनिक भी नही मोह होगा । तुम तो इन पर विश्वास कर यही रह जाओ तुम्हारी माटी ये पार लगा देगे ।
श्रीधर–हां दादा । तुम्हारे पास अभी जो कुछ बचा भी है उसको भी अपनी बेटी पुष्पा के नाम लिखकर आ जाओ अपने भातीजों के यहां । दादा ये तुम्हारे पोती–पोते बहूये खूब सेवा करेगी । हमें तुम्हारी सेवा का मौका जायेगा क्या यह कम फायदा है । यह तो बड़े–बड़े धनासेठो को नही मिलता । ।
धूलीचन्द–श्रीधर तुम भी फायदे की बात करने लगे ?
श्रीधर–हां काका अपने नही अपनी बहन पुष्पा के लिये ।
धूलीचन्द–पुष्पा को तुम फायदा पहुंचाओगे । तुम्हारी मुसीबतों के कारण तो वही बेटी दमाद है । तुम उनके फायदे की बात कर रहे हो ।
श्रीधर –काका सौतेली बहनोई को तो मै देखना नही चाहता जो मेरे बड़े बाप के विश्वास का खून कर दिया । वह तो दुश्मन बन गया है मानवता का । हम पुष्पा की बात कर रहे है । दादा को हमारे साथ रहने से पुष्पा को मायका मिल जायेगा । भाई–भाभी,भतीजे–भतीजी मिल जायेगे जिनके प्यार के लिये वह तरस रही होगी ।
भीखनरायन–हां ठीक कह रहे हो । बेटा तुम दोनो भतीजे नही मेरे बेटे हो ।तुम पर मुझे विश्वास है मेरी माटी को गिध्द कौवे नही खा पायेगे ।
श्रीधर–दादा कैसी बात कर रहे हो ये तुम्हारे दोनो बेटे कब काम आयेगे ।
भीखनरायन–बेटा तुम लोगो का हक छिनने के लिये हमने सौतेले दमाद प्रभु और समधी दूधनाथ के बहकावे में आकर क्या क्या षणयन्त्र नही रचा । तुम्हारे बाप को मरवाने तक की योजना बनवा दिया और तुम लोग मुझे सिर पर बिठा रहे हो ।
श्रीधर–दादा दुश्मनी का जबाब दुश्मनी से देने से क्या मिलेगा ? नफरत ना हमें नफरत के बीज नही बोना है । हम तुम्हारी परवरिश निःस्वार्थ करना चाहते है । हमें तुम्हारी दौलत नही चाहिये हमे तो बस तुम्हारी जरूरत है। सेवा का अवसर देकर उपकार करो दादा । इतना सुनते ही भीखनरायन उठे और दोनो भतीजों को गले लगाकर रोने लगे ।
धूलीचन्द भीखनरायन से बोला क्यों रोते हो भईया श्रीधर और श्रीबाबू जैसे भतीजों के रहते तुम जैसे अंधे की लाठी भले ही तुम्हारे अपने कानूनी विश्वासपात्र रिश्तेदारो ने तोड़ दिये है । ये खून के रिश्तेदार जिनके साथ अन्याय किये हो । वही तुम्हें लाठी

का सहारा देगे । श्रीधर और श्रीबाबू एक स्वर में बोले हां दादा अब तो विश्वास करो ।

25–त्याग

मेरा शरीर जिम्मेदारियों को बोझ समझने लगा है। दर्द से झलनी हो रहे इस कमजोर तन के सहारे पारिवारिक जिम्मेदारियों की वैतरिणी कैसे पार कर सकूंगी । कोई दवा भी काट नही कर रही है । थककर गिर ना जाउूं डर लगने लगा है अभिनन्दन के पापा ।

सुशील– गीते तुम ना कभी हार मानी हो न मानोगी । मुझे विश्वास है । तुम कैसे गिर सकती हो तुम्हारे सहारे तो मैं चल रहा हूं । मानता हूं तुम दुखी हो । दर्द की दरिया में डूबकर भी संयुक्त परिवार को ताकत दे रही हो । गीता तुम्हारे त्याग का हमारा खानदान कर्जदार रहेगा । तुम जो कर रही हो वह किसी कठोर तपस्या से कम नही है ।

गीते–देखो ताड़ पर ना चढाओ गिर पडूगी ।

सुशील–सच्चाई है गीते ।

गीते–अभिनन्दन के पापा । तुम्हारे अलावा इस परिवार में मुझे कौन समझा है । मैं मौत के मुंह से निकली हूं तो तुम्हारी वजह से। डा.विनोद ने गलत आपरेशन कर मार ही डाला था ना । मेरे जीवित शरीर का चार–चार बार पोस्टमार्टम हो गया डा. विनोद की वजह से । फटे बोरे की तरह सिले इस शरीर के सहारे कैसे तपस्या पूरी होगी । हमारे बच्चे भी अभी छोटे है उपर से परिवार के दूसरे और उनके बच्चों की जिम्मेदारी । घर–परिवार के लोग बस लेना जानते है । तुम्हारी मजबूरी और हमारे दुख को कभी कोई नही समझा। सबको हमसे अपेक्षा बनी रहती है अपेक्षा पर पूरी तरह मजबूरी में खरा नही उतरने पर नाराजगी की बिजली गरजने लगती है । मै दिन पर दिन शरीर से अक्षम होती जा रही हूं । घुठने शरीर का बोझ उठाने में आना–कानी करने लगे है और आंख भी रोशनी समेटने लगी है । कैसे जीवन पार होगा ?

सुशील–साहस की ताकत तुम्हारे पास तो है । यही असली ताकत है । नारी कभी नही हारी है तुम कैसे हार मान सकती हो ? मुझे तो यकीन ही नही होता। नारी परिवार की आत्मा होती है एक नारी की हार में पूरे परिवार की हार है। गीते सही मायने में तुम हमारी तीनो शक्ति हो –धन की बल की और ज्ञान की भी ।कई जन्मो के पुण्य के प्रतिफल स्वरूप तुम हमें अर्धांगिनी के रूप में मिली हो ।

गीते–उल्टा कह रहे हो ।

सुशील–नही सच कह रहा हूं । दर्द में कराहते हुए भी परिवार के लिये इतना बड़ा त्याग कौन कर सकता है। जबकि मतलब के लिये लोग एक दूसरे का हक हड़पने में लगे है तुम अपने बच्चों के साथ निःस्वार्थ भाव से कुल का नाम उज्जवल कर रही हो । यह कर्म तुम्हें दैवीय प्रतिष्ठा प्रदान करता है पर लोग समझे तब ना । यहां तो हमारे बाप ही नही समझ रहे है तो परिवार के और सदस्यों की क्या बात करूं ?

गीते–ससुर जी तो सासू मां को नही समझे तो हमे कहां से समझेगे ? बेचारी सासूमां असमय साथ छोड गयी । थी तो निरक्षर पर पढे–लिखो को सबक सीखाती थी । दुखी नर को नारायण समझकर सेवा करती थी तंगी की हालत में भी । हमे तो चैन से नहाने खाने भर को तो है,हम क्यो पीछे रहे ?

सुशील–भूल गयी ना तू अपने दर्द को । चल पड़ी ना त्याग के रास्ते । तुम त्याग के रास्ते से दर्द के रोड़े को उखाड़ फेकोगी ।

गीते–तुम साथ हो तो कोई रोड़ा टिक भी कैसे सकता है ।

सुशील–गीते अपने त्याग का सेहरा मेरे माथे मत बांधो ।

गीते–तुम्हारे सिवाय हमारा क्या ? स्वार्थ परिवार मे दरार पैदा करता है । यह मै नही चाहती । जब तक आखों में ज्योति और घुठने में तन का बोझ उठाने की ताकत है परिवार के लिये जीउंगी ।

सुशील–गीते दर्द में झटपटाते हुए जीवन यापन करते हुए भी परिवार के लिये यही तुम्हारा त्याग मेरी असली सफलता है। सच नारी के इस भाव को देखकर कवि ने कहा है–जहां नारी की पूज्य वही भगवान विराजित है। सच गीते परिवार के लोग भले ना माने मैं तुम्हारे समर्पण भाव को नमन् करता हूं ।

गीते–नरक का भागीदार मत बनाओ ।

सुशील–कैसे ?

गीते–पति परमेश्वर भला ऐसी बात करेगे तो स्वर्ग का द्वार खुलेगा क्या ?

सुशील–गीते तुम जैसी गृहस्थ तपस्विनी के सामने भगवान तक को हाजिर होना पड़ा है,इतिहास गवाह है ।

गीते–अभिनन्दन के पापा तुम्हारे साथ की छांव में दर्द का एहसास कैसे हो सकता है ।

सुशील–इतना बड़ा मान ना दो मुझे । हर दुख–सुख में हम बराबर के भगीदार है । हां मुझे भी दर्द हुआ है जब अपने मुसीबत के दौर में आंखे तरेरे है । इस दर्द से कभी नही उबर पाउंगा । मैं शहर की गलियों में पागलों जैसा रोजगार की तलाश में भटक रहा था । तुम्हे मेरे बाप के कड़वे शब्द सुनने को मिल रहे थे । अरे तुम मेरी बेरोजगारी के लिये जिम्मेदार तो ना थी । सही मायने में मेरे बाप ही मेरी मुश्किलों

के कारण रहे ।कम उम्र में ब्याह नही करते तो परिवार का बोझ तो नही बढता ना । जब मै अपने पैर पर खड़ा हो जाता तो ब्याह करते तो । मुझे भी आसानी होती पर नही उन्हे तो अपनी नाक उची करनी थी । इस नाक की उचाई में भले ही बेटे का जीवन बर्बाद हो जाये परवाह नही ।

गीते–बाबूजी को कोसने से क्या फायदा । मां–बाप बच्चों के भले के लिये करते है । पुरानी सोच में बंधकर किया जाने वाला काम फायदेमंद नही साबित होता । इस बात पर मैं भी सहमत हूं ।

सुशील–बात सहमति असहमति की नही है । बात है समय के साथ चलने की । आज भी अपनी जिद पर अड़े रहते है । पिताजी की वजह से मां को कितनी मुश्किले झेलनी पड़ी । बेचारी असमय चल बसी । पितजी है कि नाक की सीध में चलने के अलावा और कुछ नही सीखे । नशा से तो ऐसा नाता है जैसे भूखे का रोटी से । रोटी की चिन्ता नही है । घर परिवार की चिन्ता नही है । वे अपनी जिद को पूरा करने के लिये हर नुस्खा अजमा लेते है ।

गीते–बाबूजी की अच्छाई को देखो । संयुक्त परिवार की विरासत को जिस तरह से बचाये रखा है । पूरे गांव में वैसा किसी ने नही किया है ।

सुशील–फायदा क्या हुआ ? हम भाई–बहनो हक उन लोगो पर कुर्बान हो गया जो लोग आज दुश्मन बन बैठे हैं।

गीते–सभी अपने नसीब का खाते है । मान भी ले तुम–भाई बहने का हक तुम्हारे चाचा–ताउ के बच्चों में बंट भी गया तो क्या हुआ अपने ही तो वे भी है । तुम्हारे पिताजी उनके भी तो अपने है । तुम को जो चाचा–ताउ चाची–ताई,नाना–नानी,मामा–मामी,फुआ–फूफा और कुटुम्ब संबधियो का जो प्यार मिला वह प्यार आज की पीढी को लिए रहा है । एकल परिवार में भले ही भर पेट रोटी मिले शान –शौख्त रहे पर संयुक्त परिवार वाला सुख कभी नही मिल सकता । मुझे खुशी है कि तुम भी संयुक्त परिवार की राह में मील का पत्थर साबित हो रहे हो । तुम्हारा त्याग व्यर्थ नही जायेगा । तुम्हारे त्याग को तुम्हारे भतीजे–भतीजियां समझेगे । मुझे तुम पर नाज है कि तुम अपने पिताजी की नशापान वाली बुराई का त्याग कर दिये हो पर एक अच्छाई को अपनाये हो । यह तुम्हारा बहुत बड़ा त्याग है लाख कष्ट उठाकर।

सुशील–अब कौन सा तीर चला रही हो भागवान ।बात तुम्हारे त्याग से शुरू हुई थी तुम श्रेय का सेहरा मेरे सिर बांध रही हो । परिवार तो गृहलक्ष्मियां अमरता प्रदान करती है ।

गीते –बात नही बना रही हूं सही कह रही हूं । संयुक्त परिवार को जीवित रखने के लिये तुम त्याग कर रहे।

सुशील–क्या तुम्हारे बिना सहयोग के कुछ सम्भव है । आज की दुल्हन आते अपना चूल्हा रोप लेती है । तुम बेटी दमाद वाली होकर भी सास–ससुर के कपड़े धो लेती हूं । देवर–देवरानी का भाई–बहन की तरह ध्यान रखती हो । भतीजे–भतीजियों को अपना बेटा–बेटी समझती हो ।क्या यह त्याग कम है संयुक्त परिवार को जीवित रखने के लिये ।

गीते–तुम्हारी तरह और भी लोग सोचने लगे तो संयुक्त परिवार कभी टूटे नही ।देखो न मंदी का दौर दुनिया को हिलाकर रख दिया । अपने देश पर कोई आंच नही आयी क्या नही ना। इसकी जड़ में संयुक्त परिवार का हाथ है जिसकी वजह से छोटी–छोटी बचत के महत्व को समझा गया।

सुशील–ठीक कह रही हो संयुक्त परिवार में दुख कम सुख अधिक है लेकिन आज के दौर में तो ग्रहण लगने लगा है । शहर की बात छोड़ों गांव में भी संयुकत परिवार बिखरने लगा है । ना जाने कौन सी ऐसी बयार चल पड़ी है कि बस खुद के परिवार को छोड़कर सारे बेगाने होते जा रहे है । यहां तक की मां बाप भी जबकि संयुक्त परिवार सुख का सागर है और दुख के लिये लुकमान ।

गीते–आज के लोग ज्यादा स्वार्थी हो गये है ।पहले अपना पेट भरने की ललक है,दूसरे भले ही भूख से मर जाये इसकी चिन्ता नही । मेरी मां ताउजी के तीनो बच्चों को हम चारो भाई बहनो की तरह ही पाला,जबकि हमारे पिताजी तो सरकारी मुलाजिम थे । मेरी मां के मन में कभी कोई विकार नही पनपा ना किसी प्रकार का भेद । ताई आराम की बंशी बजाती रहती थी । मेरे मां बाप के मरते ही सब कुछ बिखर गया । पुराने लोगों में परिवार को साथ लेकर चलने की कला आती थी । आज बस दिखावा है । अरे जरूरत पड़े तो खून भी पी ले ।देखो ताउजी के बेटे अपना कमा खा रहे है । बेचारे ताउ दो चूल्हों के बीच रोटी के लिये टुकुर–टुकुर ताकते रहते है।

सुशील–ये सब पाश्चात्य संस्कृति की नकल है । यही नकल हमारे देश की संस्कृति को वनवास दे रही है । हमारे देश के लोग अपनी विरास बचाने में गौरव नही महसूस कर रहे है पश्चिमी खान–पान रहन–सहन को स्टेटस सिम्बस से जोड़कर देख रहे है । जबकि अपने देश के लोग भी जानते है पश्चिमी सभ्यता में माम–डैड,ब्रदर–सिस्टर और आंटी–अंकल के अलावा कोई रिश्ता नही होता । हमारे यहां मां–बाप,भाई–बहन,फुआ–फूफा,चाचा–चाची,दादा–दादी मौसा–मौसी,मामा–मामी और बहुत सारे पवित्र रिश्ते है पर ये रिश्ते नही पश्चिमी रिश्ते मा–डैड ज्यादा अच्छे और आधुनिक लगने लगे है ।

गीते–ठीक कह रहे ऐसी सोच अपनी संस्कृति सभ्यता और मानवतावादी परम्परा के साथ न्याय कहां कर सकती है ।

सुशील–पश्चिमी संस्कृति की नकल महामारी है ।
गीते–इस महामारी से बचने के लिये नई पौध को संयुक्त परिवार की विशेषतओं से परिचय करना होगा । उन्हे दादा–दादी,नाना–नानी के सानिध्य में दीक्षित करना होगा तभी देश की आन संयुक्त परिवार बच सकती है ।
सुशील–सभी तो शहर की तरफ भाग रहे है ।
गीते–परदेस तो लोग पहले भी जाते थे । बात ये नही है बात ये है कि आज की जरूरत के अनुसार स्कूल कालेज गांव स्तर पर होगे तो नौकरीपेशा मां –बाप बच्चों को दादा–दादी,नाना–नानी की देखरेख में पढा लिखा तो सकते है ।दुर्भाग्यबस आज के इस युग में भी गांव की पहुंच से बहुत दूर सुविधाये है । बच्चों के भविष्य की चिन्ता में मां–बाप शहर की ओर भाग रहे है और संयुक्त परिवार टूट रहा है । ऐसा नही कि इसे बचाया नही जा सकता है बचाया जा सकता है ।
सुशील–वो कैसे ?
गीते– तनिक अपनी जरूरतों को समिति करना होगा । सगे–सम्बन्धियों के बारे में सोचना होगा,अपनी जन्मभूमि के प्रति कर्तव्य के बारे में सोचना होगा । यही पाठ अपने बच्चों को अपने स्तर पर पढाना होगा और यह सब बिना त्याग के नही हो सकता । अरे हम भी तो आज के जमाने के लोग है ना । संयुक्त परिवार को सींच रहे है कि नही । साल भर में दो बार गांव जाते है । पूरे कुटुम्ब की फिक्र करते है । अपनी कमाई से जो हो सकता है सभी के लिये साबुन तेल से लेकर कपड़ा लता तक करते हो । समय–समय पर मनिआर्डर भी करते हो क्योकि गांव में जो लोग है उनसे गहरा नाता है ।
सुशील–बात तो सही है पर सभी परदेसी ऐसा सोचे तब ना । देखने में तो यहां तक आ रहा है कि शहर की हवा लगते ही गांव की जमीन जायदाद बेचकर शहर बस जा रहे है । जबकि शहर में पड़ोसी भी नही पहचानता । मरने पर किराये के लोग ढूढे जाते है । कंधा देने वाला कोई नही मिलता । दुख तकलीफ मे कौन किसको पूछता है । गांव में तो दुख–तकलीफ में तो लोग टूट पड़ते है । अपनापन सिर चढकर बोलता । यह संयुक्त परिवार की देन है । अभी भी संयुक्त परिवार का असर देश की धड़कन में बसा है । जरूरत है थोड़ा से स्वहितों में कटौती कर परिवारजनों पर न्यौछावर करने की।
गीते–जैसा मेरे मां–बाप और सास–ससुर ने त्याग किया । काश ऐसा सभी करने लगे तो मरणासन्न अवस्था में पड़ी संयुक्त परिवार की परम्परा को संजीवनी मिल जाती । मैं तकलीफ उठाकर भी संयुक्त परिवार को सीचती रहूंगी भले ही परिवारजनों ने मेरे साथ बदसलूकी किया हो । मै सारी गलतियों को भुलाकर अच्छाईयों को याद रखूंगी क्योंकि संयुक्त परिवार में मान है सम्मान है,सुदृढ पहचान

है, कई जोड़ी लाठियों की ताकत, पारिवारिक सुख–सृवृध्दि का आनन्द , आत्मिक सकून भी तो है संयुक्त परिवार में।हम इसे टूटने नही देगे । हमारे देश,स्वस्थ पारिवारिक रिश्तों की आन मान पहचान है संयुक्त परिवार अभिनन्दन के पापा ।

सुशील–त्याग से ही संयुक्त परिवार का हमारा सपना संवर सकता है । हम तुम्हारे साथ है गीते ।

समाप्त